

॥ श्री ॥

॥ रत्नसार ॥



जिमको

रत्नरामनियासी

श्रावक ताराचदजी निहालचद ने

यथा मतिशोधन करके तत्वाभिलाषी जैन
भाइयों के हितार्थ प्रकाशित किया



रत्नराम :

पॉडे अम्बालालजी रामप्रताप खर्रा के

स्वीय 'डायमड ज्युविली' छापाखाना में

मुद्रित हुआ

स० १८९९ सप० १९५६

॥ धो ॥

॥ रत्नसार ॥



जिसको

रत्नसामनिवासी

श्रावक ताराचदजी, निहालचद ने

यथा मतिशोधन करके तत्वाभिलाषी जैन

भाइयों के हितार्थ प्रकाशित किया



रत्नसाम :

पॉडे अम्बालालजी रामप्रताप खर्रा के

स्वर्गीय 'डायमड ज्युविली' छापाखाना में

मुद्रित हुआ

सन् १८९९ सवर् १९५६

प्रस्तावना.

— ०१० —

यह रत्नसार नाम का अपूर्व ग्रन्थ अनेक जैन शास्त्रों के गृढार्य को निरूपण करनेवाले धारजे लायक ३०४ प्रश्नों का परमोत्तम संग्रह है इस ग्रन्थ को देख कर बहुतसे जैनी भाइयों की इस पर विशेष रुचि हुई और हस्त लिखित प्रति सब को मिल नहीं सकी इसलिये इस ग्रन्थ को छपाकर प्रसिद्ध किया

यह ग्रन्थ किस आचार्य ने बनाया है सो मालूम नहीं होता परन्तु प्रश्नों के आशय और रचना पर से प्रगट होता है कि किसी द्रव्यानुयोग में परिपूर्ण, बुद्धिमान, विचक्षण आचार्य ने भेदाभेद करके वस्तु का निर्णय भली भाँति किया है

जिस प्रति पर से यह ग्रन्थ छापा गया है वह हम को अशुद्ध प्राप्त हुई कि जिस में प्रश्नों का नंबर एक चराबर नहीं (जो पीछे से सुधार दिया गया) और हमने दूसरी प्रति की बहुत सी तलाश भी की परन्तु

हम को मिल नहीं सकी तब श्रद्धालु जैनी भाई का आग्रह देख कर हम ने उसी प्रति पर से पुस्तक छपाना आरम्भ कर दिया और दूसरी प्रति मिलने का उद्योग करते रहे पीछे से श्रीमद् विजय राजेंद्र सूरी श्वर मुनिराज ने कृपा करके शिवगज के भंडार से प्रति भिजवा कर परम उपकार किया दूसरी प्रति मिलने पर शुद्धाशुद्ध देखने में बहुत कुछ सहायता मिली तथापि दोनों प्रति न्यूनाधिक अशुद्ध होने से भले प्रकार सशोबन नहीं हो सका अनेक स्थलों पर तो हस्तलिखित पाठ ज्यों का त्यों रखना पडा, कारण कि हमारे समझ में बराबर आया नहीं तो ग्रथकार के अभिप्राय से विरुद्ध न छपजाने का ध्यान रखना पडा।

आशा है कि श्रद्धालु जैनी भाई इस ग्रन्थ का आश्रय देकर परम लाभ उठावेंगे और हमारा उत्साह बढ़ावेंगे जिस से हम अपूर्ण २ ग्रन्थ प्रकाश करके उन को भेट करने में समर्थ होंगे

लि० निहालचन्दा

विषयानुक्रमणिका.



पक्ष.	विषय.	पृष्ठ
	। श्रीवीतरागनी वाणीनी महिमा	१
	। केतला बोल साभल्या विना शास्त्र ना भेद न जाणे ?	२
	। बावीस योगवाई पुण्य विना न.पामिये	"
	। केहवा पुरुष नो सग कीजे तो धर्म पामे ?	"
	। केहवा पुरुष नो सग न-कीजे ?	३
१	जीव धर्म किम् पामे ?	"
२	अभ्यास चार प्रकार ना	"
	। जीव नै-पाप, पुण्य, अथिरता श्या थी उपजे ?	"
३	धर्म, पुण्य, पाप कर्म स्या थी उपजे ?	४
	। जैन धर्म क्यारे प्रवर्त्ते ?	५
४	देशाना केवी रीत नी होवी जोइये ?	"

(२) ॥ विषयानुक्रमाणिका ॥

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
५	पुण्य क्रिया अत्यादरं सेववा विषे	६
६	हेय, ज्ञेय, उपादेय शब्द नो भावार्थ	”
७	द्रव्य काउसग, भाव काउसग ना भेद	”
८	। शुभ क्रिया थी निर्जेरा अने शुभ क्रिया थी बध केहवी रीते नीपजे ?	७
९	जीव नें खेद ऊपन्यो किम टलै ?	७
१०	धर्म कथाना आक्षेपणी, विक्षेपणी इत्यादि ४ प्रकार	८
१०	भाव नव निधान ते श्यु?	,
११	पाच इद्री ना विकार मिटे किहा गुण निर्मल ता थाय ?	९
१२	च्यार प्रकार ना मिथ्यात्व नो स्वरूप	”
१३	सत्ता ते ४ प्रकार नी	१०
१४	च्यार प्रकार ना अनर्थ दड	,
१५	आठ प्रकार ना वचन परिसह	”
१६	सिफई बुझई इत्यादि नो स्वरूप	१२

प्रश्न.	विषय	पृष्ठ
१७	धर्म ना च्यार प्रकार.	१३
१८	कर्म तीन प्रकार ना छै	१४
१९-२०	नव पदार्थ ना भावार्थ.	"
२१	उदय वधनो स्वरूप	१६
२२	बोध समाधि नो लक्षण	१७
२३	सवेग वैराग्य नुं लक्षण	"
२४	दान, शील, तप, भाव, श्या वडे होय ?	१८
२५	ध्यान प्रतिबधकनो स्वरूप	"
२६	तिर्यग परिचय ऊर्द्ध परिचय नो अर्थ	१९
२७	धर्म केतली प्रकार नो?	२०
२८	च्यार प्रकार नो मुनि नें सयम	"
२९	उरपरि, भुजपरि सर्पनी जाति शरीर आयु नो प्रमाण	२१
३०	च्यार प्रकार नो मरण	२२
३१	जीव ना जे द्रव्य, गुण, पर्याय छै तेहना घातक कुण छै ?	"

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
३२	जीव द्रव्य भाव निर्जरा श्याथी करै ?	२१
३३	इच्छा मूर्च्छा इ जीव श्यु पुष्ट करै ?	२१
३४	गुण पर्याय ना घातक कोण छे ?	२३
३५	शरीर परिणाम तथा श्रद्धान नी गति	२३
३६	द्रव्य, गुण, पर्याय श्याथी समरै ?	२४
३७	जीव ना द्रव्य, गुण, पर्याय समरै ते किम् ?	२४
३८	जन्म, जरा, मरण नु दु ख किम टलै ?	२५
३९	योगै बाधे छै कर्म, तथा सत्ताये पिण कर्म छै ते शी रीते छूटे ?	२५
४०	मिथ्यात्व अवृत्ति ना बाध्या जे कर्म ते किम मिटै ?	२६
४१	निश्चय व्यवहार नय श्यो गुण करै ?	२६
४२	निश्चय व्यवहार सम्यक शी रीते छै ?	२६
४३	नव तत्व, पट द्रव्य तथा देव, गुरु, धर्म नी शक्ति श्रद्धान	२६
४४	धर्म, कर्म, पुण्य, पाप श्याथी होय ?	२६

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
४५	धर्म, कर्म, भर्म सेषे ?	३०
४६	पुण्य धर्म एक छै किंवा जुदा छै ?	३१
४७	हिवै धर्म कर्म उपजतो छद्मस्तः किम् जाणै ?	३१
४८	स्वाभाविक त्रण गुण(ज्ञान, दर्शन, चरित्र) नो लक्षण	३२
४९	धर्म सांभलवो जाणवो. धारवो ते केवी रीते?	३२
५०	जीव नी चेतना वे प्रकार नी छै.	३३
५१	त्रिकाल भाव कर्म निवारवानु कारण.	३३
५२	व्यवहार ना ४भेद नी विगत	३४
५३	तीन प्रकारना कर्म नी विगत.	३५
५४	दया ना चार भेद-	३५
५५	मोक्ष ना त्रण भेद-	३५
५६	चेतना केवी छै ?	३५
५७	भवाभिनदी, पुद्गलानदी, आत्मानदी जीव ना लक्षण	३६

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
५८	सुगति कुगति नो स्वरूप	”
५९	रोगाक्रान्त नु लक्षण	३७
६०	बल वीर्य नो अर्थ	”
६१	सम्यक्ती थी पडे त्यारे केटली स्थिति बधै ?	३८
६२	पुद्गल ते कर्म छै अने जीव ते पिण कर्म छै ते शी रीते ?	”
६३	नव तत्व छै ते च्यार प्रकारै छै एक नव तत्व नी गाथा ते च्यार प्रकारै छै	३६
६४	हिवै कर्त्तापणै कर्म अने क्रिया तिहां ताई बध	४०
।	जैन दर्शन केवी रीते छै ?	४१
६५	द्रव्य सवर भाव सवर नो स्वरूप	”
६६	दर्शन ते थी जे देखवो ते शी रीते छै ?	४२
६७	निर्जरा नु स्वरूप	४३
६८	जीव नु स्यादवाद मार्गे द्रव्य, गुण, पर्याय थापवु	४४

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
६९	द्रव्य शक्ति गुण शक्ति किहा छै ?	॥
७०	जीव नें उपयोग केतला छै ?	४५
७१	शुद्धोपयोग ते सम्यक्ती नें होइ, मिथ्यात्वी नें शुभ क्रिया होइ पण शुभ उपयोग न होइ	॥
७२	बीजी रीते सम्यक् दर्शन नो अर्थ	४६
७३	त्रीजी रीते सम्यक् दर्शन नो अर्थ	४७
७४	सम्यक् दर्शन नो चौथो भेद स्वरूप	
"	प्रत्यक्ष	४८
७५	जोग ३ ते साधुनै छै, रत्नत्रय रूपै प्रणामै छै ते किम् ?	४९
।	ए रत्न त्रय धर्म थी जन्म, जरा, मरण ना भय टलै छै ते किम् ?	५०
७६	प्रमाण ४ ते जीव नें किम् भोग पडै ?	॥
७७	तीन कर्म—द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म नो स्वरूप	५१
७८	दर्शन, ज्ञान, चारित्र वीर्य गुण ते कुण	५२

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
	हेतु पमाडे ?	५२
७९	हिंसा ना केतला भेद छै ?	५३
८०	शास्त्रमध्ये ३ योग नो स्वरूप. ?	५५
८१	द्रव्य, गुण, पर्याय किवारे विगडै ।	"
८२	मति श्रुत ज्ञानी तथा अज्ञानी जिन वाणी ; साभले ते शी रीते प्रणमै ?	५६
८३	जीव कर्म सु किम् मिल्यो छै ?	"
८४	पाच इन्द्रियनी सोल सज्ञा	५७
८५	सोले सज्ञा जीव केहनें होइ ?	"
८६	धर्म कर्म किम् होइ ?	५८
८७	श्रीजिनना ४ निचेपा, तेहनो स्थानक शरीर माहि किहां छै ?	"
८८	पाचेंद्री शोणेभरी छै ?	५९
८९	च्यार सज्ञा नो परमार्थ कहै छै । च्यार सज्ञा बीजी प्रकारे	" ६०
९०	सिद्ध ना जीव नै अनन्ता गुण छै ते सम	

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
	सम रूपै छै कि विषम रूपै ?	६२
९१	सिद्ध नै जीव कहिये ते कुण हेतु ?	”
९२	आठ कर्म मध्ये लेश्या किहा कर्म मध्ये छै ?	६३
९३	वीस विहरमान जिन तथा जघन्य काले केतला तीर्थकर होइ ?	६३
९४	चक्रवर्त्ति नै १४ रत्न किहा उपजे ?	६७
९५	नव निधान किहा प्रगटै ?	”
९६	प्रभु जिहा पारणो करै तिहा केतली वृष्टि होइ ?	६९
९७	चउद विद्या ना नाम	”
९८	पच प्रस्थाने आत्मा ते पंचप्रस्थान किहा ?	”
९९	त्रीजु गुण स्थान चढता पडता किम् आवै ?	७०
१००	समोहिया असमोहिया मरण तेहनो	

(१०) ॥ विषयानुक्रमणिका ॥

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
	अर्थ	७१
१०१	जीव नें उपयोग गुण ते सम्यक्त, अने ठरण गुण ते चरित्र ते आचरवा नें कुण बलवत्तर छै ?	”
१०२	तीन प्रकार ना कर्म ते किम् छै ?	७२
१०३	एक पद ना श्लोक नी सख्यां केतली ?	”
१०४	१४ पूर्व ना जेतला पद छै ते जुदार लिखिये छै	”
१०५	बीजा गुण स्थानै (सास्त्रादन) जिन नाम कर्म सत्ताइ किम् न होय ?	७४
१०६	चयोपशम समकित नु लक्षण	७५
१०७	मोहनी ना लक्षण	७८
१०८	सापेक्ष निरपेक्ष नो अर्थ	७६
१०९	सम्यक् दृष्टी शब्द नो अर्थ	० ”
११०	जिनना ४ निक्षेपा तेहनी द्रव्य भाग थी कति शी रीते करवी ?	८०

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
१११	जीव नें देवु अने दरिद्रपणो किम् दलै ?	८१
११२	छ. प्रकारे आत्मा घणा कर्म बाधै	८२
११३	सम्यक दृष्टी एहवो जे शब्द तेह नो श्यो अर्थ ?	८३
११४	गुण ग्राही, गुणगत्रेपि ते श्यु ?	८३
११५	साताइ सुख, असाताइ दुःख माहि निमित्त उपादान कुण छै ?	८४
११६	साता असाता आत्माश्रित छै, सुख दुःख ते पुद्गलाश्रित छै, तथा वेदना २ बेप्रकार नी छे	८५
११७	जिनवचन स्यादवाद रूपै छै ते ४ प्रकारे छे	८५
११८	वे परिसह शीत छे ते किहा ?	८५
११९	बन्ध १ सत्ता २ उदय ३ अने उदीरणा ४ ए च्यार मध्ये आत्माश्रित अने पुद्गलाश्रित केतला होय ?	८६
१२०	आठ वर्गणा ना पुद्गल मध्ये थोडा घणा	

(१२) ॥ विषयानुक्रमणिका ॥

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
	किहा ?	”
१२१	बावीस २२ परिसह ते किहा	८७
१२२	उपसर्ग परिसह नो अर्थ	”
१२३	प्रमाण ४ आत्मा थी वीर किम् मानिये ?	८८
१२४	कर्म वर्गणा जीव लीए छे ते थोडी घणी कोने आपै छै ?	८९
१२५	विग्रह गति केतला समय नी ?	”
१२६	अभिसधि अनभिसधि बे शब्द नो अर्थ	९०
१२७	सम्यक् दृष्टी देशपिरती ने गृहस्थ वास छता छठु गुण स्थान आवै	”
१२८	सम्यक्त मोहनी ना उदय किहा थकी होय ?	९१
१२९	समाकित मोहनी प्रकृति कोने कहिये ?	९२
१३०	उत्सर्ग अपवाद बे मार्ग कहिये छै तेह ना श्यो अर्थ ?	”

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
१३१	जे दीवा प्रमुख ना प्रकाश पडै छै ते दीवा मध्ये अग्नि ना जीव छै तेहना पर्याय तरयोत रूप ते पुद्गल ना पर्याय	९४
१३२	चउद गुण वक्ताना अने १४ गुण श्रोता ना छै तेना नाम	९५
	। श्रोता ना १४ बोल	९५
	। हिवै पुराण ना नाम	९६
१३३	पुद्गल परमाणु मा वर्ण, गघ, रस, फरस गुण छै ते मा शब्द गुण किहा थी श्राव्यो ?	९७
१३४	परभव नु आयु किम् बंधै ?	९७
१३५	पट् द्रव्य नु स्वरूप	९८
१३५	पट् द्रव्य ना गुण पर्याय किम् जाणिये	१०१
	। जीव द्रव्य ना भेद.	१०१
	। जीव ना गुण ते श्यु ?	१०२
	। जीव ना पर्याय किम् ?	१०२

(१४) ॥ त्रिपयानुक्रमाणिका ॥

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
	। अशुद्ध व्यजन पर्याय ते श्यु ?	”
	। जीव ना अर्थ पर्याय	”
	। पुद्गल द्रव्य ना भेद	१०३
	। पुद्गल द्रव्य ना गुण भेद	”
	। पुद्गल पर्याय कि ?	१०४
	। पुद्गल ना अर्थपर्याय ना वे भेद	”
	। धर्म द्रव्य किं ?	१०५
	। अर्थम द्रव्य कि ?	”
	। काल द्रव्य किं ?	१०६
	। आकाश द्रव्य किं ?	”
१३७	परिणामी कोण द्रव्य ?	१०७
१३८	कारण द्रव्य जीव, कौण द्रव्य अजीव	”
१३९	कौण द्रव्य मूर्तिक, कौण द्रव्य अमूर्तिक	१०८
१४०	कौण द्रव्य सप्रदेशी, कौण द्रव्य अप्रदेशी ?	”

श्र	विषय	पृष्ठ
१४१	कौण द्रव्य एक, कौण द्रव्य अनेक ?	”
१४२	कौण द्रव्य क्षेत्री, कौण द्रव्य अक्षेत्री ?	”
१४३	कौण द्रव्य क्रियावन्त, कौण द्रव्य अक्रियावन्त ?	”
१४४	कौण द्रव्य नित्य कोण द्रव्य अनित्य ?	१०८
१४५	कौण द्रव्य कारण, कौण द्रव्य अकारण ?	१०९
१४६	कौण द्रव्य कर्त्ता, कौण द्रव्य अकर्त्ता ?	”
१४७	कौण द्रव्य सर्वगद, कौण द्रव्य असर्वगद ?	”
१४८	द्रव्य नु स्वधर्मी पर्णो	”
१४९	वेदनी निर्जरा नी चोभगी	११०
१५०	मिथ्यात्व नी चोभगी	”
१५१	सीह पणे लेइ ने सीह पणे पालै तेहनी चोभगी	”
१५२	अनुयोग ना ४ नाम	१११
१५३	पट दुर्लभ बोधि स्थानानि	”

(१४) ॥ विषयानुक्रमिका ॥

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
	। अशुद्ध व्यजन पर्याय ते श्यु ?	”
	। जीव ना अर्थ पर्याय	”
	। पुद्गल द्रव्य ना भेद	१०३
	। पुद्गल द्रव्य ना गुण भेद	”
	। पुद्गल पर्याय किं ?	१०४
	। पुद्गल ना अर्थपर्याय ना वे भेद	”
	। धर्म द्रव्य किं ?	१०५
	। अर्थम द्रव्य कि ?	”
	। काल द्रव्य किं ?	१०६
	। आकाश द्रव्य किं ?	”
१३७	परिणामी कोण द्रव्य ?	१०७
१३८	कोण द्रव्य जीव, कोण द्रव्य अजीव	”
१३९	कोण द्रव्य मूर्तिक, कोण द्रव्य अमूर्तिक	”
१४०	कोण द्रव्य सप्रदेशी, कोण द्रव्य	”

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
१४१	कौण द्रव्य एक, कौण द्रव्य अनेक ?	”
१४२	कौण द्रव्य चेत्री, कौण द्रव्य अचेत्री ?	”
१४३	कौण द्रव्य क्रियावन्त, कौण द्रव्य अक्रियावन्त ?	”
१४४	कौण द्रव्य नित्य, कौण द्रव्य अनित्य ?	१०८
१४५	कौण द्रव्य कारण, कौण द्रव्य अकारण ?	१०९
१४६	कौण द्रव्य कर्त्ता, कौण द्रव्य अकर्त्ता ?	”
१४७	कौण द्रव्य सर्वगद, कौण द्रव्य असर्वगद ?	”
१४८	द्रव्य नु स्वधर्मी पर्णो	”
१४९	वेदनी निर्जरा नी चोभगी	११०
१५०	मिथ्यात्व नी चोभगी	”
१५१	सींह पणे लेइ ने सींह पणे पालै तेहनी चोभगी	”
१५२	अनुयोग ना ४ नाम	१११
१५३	पट दुर्लभ बोधि स्थानानि	

(१६) ॥ विषयानुक्रमणिका ॥

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
१५४	आठ आत्मा नो स्वरूप	११२
१५५	त्रस जीवा अष्ट विधा	११३
१५६	जीव केतला प्रकारै प्रणमे ? । अतर्मुहूर्त्त नो प्रमाण	११४
१५७	जाति समरण ना केतला भव देखै ?	११५
१५८	धर्म पुण्य नो भेद । पाच पटीक शाला ना नाम	११६
१५९	आत्मा नी किंचित् आत्मता । धर्मास्ति काय ना गुण । अधर्मास्ति काय ना गुण । आकास्ति काय ना गुण । पुद्गलास्ति काय ना गुण । पर्यायास्तिक ना भेद छ । समकित ना पर्याय । ज्ञान पर्याय । चरण पर्याय	११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२

प्रश्न.	विषय	पृष्ठ
।	समकित नी दश रुचि	१२१
।	समाकितना पाच भूषण	१२२
१६०	त्रण आत्मानो स्वरूप	”
१६१	सद्दहणा, फरसणा, परूपणा कोर्ने होइ ?	१२५
१६२	प्रभुनो. दानाधिकार	१२६
१६३	साधु सिज्झाय करै ते किहा कर्म खपावै ?	१२८
१६४	आश्रवा ते परिश्रवा	१२९
१६५	बादर अपकाय किहा सुधी होइ ?	१३०
१६६	सातमी छठी नरकै कुभी मां उपजवु नथी तिहां आलिया छै	”
१६७	साधु ना १४ उपगरण ते किहा ?	”
१६८	युगप्रधान आचार्य जिहा विचरै तेहना लक्षण	१३१
१६९	च्यार प्रकारनी भावना	१३२
१७०	चोवीस जिन ना मातापिता नी गति	१३३
१७१	जिनवाणी सांभलता च्यार घातिया कर्म	

(१६) ॥ विषयानुक्रमणिका ॥

मश	विषय	पृष्ठ
१५४	आठ आत्मा नो स्वरूप	११२
१५५	त्रस जीवा अष्ट विधा	११३
१५६	जीव केतला प्रकारै प्रणमे ?	"
	। अतर्मुहूर्त्त नो प्रमाण	११४
१५७	जाति समरण ना केतला भव देखै ?	"
१५८	धर्म पुण्य नो भेद	११५
	। पाच पटीक शाला ना नाम	११६
१५९	आत्मा नी किंचित् आत्मता	११७
	। धर्मास्ति काय ना गुण	११६
	। अधर्मास्ति काय ना गुण	"
	। आकास्ति काय ना गुण	१२०
	। पुद्गलास्ति काय ना गुण	"
	। पर्यायास्तिक ना भेद छ	"
	। समकित ना पर्याय	१२१
	। ज्ञान पर्याय	"
	। चरण पर्याय	"

पं.सं.	विषय	पृष्ठ
१८४	अध्यात्मसार ग्रंथे तीन प्रकारना जीव कह्या छै	१४१
१८५	तीन प्रकार नो वैराग्य	”
१८६	संसारी प्राणी केतली प्रकार ना ?	१४२
१८७	संसारी जीव नें आठ दृष्टी कही तेह ना नाम.	”
१८८	सर्व वस्तु पदार्थ मात्र माहि च्यार कारण छै ते किहा ?	१४३
१८९	समवाय असमवाय श्रीर निमित्त कारण	१४४
१९०	सर्व वस्तु द्रव्यार्थ पर्यायार्थ ए वे नय लीघे छै ते मांहि थी मात नय ते किहा ?	”
१९१	कषाय उपने पूर्ण कोडनो पाल्यो चारित्र क्षय करै ते ऊपर गाथा	”
१९२	आधिल शब्द नो अर्थ	१४५
१९३	नियोग्य क्रमां तेहने वृत्त उदय न आवै ते	”
१९४	सामायक ४ प्रकार ना	१४६

(१८) ॥ विषयानुक्रमिका ॥

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
	ना अशे क्षयोपशम धर्म पामै छै ते किम् ?	१३३
१७२	जिन वाणी ध्यान मांहि आवै ते किम् ?	॥
१७३	ध्यार प्रकार नी बुद्धि ना नाम तथा तेहना शब्दार्थ	१३४
१७४	जाती समरण तथा विभग ज्ञान केह ना भेद छै ?	१३५
१७५	चन्द्रमा नी चाल केहवी ?	
१७६	मिथ्यात्व अविरत हेतु	
१७७	तीन प्रकारे कर्म नी वक्तव्यता	१३
१७८	जीव नें मार्गप्राप्त क्यारे कहिये ?	
१७९	साधु नें जे त्रण्य जोग छै ते त्रण्य रत्न त्रय गुणे प्रणम्या छै ते किम् ?	१३
१८०	ससार माहे जीव केतली प्रकारना छै ?	१३
१८१	भव्य जीव नु लक्षण	
१८२	अभव्य जीव नु लक्षण	१४
१८३	धीजो भव्याभव्य जीव किहो ?	

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
	भोगवै?	१५१
२०३	भव्य अभव्य जीवनी मूल भूमिका कहवी ?	”
२०४	मनोयोग तथा वचनयोग नो काल	”
२०५	पटुगुणी हानि वृद्धि द्रव्य नें छै तेहनो स्वरूप	”
२०६	स्थितिबंध अने रसबध तथा प्रदेश बध अने प्रकृतिबध किवारे होय ?	१५२
२०७	केवली भगवत जे साता वेदनी योग प्रत्यइ बाधै छै ते किम् ?	”
२०७	अनतानुबधीया राग द्वेष तथा मिथ्यात्व मोह नो क्षय तथा क्षयोपशम कया गुण स्थानै थाय ?	१५३
२०८	अवगुण उदै माहि थी तथा सत्ता माहि थी जाइ ते किहा गुणै खार, बैर नें जहर जाय ?	”

(२०) ॥ विषयानुक्रमणिका ॥

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
१९५	ज्ञान क्रियाभ्या मोक्ष तत् कथ ?	१४६
१९६	क्रिया वे प्रकारनी.	१४७
१९७	नव अनता कक्षा तेहना नाम स्वामी । इत्यादि	"
१९८	सिद्धान्त आगम माहि प्रथम क्षयोपशम सम्यक्त पामै, उपशम नो तन्त नहीं ते बताव्यो छै	१४९
१९९	पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु वनस्पति, प्रत्येक एतले स्थानके एकेकी पर्यासा निश्चार्थे असख्याता अपर्यासा होइ	"
२००	व्यग्रहार राशियो जीव फरी सूक्ष्म निगोद माहे जाइ तो उत्कृष्टो केतला काल सुधी रहै ?	१५०
२०१	दर्शन नी क्षपक श्रेणी तथा चरित्र नी क्षपक श्रेणी क्या थी माडै ?	१५१
२०२	कर्म नो बध जघन्य उत्कृष्ट स्थिति केतली	

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
	होइ	१५६
२२०	शब्दादि इन्द्री नो विषय	१६०
२२१	पंचेद्री ना द्रव्य भाव रूपै कहिये छै	१६१
२२२	भार्वेद्री द्रव्येद्री नो लक्षण	”
२२३	सिद्ध थया नो विचार.	१६२
२२४	आत्मागुल १ उछेदागुल २ प्रमाणागुल नो मान	”
२२५	मति ज्ञान ना भेद ।	१६३
२२६	योतिषी देवता माहि कयो जीव आवी ने न उपजै ?	१६४
२२७	पाच लब्धि नो भावार्थ	१६५
२२८	उद्धार पाल्योपम, अद्वापल्योपम अने क्षेत्र पल्योपम एनीन नो स्वरूप	१६६
२२९	आत्म सम वस्तान उपयोग रूप ध्यान कहिये ते केहवी परम्पराइ होइ ?	१६७

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
२०९	देवता प्रभुनें भाव मडल किम् करे छै ?	१५४
२१०	आणद श्रावक नें पाच सै हल्ला भूमि मोकली हती तेहनो मान लिखिये छै	१५५
२११	कर्म चतुर्यक तप नी विधि	१५५
२१२	धर्म चक्रवाल तप नी विधि	१५६
२१३	शान्तिनाथ चरित्राधिकारे तीर्थकर नी मात १४ सुप्र मुख माहि पिसता देखै	१५६
२१४	श्रावकनें प्रथम सामायक पश्चात् इर्यापथी दिग्वृत होय पण साधु नें नहीं	१५६
२१५	उद्वेगता १ अथिरता २ असाता ३ आकु- लता ४ च्यार प्रकार नो दु ख किहा कर्म थी ऊपजै ?	१५७
२१६	दातार दान आपै तेहना च्यार भेद	१५७
२१७	छ कायना नाम गोत्र जाणवा रूप	१५९
२१८	दस प्रकारे सत्य कहु तेहनी गाथा	१५९
२१९	पचेंद्री ना २५२ भेदे जीवनें कर्म बघ	

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
२३९	प्रस्ताविक गाथा	१७९
२४०	केतलाने दीक्षा देवी न कल्पै ?	”
२४१	अठार भाव दिशा तथा अठार द्रव्य दिशा ना स्वरूप.	१८०
२४२	गुलीए रग्या बख ना ससर्ग श्री घणा त्रस जीव उपजै	१८१
२४३	लब्धि पर्याप्ता तथा करण पर्याप्तानो स्वरूप	”
२४४	पर्याप्ति ना नाम	१८२
२४५	सम्यग्दृष्टी ना स्वरूप नी त्रण गाथा	१८३
२४६	छद्मस्थ नो अर्थ.	”
२४७	मुनिने छठा गुण ठाणाथी सातमाने पहले समये केतली विसुवता होइ ?	१८४
२४८	आहारक आहारक मिश्र जीव किम करै?	”
२४९	सिद्धने अकुममाण गति कही ते किम् होय ?	१८५

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
२३०	आत्म भावना नी गाथा	१६८
२३१	उत्सर्ग अपवाद मार्ग वर्त्तता मुनि नें आत्मार्थी कहिये	१६९
२३२	पाच निधर्मा कह्या ते धर्म न पामै	१७
२३३	समुच्छिन्न मनुष्य मरी केतले दडके जाइ ?	१७
२३४	देवता नारकी ना जीव केटलो काल रया परभव नो आयु बाधै ?	१७०
२३५	आकुटे, प्रमादे, दर्पे, कर्षे कर्म बधाइ तेहनो शब्दार्थ	१७
२३६	पाच क्रिया माहि जीव अल्पा बहुत्व किम होय ?	१७१
२३७	लेश्या नो देवता आसरी अल्पा बहुत्व कहै छै	१७
२३८	सोपक्रमी आउखावालो जीव आयु पूरो भोगवी मृत्यु पाम्यो तेह नें अकार्ले चव- जीविया ओ विवरोविया थयो ते किम् ?	१७२

प्रश्न	वियष	पृष्ठ
२५८	ज्ञानावर्णादिक कर्म नो बन्ध, उदय, उदीरणा, सत्ता केतला गुण ठाणा ताइ होय ?	१९०
२५९		
२६०		
२६१		
२६२	अचित् महा स्कध जे पुद्गल नो चीदे राज लोक प्रमाण पूरे तेह नो स्वरूप	१९३
२६३	केवली पण केवल समुदघात करै तिवारे जे आठ रुचक प्रदेश छै ते किहा ताई पूरे ?	१९४
२६४	निगोद नो विचार	”
२६५	निगोद ना जीव नो भवाधिकार	१९५
२६६		
२६७	सिद्धशिला नो आकार	२०१
२६८	अष्ट महा सिद्धि ना नाम.	”
२६९	क्षण मात्र सुख बहु काल दुःख ए, पद नो भावार्थ	२०२

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
२५०	ससारी जीव किहा स्थानके वर्चतो अणाहारी होय, किहा स्थान के आहारी होय ?	”
२५१	केटली आयुवालो तिर्यच पचेद्री अस- नोभी मरीने युगलिओ पचेद्री तिर्यच थाइ ?	१८६
२५२	आत्मा ना तीन प्रकार	”
२५३	विश्रसा, प्रयोगसा अने मिश्रसा ए तीन प्रकारना पुद्गल परिणमन	”
२५४	तीर्थकर नो जन्म थाइ तिवारे साते करने- केतलु अजुआलु थाइ ?	१८७
२५५	प्रस्ताविक गाथा	”
२५६	साधु ने पहिला व्रत ना नव,कोटि पचक्- खाण छै पण तेहना भागा, २४३ थाइ ते किम्	१८८
२५७	छ प्रकार ना पुद्गल	१८९

प्रश्न	विषय	पृष्ठ.
२५८	ज्ञानावर्णादिक कर्म नो बन्ध, उदय, उदीरणा, सत्ता केतला गुण ठाणा ताइ होय ?	१९०
२५९		
२६०		
२६१		
२६२	अचित् महा स्कध जे पुद्गल नो चौदे राज लोक प्रमाण पूरे तेह नो स्वरूप.	१९३
२६३	केवली पण केवल समुदघात करै तिवारे जे आठ रुचक प्रदेश छै ते किर्हा ताई पूरे ?	१९४
२६४	निगोद नो विचार	"
२६५	निगोद ना जीव नो भवाधिकार	१९५
२६६		
२६७	सिद्धशिला नो आकार	२०१
२६८	अष्ट महा सिद्धि ना नाम	"
२६९	क्षण मात्र सुख बहु काल दु.ख ए पद नो भावार्थ.	२०२

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
२७०	विषय, कषाय मिटे किहा गुण प्राप्त होय ?	२०३
२७१	युग प्रधान ना १४ गुण नी गाथा	"
२७२	त्रण धूर्ई नो प्रश्न	२०४
२७३	मिथ्या दृष्टी जीव नें शुभाचार होइ पण शुभोपयोग न होइ	"
२७४	आठै कर्म नी वर्गणा नें कार्माण शरीर कहै छै ते इम नहीं	२०५
२७५	प्रस्ताविक गाथा	"
२७६	चमरेंद्र केटली देविश्रो ना परिवार थी भोग भोगप्रितो विचरै ?	२०६
२७७	पट् दर्शन ना नाम	"
२७८	तिरसठ शिलाका पुरुष तेहना जीव ५९ तेहनी विगत	"
२७९	श्रीऋषभ देव स्वामी केतला वरस नो काल गृहस्थाश्रम वस्या तथा सर्व आयु केतला वर्ष जीव्या ?	२०७

प्रश्न.	विषय	पृष्ठ
२८०	बध नो स्वरूप	२०८
२८१	भार मान.	२०६
२८२	बाह्य अभ्यतर २४ परिग्रह	२१०
२८३	रोग केतला प्रकारें ?	”
२८४	एक सौधर्मद्रना आउपा माहि केतली इद्राणी चवै ?	२११
२८५	गाथा	”
२८६	नव नियाणा ते किहा ?	२१२
२८७	पुरुष वेद, स्त्री वेद, नपुसक वेद, उत्कृष्टे केटला काल रहै ?	२१३
२८८	पाच ज्ञान, त्रण्य अज्ञान काल थकी जघन्य तथा उत्कृष्टे केतलो काल रहै ?	”
	। मति अज्ञान अने श्रुत ज्ञान ना भागा	२१४
	। विभग ज्ञान नो काल	”
२८९	आठ ज्ञान नो आतरो	२१५
२९०	सत्रा प्रकार ना मरण	

प्रश्न	विषय	पृष्ठ
२९१	भूमिका केतली अचित् होइ ?	२१७
२९२	आवल नी छाल मध्ये असख्याता जीव किहा कहा छै ?	”
२९३	नवकरवाली ना १०८ गुण नी विगत.	”
२९४	साधु नै सोयेवसा ना पच महा व्रत अने श्रावक नै सवा छः वसा नो अणु व्रत ते किम् ?	२१९
२९५		
२९६	ससारे किं सार ?	२३०
२९७	प्रस्ताविक गाथा	”
२९८	भव्य अभव्य अने दुर्भव्य नो लक्षण	”
२९९	च्यार करण नो भावार्थ	२३१
३००	समकित पास्या थी श्यु होय ?	”
३०१	परमाणु प्रदेश मध्ये श्यो विशेष छै ?	२३२
३०२	पर्याप्त अने प्राण मध्ये श्यो विशेष ?	”
३०३	श्रीसेत्रुजे श्री ऋषभदेव पूर्व नवाणु वार आव्या ते नी सख्या केटली होय?	२३३
३०४	पाच शरिर नो शब्दार्थ	२३३

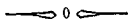
प्रश्न	विषय	पृष्ठ
	रत्नसारग्रन्थ मध्ये २५ मा प्रश्नमा ध्यान प्रति-	
	बधक नाम का प्रश्न आया है उस का अर्थ	१

पद

१	परम गुरु जैन कहो किम होत्रे	२
२	कंत बिना कहो कोन गति नारी	३
३	परम प्रभु सब जन शब्द ध्यात्रे;	४
४	चेतन ज्ञान की दृष्टि निहालो,	५
५	मार्ग चलत चलत गात	६

रत्नसार में जो गाथाए आईं उन का अर्थ. ७

प्रार्थना.



सब लोगों से निवेदन है कि इस उत्तम पुस्तक में कोई दृष्टि दोष से भूल रही हुई मालूम होतो सुधारलेवेँ और क्षमा करें तथा आगेकी आवृत्ति में शुद्ध करने के वास्ते खुलासा लिख भेजें ऐसी हमारी प्रार्थना है
लि० नि०

पुस्तक मिलने का ठिकाना —

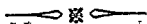
बाबू चाँदमल बालचन्द्र

चौमुखी पुल

रतलाम (मालवा)

॥ श्रीजिनार्यनम ॥

→ॐ॥ रत्नसार ॥ॐ→



॥ श्लोक ॥

प्रणम्य श्री महावीर शंकरं परमेश्वरं ॥
विचार रत्नसारस्य क्रियते बालबोधकं ॥३॥

अथ श्रीत्रीतरागनी वाणी, भव वेल कृपाणी, ससारं समुद्र तारणी, महा मोहान्धंकार दिनकरानुकारणी, क्रोध दावानलोपशमनी, मुक्ति मार्ग प्रकाशनी, कलि-मल प्रलयनी, मिथ्यात्व छेदनी, त्रिभुवन पालनी, पाप निशोधनी, मन्मथ प्रतिथंभनी, अमृत रस आस्वादनी, हृदय आल्हादनी, विक्षेप विस्तारणी, आगमोदगारणी, चतुर्विध सध मनोहारणी, भव्य जन कर्णोमृत श्रावणी,

योजन प्रमाण विस्तारणी, एहवी वीतरागनी वाणी
जाणरी

जीव १ अजीव २ पुण्य ३ पाप ४ आश्रव ५
सवर ६ निर्जरा ७ ब्रध ८ मोक्ष ९ धर्म १० अधर्म ११
हेय १२ ज्ञेय १३ उपादेय १४ निश्चय १५ व्यवहार १६
उत्तमर्ग १७ अपवाद १८ आश्रया १९ परिश्रवा २०
आतिचार २१ अनाचार २२ अतिक्रम २३ व्यति-
क्रम २४ इत्यादिक सामल्या विना शास्त्र ना भेद न ज़ारौ

सुठाम, सुगाम, सुजात, सुभ्रात, सुतात, सुमात,
सुचात, सुकुल, सुवल सुखी, सुपुत्र, सुपात्र, सुक्षेत्र,
सुदान, सुमान, सुरूप, सुविद्या, सुदेव, सुगुरु,
सुवर्म, सुप्रेम, सुदेश, २२ एचावीस योगवाई पुण्य
विना न पामिये

सुमति, शीलवत, सतोपी, सत सजमी, स्वजन,
साचा धोला, सत्पुरुष, सुमेला, सुलक्षण, सुलजा,
सुकुलीन, गभीर, गुणवत, गुणज्ञ, एहवा पुरुष नो
सग कीजे तो धर्म पामै

चंगल, चौर, छलग्राही, श्रवर्गी, अधर्म, अविनीत,
अधिक बोला, अणाचारी, अन्यायी, अधीर, श्रमोही,
निःश्रेही, कुलक्षणा, कुबोला, कृपात्र, कडा बोला,
कुशीलीया, कुसामनि, कुलखपणा, भूडा, मुच्च एहवा
पुरुष नो सग न कीजे

॥ अथ धारवा रूप छुट्टा बोल लिख्यते ॥

१ जीव धर्म किम पामै ? गुरु कहै छै—जीव
३ तीन प्रकारै धर्म पामै गुरु ना उपदेश यी १ तथा
अभ्यास यी २ तथा वैराग्य यी ३ एहवो उपदेशसार
पदमानन्दी २५ (पच्चीसी) मध्ये कह्यो छै

२ तथा अभ्यास ४ प्रकार ना कह्यो छै ते दीजो
प्रश्न—सूत्र अभ्यास १ अर्थ्याभ्यास २ वस्तु नो अभ्यास
३ अनुभवाभ्यास ४ एचार अभ्यास पकनाये वस्तु पामै.

. जीव नँ पाप उपजै हिंसाइ, पुण्य ऊपजै ते दयाइ
तथा द्वाकाय जीव नँ हणवानो परिणाम थाइ
तिहा पाप नीपजे ते द्वाकाय ना जीव नँ त्रिकरण

योगे हृणता वैर अने पाप बे नीपजै ते पाप नें उदयै
असाता, आकुलता, उद्वेगता, अधिरता उपजै १,
वैर नें योगै ते जीव आगी यथा योगै पीडै, ए भाव
बीजो २

३ धर्म, पुण्य, पाप कर्म श्या थी ऊपजै ते त्रीजो
प्रश्न — तेह ना उत्तर ए ३ तीन मध्ये पहलो बोल जे
धर्म १ ते एक मोहनी कर्म ना क्षयोपशम थी ते
किम ? दर्शन मोहनी कर्म ना क्षयोपशम थी धर्म
ऊपजै तथा चारित्र मोहनी ना उदय थी पुण्य पाप
ऊपजे

अत्रिरत नो उदय मद थाइ तथा क्षयोपशम थाइ
तिवारे त्रिरति नो उदय थाइ तिवारे पट काय ना
जीव ऊपर दया प्रणाम ऊपजे तेथी पुण्य ऊपजे २
तथा अत्रिरति ना उदयै तीव्र पाप नीपजै ३

ते मध्ये एटलो विशेष जे पुण्य पाप ते चारित्र
मोहनी उदय मद तीव्र होइ अने धर्म दर्शन मोहनी

क्षयोपशम क्षायक थी होइ - तथा पुण्य पाप ना फल भोगवाचै ते वेदनी कर्म तेहने उदये वेदाचै—फल देखाडै तथा पुण्य पाप नो बध पडै ते मोहनी कर्म नी मुक्तताइ पुण्य पाप प्रणमै ते अतराय नै क्षयोपशमे, इत्यादि विस्तार स्वबुद्धि करि जाणवा इति भावए तथा राजा ते न्यायी नै सोम दृष्टि, अने आचार्य ते निस्पृही होइ तिहा जैन धर्म प्रदर्त्तै

४ देशना नु चोयो प्रश्न—देशना ते कहिये जिहा मिथ्यात्व नी पुष्टी न थाय अने मार्ग विरुद्ध न प्रकाशै आत्म स्वरूप उपादेय रूपे, तथा शुभ क्रिया नो अत्यादर पण प्ररूपै अने शुभ क्रिया ना फल नी वाछा न कराचै, तिरस्कारै राखै पाप की आसेवना कालै निरस्कार राखै. इत्यादि आगमोक्त रीते प्ररूपे ते देशना कहिय तथा पाप की आसेवना कालै ज माठा जाणवा जेहनो फल दुर्गति नै मेठवै धर्म-पामदो वंगलो करै ते माहे तिरस्कारै राखवी

५ अने पुण्य क्रिया ते सेवना काले श्रत्यादर्से
सेववी पण तेहना फल नी वाछा न करवी तेह नो रहस्य
श्यो ? ज पुण्य क्रिया शुभ व्यापारै शुभयोगै न आदरै
तो मार्ग विरुद्ध थाइ परम्पराये पण वातराग मार्गे न
जोडाई अने जा पुण्य ना फल नी वाछा करै तो निदान
रूप मिथ्यात्व प्रणमे जो सहज रूप शुभ क्रिया करै तो
कर्म नो काटनिवारी शीघ्र मुक्तिपद पामै ए रहस्य

६ छठा प्रश्न भव्ये हेय, ज्ञेय, उपादेय शब्द नो भाग्यार्थ
लिखिये ८—समभावै हेय १, यथाये(यथार्थ) ज्ञेय, स
स्वरूपे उपादेय ३ ए रीते जाणवू वली गीतार्थ पासे
एह नो विशेष अर्थ धारवो । इति

७ हिचै श्री उवाई सूत्र मध्य तप ना भेद विशेष
कह्या छै, तिहा काउसगा द्रव्य १ भाव २ वं प्रकार
कह्यो छै तिहा द्रव्य काउसग ४ चार प्रकार ना कह्य
छै—प्रथम शरीर काउसग १ उपनि काउसग २ भात ३
पाणी नो ४ त्यागते पण काउसग तथा, भाव काउसग
ते ३ तिन प्रकार नो—कषाय काउसग १ ससार काउसग न

कर्म काउसग ३ ते मध्ये कपाय काउसग ते ४ * प्रकार
 नो, ससार काउसग ते चार † गति निवारण रूप २, कर्म
 काउसग ते ८ ‡ आठ प्रकार नो जाणवो, आठ कर्म
 क्षय थी.

हिवे जे शुभ क्रिया विधि नी छै ते स्वभाव रूपै
 प्रणमे तिहा निर्जरा नीपजै तथा शुभ क्रिया जे अविधि
 नी छै ते ब २ रूप. प्रणमै, तथा लौकिक यश सौभाग्य
 रूप प्रणमै, तथा पुण्य रूप प्रणमै ते बन्ध रूप धाइ,
 जेह थी ससार भ्रमण विशेष नीपजै, एह भाव

८ अथ जीवने खेद ऊपन्यो किम टलै आठमो प्रश्न—
 जीव नें खेद निवारवा नें अर्थे पर्व बव कर्म सभ रिये
 जेहवा में पूर्व कर्म बाध्या छै तेहवा उदय आवै छै ते
 मध्ये केतलायक कर्म प्रदेश वेदे नें वेदीनें खैरवै छै

* प्राथ १ मान २ माया ३ लोभ ४ धो अनर्तवो ते कपाय
 काउसग

† देव १ मनुष्य २ तिर्यक ३ नर्क ४ गतो नो इच्छा रहित ते
 संसार काउसग.

‡ ज्ञानावरणी १ दरस्नावरणी २ वेदनी ३ मोहनी ४ भायू ५
 नाम ६ गौत्र ७ अन्तराय ८ ये आठ कर्म ना क्षय त कर्म काउसग

केतलाइक निबड कर्म बाध्या छै ते विपाक वेदीने खेरवै
पण सुजानी जीव ते कर्म भोगवता उदय निष्फल करै,
आलाइ निद्वै, पश्चाताप करै, तिवारे अल्प बध धाय
बहु निर्जटा करै ते माटे बध निवारवाने उदै निष्फल
करै, उपयोगे विचारै, तिवारे बध अल्प करै ए भाव,

९ हिवे धर्म कथा नु ९ मू प्रश्न—तथा, उगाई
सूत्र मध्ये ४ च्यार प्रकार नी धर्म कथा कही तेह नानाम
आक्षेपणी १ विक्षेपणी २ निर्वेदनी ३ सप्रेदनी ४
तरुमार्ग ने जोडात्रै ते आक्षेपणी १ विक्षेपणी ते मिथ्या
मार्ग धी निरुत्तात्रै २ निर्वेदनी ते मोक्षाभिलाष उपजा
वै ३ सप्रेदनी ते वैराग्यभाव उपजात्रै ४ ए च्या
प्रकार धर्म कथा कही ए भाव,

१० हिवै भाव नव निधान नू १० मू प्रश्न—यथा, तरु
घर नव निधि थाय तेह नो श्यो अर्थ ? त श्यु जाणै
नव क्षायक लठिय पाभ्या जे केवली, तेहने अखूट न
निधि नीपनी तथा विषय ५ इन्द्रियना, अने कपाय

तेहनें निवर्त्या तेहनें नव निधि निपनी ए मुनि आसरी

११ हित्रै पाच इद्री ना विकार मिटै कीहा गुण निर्मलता थाय ते इग्यारमू प्रश्न ते कहै छै.—चक्षु इंद्रिय नो विकार मिटै, हृदय ज्ञान चक्षु निर्मलता नीपजे १ श्रोत्रेन्द्रिय नो विकार मिटै, जिन वचन नू श्रवण प्रीति प्रतीति रूपे थाय २ जिब्हा इंद्रिय नो विकार गये आत्मिक अनुभव रस-स्वाद पामै ३ नासिका नो विकार गये आत्म गुणनी सुवासना पामै ४. स्पर्श इंद्रिय नो विकार गये आत्म प्रदेश ना स्वभाव रूप स्पर्शन थाय ५ क्रोध गए समता गुण प्रगटै ६ मान गये भार्दव गुण प्रगटै ७ माया गये आर्जव गुण प्रगटै ८ लोभ गये सतोप गुण प्रगटै ९ ए रीते पण जीव नें ए गुण प्रगटै ए भाव

१२ हित्रै जीव नें मिथ्यात्व ४ प्रकार नो ते १ स्वामो प्रश्न कहै छै.—प्रदेश मिथ्यात्व १ परणाम मिथ्यात्व २ परूपणा मिथ्यात्व ३ प्रवर्त्तन मिथ्यात्व ४ व्यवहार समकित पामै तिवारे परूपणा १ प्रवर्त्तन २ मिथ्यात्व

त्व टलै, (अने) ग्रथीभेद थाय उपशम चयोपसमसमकि
 ते पामै तिवारे मिध्यात्व परणाम मिध्यात्व थी टलै
 (अने) क्षायक समकित पामै तिवारें प्रदेश मिध्यात्
 टलै इति रहस्य

उववाई सूत्र मध्ये पाच राज चिन्ह कह्या है
 पाच अभिगम स्त्री नें पण कह्या है, ते तिहा थी जोइयें

१३ हिं वै देशना च्यार ४ प्रकार नी छै ते ते
 मो प्रश्न कहै छै — धर्म देसना १ गति देसना
 वध देसना २ मोक्ष देसना ४ तेहना विस्तार गु
 गीतार्थ यकी जाणवा

१४ च्यार ४ प्रकार ना अनर्थ दड कह्या
 चउद मो प्रश्न कहे छ — आरत रुद्र ध्यानै अन
 दड १ प्रमादाचरणौ अनर्थ दड २ हिंसक शा
 आपवै अनर्थ दड ३ पापोपदेशे अनर्थ दड ४
 च्यार ४ प्रकारें अनर्थ दडे सप्तमागे कह्या छै

१५ आठ ८ प्रकार ना वचन परिसह, सह

ते पदरमो प्रश्न ते कहै छै —हीलणा—जन्मनी
करणी उघाडै जे पहिला वइतरु करता राधणीया
हता, हवे साधु थइ बैठा छै इम कही हीलणा वचन
परिसह साधू सहै १ बीजो खींसणा ते अनेरा लोक
नी साखे कोई पूर्व कर्म अवगुण होय ते कहै ते पण
साधू महै २ त्रीजो नदना—ते मनै करी अवगुणना
कर, आदर न दिये, मुख मोहटो राखे ३ चौथो
गरहणा—ते साधु ना मुग्ध ऊपरं आवी न छता अछता
अवगुण कहै ४ पाचमो ताडणा—ते साधु पुरुष नें
चपेटा प्रमुख आपै ५ छठो तर्जना—ते रे पापिष्ट ।
तू जाणीस हवे, अरे विटल । इत्यादि कठिन वचन
कहै ६. सातमो पराभव—ते वख पात्रादिक अपहरै,
फाडै, तोडै, वरती थी काडै इत्यादिक करै, ते पण
मुनि सहै ७ आठमो एपणा परिसह नो—ते भय नू
उपजाववू, जे ए रीते तुझ नें दु ख आपीस ८ ए
आठ बोल हीलणादिक वचन ना परिसह जाणवा
योग्य छै

१६ हिवै सिभई बुभई नो सोलमो प्रश्न ते सिभई
 १ बुभई २ मुच्चई ३ परिनिव्वाई ४ ए च्यार पद
 नो अर्थ यथा श्रुत अनुभव छै ते रीतै लिखिये छै कर्म
 नो जे ओछो यावो, जे अशो घटाडवो ते सिभई १
 तिवार पछी वस्तु नू ज्ञान थयू ते बुझई २ ते कर्म
 सत्ता थी क्षय थयू फिरि बध क्यारे नावे फिरि न
 वधाय ते मुच्चई ३. आत्मा के स्वभाध ठरण पाम्या ते
 परिनिव्वाई ते शीतलीभूत थया जन्म जरा मरण
 ना भय निरास्या ते (सब दुखाणमत करेई) ए भा.
 यी चौथा गुण स्थान थी जे अशो याइ ते तरतम भेदे
 कहवा अने चवद मानं अते ते सर्वगे कहवा एह नो
 अर्थ प्राय इम उपजे छै तो श्री जिनेद्रे प्रकाश्यु ते सत्य
 तथा सर्व कार्य सध्या माटे सिद्धे १ आत्म बोध सपूर्ण
 ज्ञान स्वरूप थया माटे बुद्धे २ सर्व कर्म थी मुकाणा
 माटे मुत्ते ३ शीतलीभूत थया माटे पडिनिबुडे ४ सप्तार
 नो अत करथा माटे, अडगडे ए पाठ नो अर्थ ए रीतै
 अनुयोग द्वारे, ए भाव छै

१७ हिव धर्म ना ४ च्यार प्रकार कह्या छै ते
 किहा ? ते यथा श्रुत सत्रमो प्रश्न लिखिये छै—प्रथम
 तो आचार धर्म १ दया धर्म २ क्रिया धर्म ३ वस्तु
 धर्म ४ ते मध्ये प्रथम आचार धर्म आदरतो जीव
 अनाचारणपणो टलै, वली लौकिक यश प्रतिष्ठा पामै,
 अन्य तीर्थी पण जैन धर्म नी प्रशसा करै, जैन नो
 आचार अनुमोदै १ बीजो दया धर्म—ते जेह थी हिंसा
 नो कर्म टलै, मुक्ति पामै, शुभ पुण्य ऊपर जे परपराये
 नुक्त हेतु थाय २ तीजो क्रिया धर्म—ते शुभ क्रिया
 पोषा प्रतिक्रमणा जिनपूजादिक विवे क्रिया करतो
 कर्म नो काट उतारै, भव तुच्छ करै, परपरायै मुक्ति
 मार्ग जोडावै ३ हिवे चौथो वस्तु धर्म—ते जेह थी
 वस्तु धर्म पामै, स्वरूपाचरण पूरण समकित पामै,
 पुण्य पाप कर्म नी निर्जरा नीपजे ४ ए च्यार
 प्रकार धर्म रथ ना ए च्यार पइडा तिरौ करी रथ चालै
 ए वस्तु गतै ए ४ धर्म ना भेद कह्या छै तेहना दान
 शील, तप, भावना, ए प्रकार ते कारण प्ररूपै छै

एणी रीते ४ प्रकार धर्म ना क्हा ते मध्ये एके दुह्या ईनही ४ प्रकारै धर्म जे प्राणी यथा अर्थ स्यादवाद रीते पामै ते (सूलभवोधिओथई वहिलो सिद्धि वरै) ए च्यार रीते धर्म ना ४ प्रकार जाणवा तथा जे प्राणी क्रिया विधि आदरै, उपयोग शुद्ध राखै, ते प्राणी वेहलो भव घटावै, वेहलोही मुक्ति जाय ए भाव

१८ हिवै कर्म ३ प्रकार ना छै ते अठार मो प्रश्न कहिये छै — हिवै कर्म जाते ३ प्रकार ना तिहा द्रव्य कर्म ते आठ कर्म नी वर्गणा १ नोकर्म ते पाच शरीर २ भाव कर्म ते राग द्वेष परणीति ३ तिहा द्रव्य कर्म, नोकर्म ते पाच शरीर पुद्गलिक पुद्गलाश्रित छै भाव कर्म ते आत्माश्रित छै पहिला बे कर्म ते कर्म विनाशिक छै भाव कर्म ते अनादि अविनाशी छै आत्म प्रवृत्ति या माटे, तथा हर्षोल्लास तें भाव कर्माश्रित छै इम द्रव्य सग्रह नी टीका मध्ये कह्यो छै

१९ हिवे नव पदार्थ ना भावार्थ नो उगणीसमो

प्रश्न.—तथा ते पच परमेष्ठी शरण करवू ते थी उदय कर्म नू निवारण थाइ अरिहतादिक ना द्रव्य थी शरण करे तो द्रव्य थी जे सर्व पापना उदय आवता ते निष्फल थाय, विपाक वेदना पण अल्प थाइ, इत्यादिक गुण घणो नीपजे सर्व द्रव्य पाप नो नाश करै. तथा (श्रवा अप्प भिरउ) इम आत्मा आत्मा नू सरण करै सरणागत वज्र पजर वत् पोता नें स्वरूपे, प्रणमै तिवारे सर्व कर्म नो नाश करै, क्षय करै इम आत्म शरण अर्ने निमित्त सरण नो स्वरूप जाणवो तथा (अरिहत) नो नाम सभारता, समरता, प्रणमता, आत्मा नें श्यो गुण नीपजे ? अरि जे राग द्वेष भाव ते मिटैं, वीतराग स्वरूप पामै १ (णमो सिद्धाण) पद समरता, सभारतां, प्रणमता श्यो गुण नीपजे ? सिद्ध स्वरूप आत्म अरूपी भोत्र नें पामै २ तथा (आयरियाणं) पद समरता, सभारता, प्रणमता, जीव नें श्यो गुण नीपजे ? पचाचार प्रवर्त्तीन सुलभ उदय आवै भवतातै, आचार्य पद गणधर पदादिक पामै ३ (उपाध्याय) पद नू

समरण सभारता, तन्मय प्रणमता जीव नें श्यो गुण
नीपजे ? शास्त्रार्थ सूत्राभ्यास सुलभ पामै, अध्यापक
शक्ति भगवतै प्रगटै ४ (साधु) पद ध्यान करता
मुक्ति मार्ग नो साजन सुगम, सुलभ, बोधि पामै,
चारित्र सुलभ पामी, गज सुकुमाल नी परें, तुरत
मुक्ति पद पामै ५ (दर्शन) पद आराधतो मम्यक्त
निर्मल करे ६ (ज्ञान) पद आराधतो बोध निर्मल
करै (चारित्र) पद आराधतो निरतीचारपणें सामा-
यकादि पच चारित्र पच महा व्रत सुलभ पामै ८ (तप)
पद आराधतो इच्छा निरोध थाय अणीच्छक गुण
पामै ९. ए नव पद नो भावार्थ सक्षेप थी जाणवो

२१ हित्रै उदय बधनू इक्कीसमो प्रश्न कहै छै ते नो
स्वरूप लिखिये छै बाध्या कर्म उदय आवे, द्रव्य, क्षेत्र,
काल, भाव पामी नें जेहवै रसै आवै तेहवा प्रदेश तथा
विपाकै भोगवै ते भोगवता जेहवा वेदे तेहवा नवा
बीजा बधाय तिहा वेद, ते सम भावे वेदै, तिहा निर्जरा
थाइ तथा वेदता जे विषम राग द्वेष भावै वेदे तो

नवा बधाय तथा विषम वेदी नें पछें पश्चात्ताप करै, तिहा कर्मबध ना रस घात विघात करी कर्मबध नी चिकास मिटै ते उदय काले पामीने सुगमें खरी जाइ अने जे कर्म विषम वेदीने मङ्ग थाय ते चीकणा कर्म बाधै. ते उदय काले घणो दोहिला भोगवी नें निर्जरै पण वेदता बीजा कर्म ना बाधणा बधाय इति बध उदय नो भावार्थ जाणवो .

२२ हिवै बोध समाधि नो बावीसमो प्रश्न तेना लक्षण कहै छै —सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्र अप्राप्त प्रापण बोध तेषाएव निर्विघ्नेन भवान्तर प्रापण समाधि इति *

२३ सवेग वैराग्य लक्षण कथ्यते. ते तेवीसमो प्रश्न—(सवेगो मोक्षाभिलाष) ससार शरीर भोगादि राग नो जे वय, ते वैराग्य (मोक्षनो अभिलाष ते सवेग) “धम्मो धम्म फल्लहि दोसणयहरिसो होय सवेगो.

* सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र जे अप्राप्त पटले फ्यारे प्राप्त थया नथी ते नें प्राप्त करवु ते बोध केहवाय छै सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्र नोज निर्विघ्न धकी भवान्तर ना प्राप्त थवु ते समाधि

ससार देह भोएसु विरति भावोय वेराग ”

२४ हिवै दान शील तप भाव श्या वडे होय ते कहे छै ते चोवीसमो प्रश्न — धनबल वडे दान देवाय, मन बल वडे शीयल पले, तन बल वडे तप थाय, सम्यक् ज्ञान बल वडे भाव वधै, ए भाव तथा सद्गुरुनी देसना, सुदेवनी सेवना, सुधर्मनी आराधना ए त्रण निमित्त भाग्य जोगै मिलै

२५ अथ ध्यान प्रतिबन्ध काना मोहराग द्वेषाण स्वरूपम् कथ्यते पच्चीसमो प्रश्न — शुद्धात्मादि तत्त्वे विपरीताभिनिवेशजनको मोहो मिथ्यात्वमिति यावत् निर्णिकार स्वसन्निति विलक्षण वीतराग चारित्रमोहो राग द्वेषो भण्यते चारित्र मोह शब्देन राग द्वेषो कप्य भण्यते इति चेतकपाय मध्ये क्रोध मान द्वयेद्वेषाङ्ग माया लोभ द्वय रागाग नो कपाय मध्ये स्त्री पुनपुसक वेद त्र हास्य रति द्वय इति पच रागाग । श्ररति शोक द्वय भ जगुप्ता इति तुर्यद्वेषाग भावैतव्य ॥ अत्राह शिष्य

राग द्वेषोदय किं कर्म जनित ? किमात्म जनित ?
 इति प्रश्न पुसात नय विवक्षावशेन चिंतितैक देश शुद्ध
 निश्चयेन कर्म जनिता भण्यन्ते । तथैव अशुद्ध निश्चयेन
 जीव जनिता इति, स च अशुद्ध निश्चयेन जीव जनिता
 इति स च अशुद्ध निश्चये शुद्ध निश्चयापेक्षा व्यवहार
 एव अथ मतं । साक्षात् शुद्ध निश्चयेन कश्येति पृच्छामो
 वय ॥, तत्रोत्तर ॥ साक्षात् शुद्ध निश्चयेन स्त्रीपुरुष
 सयोगरहित पुत्रस्येव । सुद्धा हरिद्रायासयोगरहित
 रगविशेषस्यैव । तेषामुत्पत्तिरेव नास्ति कथमुत्तर
 प्रयच्छाम ॥ इति भाव ॥

२६ हिनै तिर्यग परिचय ऊर्ध्व परिचय नो अर्थ
 प्रश्न छावीसमो—शास्त्रे मध्ये जिहा प्रश्ने तिर्यग परिचय
 कह्यो छै, ऊर्ध्व परिचय कह्यो छै तेहनो श्यो अर्थ ? जे
 पाच द्रव्य सप्रदेशी पचास्तिकाय छै तेहनें तिर्यग प्रसज्ञा
 केहीये १ नै जे एक काल अप्रदेशी छै तेहनें ऊर्ध्व
 सज्ञा जाणवी २ एहे नो विस्तार प्रवचनसार ग्रंथे
 कह्यो छै

२७. अथ धर्म केतली प्रकार इति सत्तावीसमो प्रश्न ते कहै छै—तेह नी गाथा भाव नो धर्म तो कह्यो छै तद्यथा (धम्मो वस्तु सहावो क्षमादि भावो । य दस विहो धम्मो, रयण तयच धम्मो । जीवाण रक्षण धम्मो ॥ १ ॥)

अस्यार्थ—वस्तु नें वस्तुनो जे स्वभाव जिम चेतन नें चेतन स्वभाव अेक तो यह धर्म १ बीजो (पति मद्दव अज्जव) ए गाथाये जे दस प्रकारें यति धर्म कह्यो ते धर्म २ त्रीजो दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूप आत्म प्रणमै धर्म ३ चौथो जीव नी द्रव्य भाव सहित दया पालै ते धर्म ४ ए भाव इति धर्म चतुर्द्धा मुनयो वदति इत्यर्थ ॥

२८ हिवै ४ प्रकारनो मुनि नें सयम कह्यो छै ते अठ्ठावीसमो प्रश्न—तिहा प्रथम प्राण सयम ते पट्ट काया ना जीव ना वधनी अविरत मिटीते माटे प्राण सयम १, बीजो इन्द्रिया सयम ते पाच इन्द्रिय विकारथी निर्गच्छावै ते इन्द्रियसयम २ त्रीजो कपाय सयम ते त्रिणि चौकडी कपाय ना उदय मिट्या माटे कपाय

तयम ३ चोथु मनसयम ते द्रव्य भाव रूप मन ना
 विकल्प सवख्या माटे ते मन सयम ४ तिहा द्रव्य मन
 ते पाच इन्द्रिय ना विषय रूप, अने भाव मन ते
 व्यक्ताव्यक्त विकल्प रूप ए च्यार प्रकारनो सयम साधु
 नें जाणवो आत्मा स्वभावै प्रणमै तिहा सम्यक्त गुण
 नीपजे तेहना फल ज्ञान अने आनन्द ए बे नीपजै
 तथा देहादिक परभावै प्रणमै तिहा मिथ्यात्व ससार
 नीपजै तेह ना फल सुख दुःख ए बे नीपजै एहवो
 जाणी आत्म स्वभावै प्रणमवू ए तात्पर्य

२९ तथा जीवाभिगम सूत्र मध्ये उरपरि सर्पनी जाति
 समुच्छिन्न जेह नो शरीर जघन्य थी आगुल्ल नी असख्यातमें
 भागें, उत्कृष्टे जोयण (जोजन) पहरुत कह्यो छै अने
 तिहाज असालीथो सर्पने जाति चक्रवर्त्तिना स्कंध वार
 मध्ये ऊपजै ते समुच्छिन्न नो शरीर जोजन १२ वार नु
 कह्यो छै तेह नो आयु अतर मुहूर्त्त कह्यो छै बीजानें ९
 नव जोयण ताई कह्यो एह नें वार जोजनताई तें
 विचारवू तथा समुच्छिन्न उरपरि नो आयु ५३ त्रेपन

हजार वरस नोउत्कृष्टे कहयो छै इति भाव

३० हिवे ४ प्रकारे मरण नो तीसमो प्रश्न —
जे ४ प्रकार ना मरणै घणा जीव मरे छै एह भाव

३१ हिवै जीव ना जे द्रव्य गुण पर्याय छै तेहना
घातक कुण छे ते इकतीसमो प्रश्न कहै छे — अज्ञान-
पणो ते आत्मद्रव्य नो घाती, मिथ्यात्व ते आत्मगुण
घाती, अत्रित ते आत्मिक सुख-पर्याय घाती तथा
अज्ञान मिथ्यात्व ते आत्मानो जीवपणो दाबे छे, अत्रि-
रति आत्मिक सुख दाबे छै, ए भाव

३२ तथा जीव शुद्ध ज्ञान उपयोगेभाव निर्जरा करै-
छै, अने वैराग्य भाव उदासीनताये द्रव्यनिर्जरा करै'
छै इति द्रव्यभाव निर्जरा स्वरूप जाणयो ए भाव

३३ हिवे इच्छा मूर्च्छाइ जीव श्यु पुष्ट करै ? ते
तेतीसमो प्रश्न — ते जीव नें पुद्गल नी इच्छा मुर्च्छा
छै ए ने करीने जीव श्यु पुष्ट करै ? ते कहै छै —

इच्छाये अज्ञान पणो पुष्ट करे, अने मूर्च्छाये मिथ्यात्व पुष्ट करे. ए भाव

३४ हिचै गुण पर्याय ना घातक नो चोतीसमो प्रश्न.—हिचै आठ कर्म मध्ये एक मोहनी २८ प्रकृति छै ते मध्ये ३ प्रकृति मिथ्यात्व मोहनीय जाणवी, २५ प्रकृति चारित्र मोहनी, ते त्रणै भाग वेदचाये, मोहै, राग द्वेष तिहा मांह शब्दै मिथ्यात्व जाणवो राग द्वेष शब्दै चारित्र मोह जाणवो तेहनी २५ प्रकृति मध्ये १३ प्रकृति राग ना घरनी, १२ प्रकृति रागद्वेष ना घरनी, ते पूर्वे कही छै तिम जाणज्यो ए अत्रिकार वीतराग समयसार ग्रये वपाविकारे कहु छै

३५ हिचै शरीर परिणाम श्रद्धाननीगति प्रश्न र्पतीसमो ते.—शरीर तथा परिणाम तथा श्रद्धान ए तीनुनी गति जे रीते द्य ते रीत लिखिये छै शरीर नी गति तो उदयीक भावनी वेदनी मध्ये छै, १ परिणाम गति विषय कपायनी प्रवृति मध्ये इष्टानिष्ट रूपै छै २.

आत्मानि भाति तत्रातत्वव्रीणी विवेचन रूपै छै ३ ती
गति, आमास आत्मानि तो ए रीते दीसे छै

३६ हिवै द्रव्य गुण पर्याय श्या थी समरै ते छत्तीम
प्रश्न — द्रव्य गुण पर्याय जीव ना छै ते जे गुण ध
नरै ते कहै छै दर्शन, ज्ञान, चारित्र ए तीनथी समरै

३७ हिवै जीव ना द्रव्य गुण पर्याय समरै ते
जिन ? तें सतीसमो प्रश्न — आत्मा द्रव्य असख्यात
इहेरो तेहनु जिनवचन प्रतीतें, अनुमानें, अनुभवें
इहेरो प्रत्यक्ष जे भासन थयो प्रतीतात्मक धर्म जे
रूपद्रव्य दीठो छै सम्यक् दर्शन गुण हेतु ते द्रव्य
इहेरो तथा प्रतीतात्मक धर्म अनन्त गुण नु जाण
इहेरो थयो ते गुण हेतु सम्यक ज्ञान जाणवो तथा द्रव्य
गुण रूपै प्रणमै जे पर्याय तेह नो हेतु स्वरूपाचरण
इहेरो गुण हेतु. एटले जीवना पर्याय समरै ते चारित्र
गुण हेतु. इम दर्शन द्रव्य, ज्ञाने गुण, चारित्रै पर्याय,
समरै इति भाव.

३८ हिंवै जन्म जरा मरण नु दु ख किम टलै ते अडतीसमो प्रश्न कहै छै—तेहना हेतु रत्नत्रय धर्म ते किम ? सम्यक दर्शन गुण थयो अनन्त पुद्गल परावर्त्तता ए जे जीव घणा जन्म करतो ते अर्द्ध परा पुद्गल, माठैरा ताई उत्कृष्टै जन्म करै, एटले सम्यक दर्शन गुणै घणा जन्म नी परपरा यी खपावे, तथा जरा जे शुभाशुभ कर्म उदयागतै आवै ते सुख दुःख रूप वेदावै, तेह नी वेदनी ना सम्यक ज्ञान गुणै मिटाववानो २ जीवनें सम्यक चारित्र गुण ते स्वरूपाचरण व्रताचरण रूपै चारित्र गुणै जिहां मरण यी गति पामै एटलेइ चारित्र गुणै मरण वेदना मिटाविये ३ ए रीते जन्म जरा मरण भय मिटाववानो हेतु दर्शन ज्ञान चारित्र ए तीन गुण जाणवा ए भाव.

• ३९ हिंवै योगै बाधै छै कर्म, तथा सत्ताये पिण कर्म छै ते शी रीते छूटै ते उगणचालीसमो प्रश्न कहै छै—योग तीन उपार्जा जे कर्म ते तप सजमादि शुभ क्रिया

व्यापारे प्रवर्तते त्वारे टलै तथा सत्ताये कर्म छै ते, शुद्ध
 उपयोगे स्वाभाविक पोताना गुण पर्याय द्रव्यपणे प्रणमै
 ते सत्ता कर्म छै ते मिटावै इम योग कर्म छै ते शुभ
 क्रियाये निर्जरे तथाचयोक्त—“आगम अध्यात्मतणा,
 कक्षा घणा प्रबध। द्रव्यगुणे योगे परणमै, तो सोनो अने
 मुग्ध”। अने हिंवे सत्ताये कर्म छै ते, शुद्ध उपयोगे निर्जराय
 ए भात्र तथा मिथ्यात्व ना बाध्या कर्म सम्यक्त पाभ्या
 यी मिटै, अविरती ना बाध्याते पिरतै टलै

४० पुन मिथ्यात्व अविरती ना बाध्या जे कर्म
 ते किम मिटै ? ए चालीसमो प्रश्न — कपाय ना
 बाध्या कर्म उपशमादिक समता गुणे टलै तथा
 प्रमादना बाध्या कर्म अप्रमाद दसायै टलै इन्द्रिय विषय
 ना बाध्या कर्म ते तपस्यायै टलै तथा योगना बाध्या
 कर्म ते अयोगी अत्रस्यायै सेलेसी करणे टलै
 ए भात्रार्थ जाणरो

ते.इकतालीसमो प्रश्न — ते निश्चय व्यवहार नये
 सम्यक दृष्टि नें श्यो गुण करै ते कहै छै
 निश्चय नय ते जीव द्रव्य वस्तु नें दृढता आस्तिकता
 करण हेतु अने व्यवहार नय ते जीवना पर्याय शुभाशुभ
 कर्म रूपै जे भरघा छै तेहनें समारवानो हेतु छै ते
 व्यवहार नय गुणकारी छै तथा ते व्यवहार नै केडै
 उद्यम छै अने निश्चय नय केडै दृढता स्थिरता छै. ए वे
 नय जिनेश्वरना भाष्या आत्म वस्तु नें समारवाना हेतु
 छै ए जैन पद्धति स्यादवाद रूपै छै एभाव.

४२. हिवै निश्चय व्यवहार सम्यक शी रीते छै
 ते विआलीसमो प्रश्न, तेहनो स्वरूप कहै छै —
 श्रीजिनवाणी प्रतीतै ग्रहीनें षट् द्रव्य ना यथार्थ परौ
 गुण पर्याय धारै अनुभव प्रत्यक्षै स्वरूपनें वेदै, तथा
 गुण पर्याय नो विलेखन करै तथा पुद्गलादिक
 कर्म, पर्याय सू तदाकार न प्रणमै, पाच इद्रीना
 भोग त्रिषै इष्टानिष्ट रूप न वेदै, पोताना स्व-
 रूप भेद रत्नत्रय रूपै आराधै, तेहनें व्यवहार

सम्यक्त कहिये तथा पोताना गुण गुणी पर्याय अभेद रूपै रत्न त्रय रूपै निर्विकल्प समाधिपणे प्रणमै तेहनें निश्चय सम्यक्त कहिये ये पूर्वोक्त वस्तु व्यवहार सम्यक्त ते निश्चय सम्यक्तनो कारण जे निश्चय सम्यक्त ते केवल ज्ञान नो कारण इति वीतराग समयसार ग्रथे उक्त

४३ तथा नव तत्र पट् द्रव्य नो जे आस्तिक भावै श्रद्धान, तथा देव गुरु धर्म नु यथार्थ पणै सत्य श्रद्धानु बुद्धिपणा नो प्रकाश विशेष तत्वातत्व नु नय भग रूपै, अनेकात मार्ग प्रिणेष रीते, आगलै परपराये वस्तु व्यवहार सम्यक्त जे पूर्व कह्युं ते रूप नें भेदवै इति रहस्य

४४ हिनै धर्म कर्म पुण्य पाप जेह थी होय ते चूमालीसमो प्रश्न — शुद्धोपयोगै जीव पोताना द्रव्य गुण पर्याय सु तदाकारै आत्म पणै प्रणमै ते धर्म तथ राग द्वेष मय अशुद्धोपयोगै - जिहा कर्मबध नीप

ते वध थी ससार थी ते धणी वधै इम शुद्धोपयोगै
 धर्म अने अशुद्धोपयोगै कर्म. तथा शुद्धोपयोगै शुभ
 योगै पुण्य मन वचन काय ना योग प्रशस्त व्यापारै
 तदाकार पूजा, सामायक, दानादिक शुभ योगै प्रवर्तन
 तेथी पुण्य वध नीपजै तथा अशुभ मन, वचन, काया
 ना योग विषयादिक व्यापारै तन्मय तल्लानितापणै प्रणमै
 तिहा पापवध नीपजै एटले शुभ अशुभ योगै पुण्य
 पाप वध, अने शुद्धाशुद्धोपयोगै धर्म कर्म नीपजे, तथा
 पुण्य वधै, शुभ गति, शुभ सामग्री साता जीव पामै
 तथा शुद्धोपयोगै धर्म, निर्जराय कर्म क्षय करी मुक्ति पद
 पामै तथा अशुद्धोपयोगै पापवधे; तेणे ससार मध्ये
 घणो काल रहै, घणा भव करै, तथा अशु भोपयोगै पाप
 वध थी आत्मा जिहा धणी असाता पामै एटले पापै
 असाता, पुण्यै साता, कर्म ससार घणो वधै, धर्म मोक्ष
 इस चार भेद भिन्न भिन्न जिम हता तिम कह्या इति
 रहस्य

पच इन्द्रिय ना २३ तेवीस विषय व्यापार अने योगै

३ तीन तल्लीनतापणै न जोडै तेह नें पापबध अरुप नीपजै, ते आलोयणै निंदै छूटै तथा शुधोपयोगै जे कर्मबध नीपजै ते भोगवै छूटै अत्र चीभगी कोई जीव नें नीपजै पाप में कर्म अल्प १ कोई नें कर्म बहु नें पाप अल्प २ कोई नें पाप बहु नें कर्म घणा ३ कोई पापबध कर्म बध एकै नहीं ४ इम कर्मबध पापबध ना भेद जाणवा

४५ तथा धर्म कर्म भर्म सेणे ते पंतालीसमो प्रश्न -तत्रो-त्तर, धर्मते शुद्धोपयोगै, कर्मते क्रियाई, भर्मते मिथ्यात्व मोहे

४६ पुण्य धर्म एक छै किंवा जुदा छै ते छियालीसमो प्रश्न —पुण्य, पाप, धर्म, ए तीन वस्तु जुदी छै पुण्यना भेद—अण पुण्य १ पाण पुण्य २ लेण पुण्य ३ सयण पुण्य ४ वध पुण्य ५ मन्न पुण्य ६ न्य पुण्य ७ काय पुण्य ८ नमस्कार पुण्य ९ ए नव भेद उपजवाना कह्या छै तेहना फल ४२ बेतालीस (साहच गोयमण, दुगइत्यादि) तथा पाप ना अठारे पाप स्थान, ते १८ भेद तेहना फल ८२ बयासी (नाणतराय

दसग इत्यादि) धर्म ना १० दसभेद—खति, मदव, अजव, इत्यादि गाथा जे दस प्रकारे जती धर्म ते धर्म भेद धर्म ना फल ते मोक्ष इम धर्म आत्म स्वभाव जनित, अने पुण्य पाप ते कर्म जनित पुण्य तो बध रूप छै. पुण्य तो भोगवै छै पुण्य ते आश्रव रूप छै पुण्य मिथ्यादृष्टी नें होय पुण्य ते क्षय छै तथा धर्म ते सम्यक दृष्टी नें छै धर्म सवर रूप छै. धर्म ते निर्जरा रूप छै धर्म ते अक्षय रूप छै धर्म नादसभेद छै धर्म ना फल ते मोक्ष रूप छै इम धर्म पुण्य नी भेदता छै तथा धर्म पाप पुण्य वस्तु भिन्न, गति भिन्न, उपयोग भिन्न, अने फल भिन्न, ए रीते जाणवो

४७ हिंवै धर्म कर्म उपजतो ह्यदमस्त किम जाणै ते सैंतालीसमो प्रश्नः--सकल्प विकल्प परिणामै जबताइ जीव वतैं छै तिहा कर्म नीपजै जे जीव निर्विकल्प भावे प्रणामै तिहा धर्म नीपजै एटले विकल्पै कर्म, निर्विकल्पै धर्म, ए भाव

४८ हिंवै स्वाभाविक त्रण गुण नो लक्षण कहै

छै ते श्रद्धतालीसमो प्रश्न — प्रकाशता अने विलङ्घनता
 स्वाभाविक लक्षण ज्ञान १ दृढास्तिकता प्रतीतात्मक
 श्रद्धानता स्वाभाविक दर्शन लक्षण २ तथा स्थिरता
 अने अनाकुलता चरण रूप ते स्वाभाविक चारित्र
 लक्षण ३ ए चरणना सामान्यपरण लक्षण जाणवा अने मूल
 भेद ज्ञान जाणवो दर्शन देखवो चारित्र परणमैत्रा इम
 छै पण उत्तर भेदे—स्वभाव लक्षण सामान्यपरणै जाणवु
 ते ज्ञान जाणवो वस्तु गत दर्शन देखवो प्रतीतात्मक
 श्रद्धान रूप छै, ते दर्शन जाणवो अने विवेक रूप
 ते परण मनु तेम चारित्र तरण रूप छै ए जीव मा
 ३ गुण वस्तु रीते जाणवा ए भाव

४९ हिने धर्म सांभलवो, जाणवो, धारवो ते
 केरी रीते? ते उगणपचासमो प्रश्न कहै छे — ते धर्म
 सांभलवो, ते धर्म जाणवो, ते धर्म आदरवो ते विधि
 कहै छे वीतराग नी वाणी स्यादवाद रूपै छै - आत्म
 स्वरूप गुरु उपदेश कहै छै ते धर्म सांभलवो १ स्वसमय
 पर समय विलङ्कता धर्म शुद्धाशुद्ध प्रकाश थयो ते

रत्नत्रय धर्म जाणवो तथा पोताना गुण प्रयाय रूप आत्मा
ते आत्मपरौ प्रणम्योजेर्णे धर्म प्ररूप्यो ते धर्म आदरवो ३.
इम ३ त्रण भेद जाणवा

५० हिचै जीव नी चेतना वे प्रकार नी छै ते
पचासमो प्रश्न — ते एक ज्ञान चेतना १ वीजी अज्ञान
चेतना २, अज्ञान चेतना ना वे भेद — एक कर्म चेतना १
वीजी कर्म फल चेतना २ ते मध्ये कर्म चेतना — ते
राग द्वेष रूपै प्रणमै ते कर्म चेतना तथा उदय आव्या
कर्म वेदै ते कर्मफल चेतना ज्ञान चेतना मध्ये कोई
भेद नहीं ज्ञान चेतना प्रगटै ते कर्म चेतना तथा कर्मफल
चेतना मिटै छै ज्ञान चेतना सम्यक्त पास्या पछै होई.
अने मिथ्यात्वी नें अज्ञान चेतना, ए भाव.

५१ हिचै त्रिकाल भाव कर्म निवारिवानु कारण ते
इकावनमो प्रश्न — ते हिचै त्रण्य कालै जे जीव पाप
कर्म बावै छै ते निवारवानो कौण हेतु ? इति प्रश्न
तत्रोत्तर. गया काल ना पाप कर्म ते प्रतिक्रमणै मिटै,

अने वर्तमान काल ना पाप कर्म आलोचणै मिटै,
अने अनागत काल ना पाप कर्म पचक्खाणै टलै
ए भाव

५२ हिवै व्यवहार ना चार भेद नी विगत नो
वाचनमो प्रश्न— अणउपचरित सदभूत व्यवहार
प्रथम ते श्यु कहिये ? अनतो ज्ञान, अनतो दर्शन,
अनतो सुग्व, अनतो वीर्य ए आद देई नें अनत गुणा-
त्मक शुद्धता ते १ बीजो उपचरित सदभूत व्यवहार
तेहनो अर्थ क्षयोपशम ज्ञान, क्षयोपशम दर्शन, क्षयो-
पशम चारित्र ते २ त्रीजो अण उपचरित असदभूत
व्यवहार एह नो अर्थ अनादि कर्म अने जीव ज्ञाना-
वरणी आदि देई नें ८ कर्म जे द्रव्य कर्म ते ३ चौथो
उपचरित असदभूत व्यवहार तेहनो अर्थ बेटा बेटा,
घर, द्विपद, चतुष्पद आदि देई नें दस त्रिध परिग्रह ते ४
ए रीते ४ चार व्यवहार नो अर्थ जाणो

५३ हिवै ३ तीन प्रकार ना कर्म छै ते तिरपन्नमं

प्रश्न —तेह नी विगत द्रव्य कर्म ज्ञानावरणी आदि
देईने कर्म पुद्गलीक ते १ भाव कर्म ते राग द्वेष आदि
देईने आत्मा नो अशुद्ध परिणाम विभावै परिणामै
ते भाव कर्म २ नोकर्म ते उदारिकादि पाच शरीर
ते जाणवा ३ ए भाव

५४ हिवै दया ना चार भेद छै ते चोपनमो
प्रश्न —दया ते मिथ्यात्वदृष्टीने कहीते परहथ बेहचाणी
राग द्वेष हणाइ ते नथी जाणतो १ वा परदया तो
विरतिने होई २ भाव दया ते सम्यकदृष्टीने होई
३ स्वदया क्षिपक श्रेणी चढता होई ४ इम चार
भेदे जाणवी

५५ हिवै मोक्षना ३ त्रण भेद ते पचपनमो
प्रश्न —भाव मोक्ष सम्यकदृष्टीने होई १. द्रव्य मोक्ष
साधुने होई २. गुण मोक्ष केवलीने गुणस्थाने १ ३।
१४ तेग्मा चवदमा सुधी होई ३

५६ हिवै चेतना केवी ते छप्पनमो प्रश्न —

ते चेतना तीन प्रकारनी कही तिहा कर्म चेतना त्रस जीव नें १ कर्म फल चेतना एकेंन्द्रियादिक प्रमुख नें २ ज्ञान चेतना सम्यकदृष्टी नें होइ ३ इति भाव

५७ हिचै ससार मध्ये ३ तीन प्रकार ना जीव

नो सत्तावनमो प्रश्न ते कहिये छै —एक भवाभिनदी ते मिथ्यादृष्टी जीव १ पुद्गलानदी ते सम्यकदृष्टी जीव जेह नें शुभाशुभ कर्म पुद्गल ना उदय आयै, रति वेदाइ, अतर वेदीपणो जाइ, पण ससार माहे आनन्दकारी न जाणै ते माटे सम्यकति जीव पुद्गलानदी कहिये, जेणै ससार ना पुद्गल नो आनन्दकते २ केवल आत्मा नो आनन्द रत्न त्रय धर्म वर्तै ते माटे मुनि आत्मानदी जाणया ३ इति भाव

५८ हिचे सुगतिकुगतिनो अठावनमो प्रश्न —ते शुभोपयोगै सुगति, अशुभोपयोगै कुगति अशुभोपयोगै ससार थाइ, शुद्धोपयोगै मुक्ति थाइ तेह नो हेतु, जे साटे शुभ प्रकृति नें उदयै जीव नें शुभ योग थाइ, धर्म नो कारण शुभ क्रियाकरै तेथी शुभ बाधैते शुभ गति

तथा अशुभ कर्म ना उदय अशुभ योगै थाइ तेथी
 अशुभ क्रिया विषयादि सेत्रै, तेथी पाप प्रकृतिबधाइ,
 तेथी अशुभ गति ते माटे पुण्य पापते योगनें आयतै,
 अने धर्म अविधर्म ते उपयोग नें आयतै तेह नो राग
 द्वेष मोह नें उदय अशुद्धोपयोगै तेज मिथ्यात्व अधर्म
 कहिये तथा शुद्धोपयोग जं रत्न त्रय रूप जे परणाति
 वर्तारग भाव ते धर्म ते बे उपयोगै एटला माटे
 इम जाणवो ए भाव जाणवो इति

५६ हित्रै रोगाक्रान्तनु गुणसाठमो प्रश्न —जे रोगा-
 क्रान्तनो अर्थ कहिये छै घणा काल लगै रहै ते रोग
 कहिये अने तत्काल सद्य प्राणघात करै ते आततक
 कहिये इति भाव

६० हित्रै बल वीर्य नो साठमो प्रश्न —ते बल,
 वीर्य, नै पराक्रम नो अर्थ लिखिये छै बल ते शरीर नो १,
 वीर्य ते अतरग आत्मा नो २ पराक्रम ते उदयानुसारी
 जाणवो ३. ए भावार्थ सूत्रे इति

६१ हिचै सम्यक्त, मिथ्यात्व नो इकसठमो प्रश्न —सम्यक्त ते, जीवनी सत्ताइ द्रव्य तत्व रूप छै ते जिवारे पोतानो समय पामी नें पडै तोही पिण मिथ्यात्व पर्याय द्रव्य गुण रूपै एकत्र पणै न प्रणमी सकै तेहनाथी, तो तिवारे ७० सीत्तर कोडाकोडी सागरोपम नीथिती बधाती नथी एटला माटे मिथ्यात्व ते पर्याय रूप प्रणमी छै त्वारे एक कोडाकोडी सागर नी माठेरी बधाय छै, ते भाव पोताना त्रयोपशम थी उपजे छै पछै ज्ञानवत बहुश्रुत कहै ते सत्य इति

६२ हिचै पुद्गल ते कर्म छै, अने जीव ते पिण कर्म छै ते शी रीते? ते त्रासठमो प्रश्न —पुद्गल परमाणु विभाव रूपै प्रणमै तिवारे द्विणुकादि खध कर्म नीपजै १ अने जीव पिण पोतानो स्वभाव मेली विभाव रूपै प्रणमै तिवारे कर्म रूप थईने पुद्गल कर्म वर्गणा ग्रहै २ ते जीव जिवारे सम्यक्त पामै तिवारे जीव अकर्म रूप थयो पुद्गलना कर्म पुद्गलप्रतया उदय प्रतिया रया, अने आत्म प्रतिया गया, ए भाव जाणवो

६३ हिवै नव तत्व छै ते चार प्रकारै छै एक नव तत्व नी गाथा ते च्यार प्रकारै छै, तेनो अर्थ ते तिरसठमो प्रश्न कहै छै.—एक नामै नव तत्व १ बीजो गुण तत्व २ त्रीजो स्वरूपै लक्षणै ३ चौथो प्रणाम रूप नव तत्व जाणवो ए च्यार प्रकारै नव तत्व छै तेहनो अर्थ—नामै नव तत्व (जीवाजीवा पुत्र पात्रा) इत्यादिक ए नाम थी जाणवा १ बीजो गुणै, ते चेतना गुणै जीव ते किम? असख्यात प्रदेशी अनत गुणमय ते शुद्ध चेतना गुण, तथा वरणादि गुणवत् अजीव में पाचे अजीव द्रव्य ना गुण जे रीते कहा छै तिम जाणवा तथा ऊर्ध्व गति इन्द्रिय सुख नें आपै ते पुण्य नो गुण, अधोगति सक्लेश रूप ते पाप नो गुण, शुभाशुभ कर्म आगमन रूप ते आश्रव नो गुण शुभाशुभ निरोध शुद्धोपयोगै रूपै सवर नो गुण, नोतन कर्म पूर्व कर्म सू मिलै ते बध गुण शुभाशुभ रूप कर्म सडन रूप ते निर्जरा गुण, आत्म प्रदेश थी कर्म घये गुण, इम बीजो भेद र तथा त्रीजे भेदै ए नव तत्व

आपआपणै स्वरूप जाणवा ३ तथा चोथे भेदै प्रणाम
 रूप नव तत्व जीव तत्वे जीव नें जीव रूपें
 प्रणमै ते जीव तत्व ४ इम नवे तत्वे जीव नें आपआपणै
 रूपै प्रणमै इम एक जीव तत्व इम एक नव तत्व
 नी गाथा तथा अजीव ते जीवे आहारादि हेतु प्रणमै
 छै पुण्य ते जीव नें इन्द्रिय सुख नी साता रूप प्रणमै
 ते च्यार प्रकारै जाणवी एणी रीते श्रावक ते जीवाजीव
 नें जाणै एतलें जीव जाण नें सवर, निर्जरा, मोक्ष उपादेय
 कीधा अने अजीव जाणुनं पुण्य पाप बध, आश्रवबध
 एतला हेय कीधा ए रीते श्रावक जीव अजीव ना जाण
 कहीइ तथा नव तत्व च्यार प्रमाण साते नयै ४ च्या
 निक्षेपै द्रव्य भाव भेदे भली रीतै जाण्या छै जेणै ते
 श्रावक स्वसमय परसमय ना जाण कहिये इति
 भाव

६४ हिचै कर्त्तापणै कर्म, अने क्रिया तिह
 ताई बध ते चौसठमो प्रश्न - ते कर्त्ताइ कर्म
 अने क्रियाइ बध ते किम ? जिहा जेहरो कर्त्ता, तिह

तेहवा द्रव्य कर्म अत्रै तथा जिहा जेहवा हेतु तिहां
 तेहवी क्रिया ते क्रियायै शुभअशुभ कर्म नो वधनीपजै
 तथाचोक्त ॥दोहा॥ कर्त्ता परिणामी दरब, करम रूप परि-
 णाम। किरिया (क्रिया) परजय की फिरनी, वस्तु एक त्रय
 नाम॥ इति समय सार ग्रथोक्त

हिवै जैन दर्शन ते उपयोगै तथा अक्रिय भावै
 छै जैन दर्शन श्रद्धान ते शुद्धोपयोगै छै ते शुद्ध
 उपयोग आत्म भावै छै, अक्रिय भावै छै अने बीजा
 योगै क्रिया धर्म छै इति भाव

६५ द्रव्य सवर भाव सवरनो पैसठमो प्रश्नः—
 तथा मन, वचन, काया ना योग प्रतिया जे कर्म छै
 ते, मुनी तप सयमै करी निर्जरै छई बीजा आवता
 निरोध करै छै तथा अशुद्ध उपयोग प्रतिया जे कर्म
 ते रत्नत्रय रूप आत्मिक धर्म प्रणमीनें सत्ता सोधें
 कर्म थी मुकाई छै ए भाव ते नाटै मुनी, योग सवर
 आराधता उदर्ये कर्म निवारें, तथा उपयोग सवर आरा-

घटा कर्म नी सत्ता सोधै, सकल कर्म यी मुकाई छइ
इम द्रव्य सपर नै भाव सपर नो स्वरूप जाणवो इति

६६ दर्शन तेथी जे देखवो ते शी रीते छै ते
छासठमो प्रश्न — दर्शनते जे देखवो कहै छै तेहनो
अर्थ यथा श्रुत लिखिये छे छद्मस्त सम्यक् दृष्टी प्रत्यक्ष
स्वरूप किम देखै ? इति प्रश्न तत्रोत्तर परोक्ष प्रत्यक्ष
अनुभव गोचर अनुमान प्रमाण प्रतीते प्रत्यक्ष देखै ते
किम ? पोताना परिणाम शुभाशुभ कर्म रूप राग द्वेष
द्वारै, बुद्धि पूर्वक ते परिणाम पोता ना देखै ते परि-
णाम जीव द्रव्य यी ऊठै छे श्या माटै ? ते जीव
परिणामी द्रव्य छै, तेहना सगी जीव नै बुद्धि पूर्वक
परिणाम दीठो एणें अनुमानै आत्मा दीठो किम् ?
यथा—सूर्य घादल माहि उग्यो छै, मेघ नी घटा घणी
छै, तोही पण प्रकाश सूर्य नो छै ते अनुमान दिवस
कहिये—सूर्य दीठो कहिये इण दृष्टाते तथा घूम्र दीठे
अग्नि दीठी कहिये इम जिन वचन नी प्रतीते, परोक्ष
प्रत्यक्ष आत्मा सम्यक् दृष्टी वीतराग वचन नी प्रतीते

यथार्थ देखै छै तेहनी शुचि प्रतीत नी श्रद्धा छै इम
 यथार्थ जाणे ते सम्यक् ज्ञान तथा जेहवो दीठो निज
 स्वरूप एकाते, जेहवो वस्तु रूपै जीव द्रव्य निकलक
 जाण्यो तेहवो राग द्वेष विकल्प रहित प्रणमै ते स्वरू-
 पाचरण चारित्र तथा गाथा— (पुइयाइ सुवसहिय
 पुन जिणेन दीठ । मोह कोहा विहिणो परिणामो अपण्णो
 धम्मो ॥ १ ॥) ए स्वरूप चौथै गुण स्थानै होई जेहनें
 आत्म बोध थासे तथा प्रभु मार्ग ना त्रपहसा ते
 मानसे एहवो हमें धारथ्यो छै तेहवु शास्त्र प्रमाणै लिख्यु
 छै ए माहि ए काई जिन वचन थी विरुद्ध होइ ते
 श्रीसघ साथे मिच्छामि दुक्कड

६७ हिवै निर्जरा नू स्वरूप किंचित् लिख्यते
 ते सण्ठमो प्रश्नः—ते निर्जरा कर्म नो साटन करै ते
 मध्ये मिश्यात्वी नें आश्रव बन्ध पूर्वक निर्जरा होई,
 सम्यक् दृष्टी नें सवर पूर्वक द्रव्य भाव निर्जरा होई.
 ज्ञान शक्ति वैराग्य बलै करी नें तिहां ज्ञान शक्ति तें
 शुद्ध स्वरूप नो अनुभव अने वैराग्य बलै करी नें

अशुद्धोपयोग नो मिटात्रिवो तिहा ज्ञानोपयोगै भव
 निर्जरा ते किम ? जिहा राग द्वेष मोह प्रणमित
 नु घटाडवो तिहा भाव निर्जरा अने द्रव्य निर्जरा ते
 कर्म वर्गणानो घटाडवो जे उदय आवै ते निर्जरे तेहवा
 पाछा बधाइ नहीं बध अल्प अने निर्जरा घणी इम
 ज्ञान शक्ति वैराग्य बले सम्यक् दृष्टी द्रव्य भाव निर्जरा
 करै छै भिध्यात्वी कर्म निर्जरा करै पण ते निर्जरा यी
 बधाई घणा मार्गानुसार नै पण कर्म निर्जरा पणै बाधै
 अल्प पण वस्तु थकी सत्ता निर्जरा ते सम्यक् दृष्टी नै
 होई ए भाव

६८ हिवै जीव नु गुण पर्यायनो अडसठमो प्रश्न —
 ते हिवै आत्मा ना असख्यात प्रदेश छै एकेक प्रदेशै
 अनती शक्ति नै अनतु ज्ञान छै तथा एकेक प्रदेशै
 अनत पर्याय छै इम द्रव्य गुण पर्याय नु थापवो जाणवो ते
 स्यादवाद मार्ग

६९ हिवै द्रव्य नी शक्ति गुण शक्ति किहा छै ते

गुणतरमो प्रश्न—ते हिवै द्रव्य नी शक्ति, गुण नो प्रकाश,पर्याय नो ठरण, एतला वस्तु लीधै आत्म द्रव्य छै ते सम्यक् दर्शन थी द्रव्य शक्ति प्रगटै सम्यक् ज्ञान गुण थी प्रकाश थाइ सम्यक् चारित्रै परिणाम ठरण गुण वधे ए भाव

७०. जीव नें उपयोग केतला छै ते सित्तरमो प्रश्न—ते जीव नें उपयोग वे—एक शुद्ध १ बीजो अशुद्ध २ ते मध्ये शुद्ध माहि कोई भेद नथी अशुद्धोपयोग ना वे भेद—एक शुभ १ बीजो अशुभ २ तिहा शुभोपयोगै वर्त्तै (ते जीव) पुण्य उपाजै, ते थी सुगति पामै. तथा अशुभोपयोगै वर्त्तै ते जीव दु.ख रूप कुगति पामै तथा शुद्धोपयोगै वर्त्ततो ते जीव सिद्ध गति पामै

७१ हिवै इकोत्तरमो प्रश्न—ते हिवै शुद्धोपयोग ते सम्यक्त पाम्या पछी होई अने अशुद्धोपयोग ना घर ना सरे,ससारी मिथ्या दृष्टी जीव नें होइ ते मध्ये मिथ्या दृष्टी न शुभ क्रिया होइ पिण, शुभोपयोगै नहीं शुभोपयोग तो शुद्ध ना घर नो छै ते अणइच्छक रूपै होई

अने मिथ्यात्वी नें शुभ क्रिया रूप शुभोपयोग होय शुभाचार रूपै होय पिण निदान * अभिलाप सहित होई, ते माटै अशुभ रूप कह्यो अने सम्यक दृष्टी नें शुद्धोपयोग ना घर नो जे शुभोपयोग ते अनिदान रूपे होई ते माटै सम्यक्दृष्टी नें शुद्ध उपयोग, ते शुभ मिश्रित होई ते माटै तरतम भेदे चौथा गुणस्थान थी माडी चारमा ताई मिश्रोपयोग होई तेरमा थी शुद्धोपयोगै पूर्ण पद होई मिथ्यात्वी नें अशुद्धोपयोग होई ए भाव

७२ हिवै बीजी रीते सम्यक दर्शन नो अर्थ कहे छै ते बोहत्तरमो प्रश्न — ते सम्यक दर्शन यथार्थ रूपे प्रतिभास दर्शन जे रीते देखै छै ते भेद लिखिये छै श्रीगीतराग देव ना वचन नी आकरी प्रतीत जिम कद मूल जीव अनता प्रतीत रूपे देखै छै तिम आत्मा अरूपी असख्यात प्रदेशी श्रीजिनप्रचन नी आकरी प्रतीत रूप देखै छै, तिम आत्मा एक तोए रीते कहीइ १

* नीपाणा रूपे, इच्छापणे

बीजो अनुमान प्रमाणै परोक्ष प्रत्यक्ष रूप देखै छै ते किम ? यथा (यत्र धूम तत्र वनही इति न्यायात्) जिम धुंवाडो देखी नै अनुमानै दीठो अग्नि स्वरूप, तिम ए आत्मा चेतना लक्षणो जीव चेतनाते श्यु कहीइ ? जे सुख दुख नै वेदैते वेदनी जीव नै प्रत्यक्ष छै ते माटे (लक्ष्य लक्षणे ज्ञायते) लक्षण जे लक्ष दीठो एक अश प्रत्यक्ष सर्व प्रत्यक्ष थयो ए रीते पिण सम्यक्त दृष्टी आत्म स्वरूप देखै ए बीजो भेद

७३, हित्रै त्रीजी रीते सम्यक् दर्शन कहै छै ते तिरयोत्तरमो प्रश्न — हित्रै देश विरती मुनी तरतम भेदे तथा अनुभवै ते प्रत्यक्ष जिम वस्तु विचारता ध्यान धरता मन विसराम पामै छै, रस स्वाद सुख ऊपजै छै, परिणाम ठरै छै, ते अनुभव प्रत्यक्ष, जिम साकरनी आस्वादता हजार मण साकर नो अनुभव थयो तिम जीव द्रव्य पोता नो सम्यक् दृष्टीये अनुभवे प्रत्यक्ष दीठे. ए तीजो भेद

७४ हित्रै सम्यक् दर्शन नो चौयो भेद स्वरूप

प्रत्यक्ष ते चुमोत्तरमो प्रश्न कहै छे — जिहा द्रव्य
गुण पर्याय एकीभूत अभेद रत्नत्रय रूप मुनि प्रणमै
जिहा, तिहा स्वरूप निज पद कद प्रत्यक्ष देखै इम ४
चार प्रकार सम्यक् दृष्टी आत्म स्वरूप देखै

“छउमच्छाण देसण पूर्ण नाण” इति सूत्रे उक्त
यथा छद्मस्त ने आगल थी देखवो पछै जाणवो, दर्शन ते
सामान्यावबोध छे १ आत्मार रूप भास याइ थोडो
काल रही पछै ज्ञान माहे भिल्ल ते ज्ञान विशेषाव-
बो पछै २ घणा काल रहै ते माटै, यथा गाथा “आत्म दर्शन
जेण कस्यो छै, तेणें मुध्यो भव भय कूपरे,” इम यसविजय
जी ये पण कह्यो छै यथा “प्रवचन अजण जो सदगुरु
करै, तो देखै परम निधान जिणेसर” एहवो लामानदजी
यें पिण कह्यो छै ए रीते सम्यक् दृष्टी आत्म स्वरूपें देखै
पण साक्षात् करामलकवत असख्यात प्रदेशी आत्मा
अरूपी ते केवल दर्शन थई देखै पण सम्यक् दृष्टी ते
प्रतीतें अनुमान अनुभवै स्वरूपै देखै । इम कहे ए जिन
वचननी प्रतीतें द्रव्यनु स्वरूप दीठो अनुमानै ते चेतन

लक्षण जे गुण प्रत्यक्ष दीठो, अनुभवे ते प्रणमन पर्याय रूपे दीठो, स्वरूपे ते अमेद रत्नत्रयात्मक निज पद कद दीठो ए रीते आत्म स्वरूप नो छद्मस्त सम्यक् दृष्टी नें देखवो कहिये छै अमारै चिंते तो शास्त्रोक्त रीते पोतानी बुद्धि माहे एहवो भासै छै ते केवली वदे ते सत्य. जे कोई प्राणी सम्यक्त दृष्टी नें आत्म दर्श नथी मानता, श्रद्धा भासन मानै छै ते ऊपर एटली चर्चा लिखी छै ए मांही जे कोई जिन वचन विरुद्ध स्वमत कल्पित होइ तो मिच्छामि दुक्कड

७५ जोग ३ तीन ते साधु न छै, रत्नत्रय रूपे प्रणमै छै ते किम ? ते पिच्योत्तरमो प्रश्न कहे छै — मनयोग तो दर्शन श्रद्धान रूपे छै, जे वस्तु ना निर्धार थी चलै नही १ तथा वचनयोग तो ज्ञान भणवो, यथार्थ उपदेश सत्य प्ररूपणा ज्ञान रूपे प्रणमै छै २. तथा काययोग तो पट् काय नी दया रूपे प्रवर्त्ते छै ३. (जय चरे जय चिठे) इत्यादि. इम मुनि ना ३ तीन योग ते रत्न त्रय रूप प्रणम्या छै

तथा ए रत्नत्रय धर्म थी जन्म जरा मरण ना भय टाले छै, ते किम ? सम्यक् दर्शन थी घणा जन्म मिटाव्या, सम्यक् ज्ञान थी जरा दु ख जे वेदना ते मिटारी तथा सम्यक् चारित्र गुणै मरण भय टालै. इम ३ तीन गुणै जन्म जरा मरण भय मिटै ए भाव

७६ हिवै प्रमाण ४ चार ते जीव नें किम भोग पडे ते द्विहोत्तरमो प्रश्न — तथा ते प्रमाण च्यार जे रीते आत्मा नें भोग पडे छै तेहनी विगत लिखिये छै प्रथम तो आगम प्रमाणै पट् द्रव्य पट काय ना स्वरूप जे वीतरागै भाष्या वचन प्रमाणै तहकीक करी मानवा, इहा सदेह तथा युक्तायुक्त न करवी इम जीवाजीव ना स्वरूप आगम प्रमाणै प्रमाण तहत करी मानवा ते मानता आत्मानें प्रतीते सम्यक् धर्म नी पुष्टि थाई १ बीजु अनुमान प्रमाणै लक्ष्य लक्षणै निरधार थाई यथा धूम दीठो अग्नि नो निर्धार थयो, तिम चेतना लक्षण अनुमानै करी लक्ष्य जो आत्मा तेह नो निर्धार थयो इहा आत्मा न वस्तुगते अनुभवनी वस्तु ना गुण गुणी

नो धरो प्रत्यक्ष थाइ २. हिंदै ईश्वरं ह्यस्य प्रमाण,
 तिहा वस्तुना अश धर्मने पण्डितं प्रदीपं प्रदीपं प्रदीपं,
 जिम आज नं काले मस्यक्त वास्यं दे प्रमाणं दे प्रमाणं
 पास्यो, यथोक्त समुद्रवत, इम अंगान् प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं
 मानता आत्मानं विनय गुणनी पूर्णत्वं २. प्रमाणं
 प्रत्यक्ष प्रमाण. जेहवो जिनेश्वरं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं
 पाप ना फल प्रत्यक्ष देखिये दे प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं
 मानता आत्मानं अत्र दे प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं
 विषय कपाय प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं
 आत्मानं गुरु नं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं

पण ३ तीन प्रकार नी दंमना आपै छै यथार्थ वाद १ विधि वाद २ चरितानुवाद ३ ए तीन प्रकार नी देसना नें मध्ये यथार्थ वाद देसना जीव अजीव ना स्वरूप धारया, प्रणम्या धकी वस्तु तत्वनो प्रकाश थाइ तिणै भाव कर्म रोग मिटै १ तथा विधि वाद देमना महा वृत देस विरत ते रूप क्रिया शुभोपयोगै आचरतो द्रव्य कर्म रोग मिटै, कर्म नो काट उतरै २ तथा चरितानुवाद देसना थी शरीर सबधी काम भोग विषय कषाय थी निरर्ती जिम जबू स्वामी प्रमुख महा मुनि एहूना चरित्र भवै वैराग्य ना गुण प्रगटै, तेह थी नोकर्म नो रोग मिटै ३ इम तीन प्रकारनी देसना ते तीन प्रकार ना कर्म रोग मिटाववाना कारण ए भाव

७८ हिनै दर्शन, ज्ञान, चारित्र, वीर्य गुण ते कुण हेतु पमाडे ते अठ्योत्तरमो प्रश्न कहै छै — धर्म साभल्यो अभ्यास उद्यम एटली जेहनी रुचि होई ते सम्यक् दर्शन गुण नें पमाडे तथा तत्वातत्त्वगत्रेपणा बुद्धि होय ते सम्यक् ज्ञान गुण नें पमाडै तथा पाच

इन्द्रिय ना विषय, ४ च्यार कपाय, पाच प्रमाद, तेहना त्याग बुद्धि होइ ते चारित्र गुण नें पमाडे तथा वस्तु गर्ते अनुभव लग्न तल्लय(तल्लीन)होय ते वीर्य गुण नें पमाडे इम गुण ४ च्यार ना हेतु धारवा तथा एहीज गुण शरीर मध्ये जिहायै मुख्य ताई होय छै ते स्थानिक कहिये दर्शन ते चक्षु, ज्ञान ते हृदय, चारित्र ते चरणे, तथा उछाह इच्छा वीर्य पाद होइ एम ४ च्यार गुण स्थानिक ममज्ञ लेजो ए भाव

७९ हित्रै हिंसा ना केतला भेद छै ते गुण्या-सीमो प्रश्न —ते हिंसा केतली प्रकार नी छै तेहना भेद लिखिये छै. स्वरूप हिंसा १ अनुबध हिंसा २ द्रव्य हिंसा ३ भाव हिंसा ४ बाह्य हिंसा ५ परणाम हिंसा ६ जोग हिंसा ७ इत्यादिक घणा भेद छै ते मध्ये काईक नो अर्थ लिखिये छै स्वरूप हिंसा ते साधु नें, तथा नदी उतरै छै पण मुख्य वर्त्ता हिंसाना परणाम नथी तथा सम्यक् दृष्टी नें देवपूजा गुरुवदणा साधुनें आहार आपै तिहा इत्यादि कार्य स्वरूप हिंसासारखी दीसै छै,

पण ३तीन प्रकार नी दमना आपै छै यथार्थ वाद १ विधि वाद २ चरितानुवाद ३ ए तीन प्रकार नी देसना नें मध्ये यथार्थ वाद देसना जीव अजीव नां स्वरूप धारया, प्रणम्या थकी वस्तु तत्त्वनो प्रकारा थाइ तिणै भाव कर्म रोग मिटै १ तथा विधि वाद देमना महा वृत्त देस विरत ते रूप क्रिया शुभोपयोगी आचरतो द्रव्य कर्म रोग मिटै, कर्म नो काट उतरै २ तथा चरितानुवाद देसना थी शरीर सबधी काम भोग त्रिपय कषाय थी निरती जिम जन्म स्वामी प्रमुख महा मुनि एहूना चरित्र भवै वैराग्य ना गुण प्रगटै, तेह थी नो कर्म नो रोग मिटै ३ इम तीन प्रकारनी देसना ते तीन प्रकार ना कर्म रोग मिटावना कारण ए भाव

७८ हिवै दर्शन, ज्ञान, चारित्र, वीर्य गुण ते कुण हेतु पमाडे ते अठ्योत्तरमो प्रश्न कहै छै — धर्म सामलपो अभ्यास उद्यम एटली जेहनी रुचि होई ते सम्यक् दर्शन गुण नें पमाडे तथा तत्वातत्प्रगवेपणा बुद्धि होय ते सम्यक् ज्ञान गुण नें पमाडै तथा पाच

इन्द्रिय ना विषय, ४ च्यार कषाय, पाच प्रमाद, तेहना त्याग बुद्धि होइ ते चारित्र गुण नें पमाडे तथा वस्तु गतें अनुभव लग्न तल्लय(तल्लीन)होय ते वीर्य गुण नें पमाडे इम गुण ४ च्यार ना हेतु धारवा तथा एहीज गुण शरीर मध्ये जिहायै मुख्य ताई होय छै ते स्थानिक कहिये दर्शन ते चक्षु, ज्ञान ते हृदय, चारित्र ते चरणे, तथा उच्छाह इच्छा वीर्य पाद होइ एम ४ च्यार गुण स्थानिक ममज्ञ लेजो ए भाव

७९ हिंसा हिंसा ना केतला भेद छै ते गुण्या-सीमो प्रश्न—ते हिंसा केतली प्रकार नी छै तेहना भेद लिखिये छै. स्वरूप हिंसा १ अनुबध हिंसा २ द्रव्य हिंसा ३ भाव हिंसा ४ बाह्य हिंसा ५ परणाम हिंसा ६ जोग हिंसा ७ इत्यादिक घणा भेद छै ते मध्ये काईक नो अर्थ लिखिये छै स्वरूप हिंसा ते साधु नें, तथा नदी उतरै छै पण मुख्य वर्त्ता हिंसाना परणाम नथी तथा सम्यक् दृष्टी नें देवपूजा गुरुप्रदणा साधुनें आहार आपै तिहा इत्यादि कार्य स्वरूप हिंसासारखी दीसै छै,

पण अल्प वध रूप छै, ते माटे स्वरूप हिंसा कहिये १.
 बीजी अनुबध हिंसा ते राग द्वेष सहित जे प्रणमीने
 जे कोई मदबुद्धि प्राणी छ कायना जीव नें हणै तेहवा
 तरतम अध्यवसाय महा कर्म ना बध करै तेहना
 अशुभ विपाकै उदय आवै ते अनुबध हिंसा कहीइ २
 वली एह ना भेद मध्ये द्रव्य हिंसा आवै तेह नो
 किंचित् अर्थ लिखिये छै द्रव्य हिंसा अणा उपयोगी ३
 भाव हिंसा तीव्र प्रणामै होई ४ बाह्यहिंसा ५ तथा योग
 हिंसा ६ तथा एटली स्वरूप हिंसा माहि भिलै तथा
 प्रणाम हिंसा ७ ते भाव हिंसा माहि भिलै इत्यादिक
 समस्त लीजो तथा एकही जीव नें हिंसा अल्प पण
 फल कालै दु ख विशेष पामे तेणै करी श्रद्धान विपरीत
 पणे दु ख घणो पामशे, जमाली नी परें तथा एक जीव ते
 हिंसा घणी करै छै, पण फल कालै अल्प दु ख पामै ते
 शोणै, दुष्टाध्यवसाय नें अभावै उदय आव्या ते नि फल
 करै दृढ प्रहारनी परै इत्यादि चौभगीओ अहिंसा
 अष्टक ग्रय मध्ये विस्तारै कह्यु ते तथा (एकस्याल्प-

हिंसा ददाति काले तथा फलमनल्प । अन्यस्य महा
हिंसा स्वल्प फला भवति परिपाके ॥ १ ॥) इत्यादि ८
गांयो छै तिहा थी जोज्यो इति. श्री हरिभद्रसूरी कृत
हिंसाष्टक मध्ये छै

८०. हिंसा शास्त्र मध्ये ३ तीन योग कह्या छै ते
अस्सीमो प्रश्न—इच्छा योग १ शास्त्र योग २ सामर्थ्य योग
३ ते मध्ये इच्छा योग ते दस प्रकारे यती धर्म कह्या ते
आदरवानी इच्छा १ शास्त्रयोग ते शास्त्रे जे, हेय, जेय,
उपादेय, तीन प्रकार कह्या छै ते मध्ये कहु छै—जे
उपादेय वस्तु कही ते आदरै ते वीजो योग २ तिवार
पछी वीजो सामर्थ्य योग ते कोई आत्मा ज्ञाने वैराग्य
बल नी समर्थ ताइ करीने अनन्त काल भोगववा योग
जे कर्म ते थोडा काल मध्ये क्षय करै . यथा गज
सुकुमाल नी परै ३ योग नो व्याख्यान योगदृष्टी समुच्चय
ग्रन्थ मध्ये कहु छै ते थी जाणवो इति

८१ हिंसा द्रव्य, गुण, पर्याय जे विकारै विगड्या

छै ते कहै छै ते इक्यासीमो प्रश्न —द्रव्य विकार
थयो ते कर्म प्रकृति आवरणै १ गुण विकार ते राग द्वेष
विभावनाई २ पर्याय विकार थयो ते मनोयोग कल्पनाइ ३
ए भाव

८२ हिं वै मति श्रुत ज्ञानी तथा अज्ञानी जिन वाणी
सामले ते शी रीते प्रणमै ते वियासीमो प्रश्न —मति
अज्ञानी जे जिनवाणी सामलै ते विकल्प रूपे तथा
ढामाडोलपणै प्रणमै तथा मति ज्ञानी जे जिनवाणी
सामलै ते निर्भिकल्पणै तथा निरधारता रूपै प्रणमै
तथा श्रुत अज्ञानी जे जिनवाणी सामलै ते विषय रूप
तथा नास्तिक रूप प्रणमै तथा श्रुत ज्ञानी जे जिनवाणी
सामलै ते वैराग्य रूपै तथा आस्तिकपणे प्रणमे एटले
सम्यक् दृष्टी ते जिनवाणी सामलवाना अधिकारी
जाणया ए भाव

८३ हिं वै जीव कर्म सु किम मित्यो छै ? ते
त्रियासीमो प्रश्न —ते द्रव्यार्थिक नयै आत्मा कर्म

सु सुवडी ऊपरे माटीना पड होई तिम तुवी मृत्तिका
नी परे मिल्यो छै एह ना प्रदेश माहि कोई कर्म-
वर्गणा एकी भाव नयी थई तथा पर्यायार्थिक नये
आत्मा कर्म सु चिरनीर नि परै एकरूपे लौलीमूत
य्यो तिहा चतुर्गति भ्रमण करै छै ए भाव

८४ हिवै पाच इन्द्रिय नी सोल सज्ञा होई ते चौरा-
सीमो प्रश्न लिखिये छै — आहार संज्ञा १ भय संज्ञा
२ मैथुन संज्ञा ३ परिग्रह संज्ञा ४ क्रोध संज्ञा ५ मान
संज्ञा ६ माया संज्ञा ७ लोभ संज्ञा ८ सुख संज्ञा ९ दुःख
संज्ञा १० मोह संज्ञा ११ वीत गच्छा संज्ञा १२ शोक
संज्ञा १३ धर्म संज्ञा १४ ओष संज्ञा १५ लोक संज्ञा
१६ ए माहिली पहली १० संज्ञा ते एकेंद्री नें, बीजी
संज्ञा त्रैन्द्रियादिक नें १५ पदर होइ. अने १६ संज्ञा
पंचेंद्री सम्यक् दृष्टी नें होइ ए भाव.

८५ हिवै सोले संज्ञा जीव केह नें होइ ते
पिचासीमो प्रश्न — केतलाइ दोष जेह नें मुख्यताई

होई ते कहै छै क्रोध ते रजपूत नें घणो होइ मामते
 क्षत्री नें घणो माया ते गणिका तथा वणिक नें घणो लोभ
 ते ब्राह्मण नें घणो राग ते हितु मित्र नें घणो खे
 तथा द्वेष ते शोकी नें घणो होइ अने शोक ते
 जुअरी नें घणो होइ चिन्ता ते चोर नी माता नें
 घणी होय भय ते कायर नें घणो होय इत्यादिव
 बोल घणा छै ते विशेषाविशेष जाणवा इति

८६ हिये धर्म कर्म किम होइ ते कहै छै ।
 सित्यासीमो प्रश्न.—धर्म ते आत्म भावै शुद्धोपयो
 होइ अने कर्म ते अशुद्धोपयोगै तथा शुभाशुभ भा
 भवितन्यताइ थाइ, कर्म ते करणीयइ थाइ जेहवा
 क्रिया तेहवा कर्म, अने धर्म ते अक्रिय रूपें होइ
 जेहवो शुद्धोपयोगै वृद्धवत होइ तेहवो धर्म वृद्धवत
 होइ ए भाव

८७ हिये श्री जिन ना ४ च्यार निक्षेपा तेहने
 स्थानक शरीर माहि किहा छै ते सित्यासीमो प्रश्न ते

रहै है.—नाम जिन नो थानक है ते जिह्वाग्रे है।
 अपना जिन नो थानक चक्षु माहि है द्रव्य जिन नो
 थानक जिन वचन थी, एटले एहनो थानक मनोयोग
 है जे माटे श्रद्धान ते मनोयोग श्रद्धान मव्ये है भाव
 जेन ना थानक हृदय माहि होय ए निक्षेपा ना
 थानक जाणवा।

८८ हिचै पाचेंद्री शोणे भरी है ते इव्यासीमो
 प्रश्न — द्रव्येंद्री आकार ते मल मूत्र रक्त मासादि
 अशुभ पुटले भरी है अने भाचेंद्री ते राग द्वेष विकार
 भरी है

८९ हिचै ४ च्यार सज्ञानो नव्यासीमो प्रश्न —
 ते ४ च्यार सज्ञानो परमार्थ कहै है हिचै तिहा आहार
 सज्ञाइ तो जीव अनादि नो खातोज रहै है, कदापि
 वृत्ति नयी पाम्यो १ अने भय मज्ञा ए ४ च्यारे गति
 माहि धूजतोज रहै है २ अनं मैथुन सज्ञाइ पाचेंद्री
 ना विषयाभिलाषी थको रहै है ३ परिग्रह मज्ञाइ एकठो

करै छै, तिनै करि जीव कपाय छै ४ ए ४ च्यार संज्ञा मध्ये एक पहली वेदनी कर्म ना घर माहेनी छै अने इतीन संज्ञा पाछली ते मोहनी कर्म माहेली छै तथा आहार संज्ञाइ शरीर परिरै हिंसा इम आहार संज्ञाइ हिंसा ना कर्म घणा बधाइ तेहथी असात वेदनी पुरपामै छै तथा भय संज्ञाइ कल्पना ना कर्म नो योगै व्यक्ताव्यक्तरूप कर्म बधाइ छै, तथा मैथुन संज्ञाइ पचेद्री ना विषय ना कर्म घणा, तथा परिग्रह संज्ञाइ कपाय ना कर्म तीव्र बधाइ छै इम ४ च्यार तीव्र भागै जे जीव नै प्रकर्त्त ते अधोगति जाइ—ससार मध्ये जन्म मरण घणा करै ए भाग

तथा वली ए ४ च्यार संज्ञा बीजा प्रकारे कहै छै आहार शरीर थी हिंसा ते हिंसाइ, दु ख ते दु खै आरत ध्यान ते आरत ध्यानै अनन्ता ससार बधै एटले आहार संज्ञा माहि अनतो ससार छै तथा भय संज्ञाइ कल्पना घणी बधै कल्पनाइ करी जीव नै राग द्वेष परणाति बधै तेणै करी आठ कर्म निगड बाधै तेथी ४

च्यार गति मध्ये गमनागमन करै तथा मैथुन सज्ञाइ
 विषय सेवै ते पोताना रतत्रय गुणने आवरे, ते जीव
 आत्मा कर्मने, ए ४ च्यार गति माहे असाता पामै तथा
 परिग्रह सज्ञाइ करी कपाय नो कर्म घणो बाधै, तेणे करी
 ससारनी प्राप्ति घणी थाइ एणै रीते ४ च्यार सज्ञाइ
 करी जीव ससार माहे दुःख पामै छै ए ४ च्यार सज्ञा
 मध्ये साधूजीइ बे २ सज्ञा तो छठै सातमै गुण स्थाने
 घटाडी तथा त्रीजी सज्ञा तो नवमै गुण स्थाने गई
 अने चौथी सज्ञा दसमै गुण स्थाने गई ए ४ च्यार
 सज्ञानो भावार्थ जाणवो. अनादि निगोद थी जे ऊचो
 व्यवहार रासी तथा पर्चेद्रीपणा सुधी पामै छै ते ए ४
 च्यार सज्ञा नी मदताई तथा ए ४ च्यार नी तीव्रताई
 पाछो अघोगाति जाई छै. तथा जीवने ज्ञान चारित्र वे
 गुण छै, तथा दर्शन गुण ते ज्ञान गुण मध्ये अतर्भूत
 थाइ छै सामान्यावबोध माटे ते मध्ये ज्ञान गुणने
 मते छै अने चारित्र गुण उपादान रूप छै ते माटे ए
 उपादान गुण नु ४ च्यार मंज्ञानी मदताइ जीव ऊचो

माहि होइ इम ८४ चौरासी लाख पूर्व नो आउखो
 ते मध्ये ८३ तिरयासी तीर्थकर थाइ इम ते ८३ नें
 बीस गुणा करे तिवारे १६६० एरु हजार छ सौ साठ
 थाइ बीस बधता माहि भेलाइ तिवार १६८० एक
 हजार छअसो अस्मी तीर्थकर उत्कृष्टे कालै १७० एक
 सो सीतर तीर्थकर वर्चता केवलपरौ विचरै छै तिवारे
 एकेक ना अवतार माहे ८३ तीरयासी तीर्थकर ऊपने
 ते १६० एरुसौ साठ गुणा कीजे तिवारें १३३४०
 तेरा हजार तीन सो चालीस थाइ अने १७० एकसो
 सीतर वर्चता ते माहि भेलाइ तिवारे १३५१० तेरा
 हजार पानसो दस एतला होइ एतलु आच गच्छ
 नायके कह्यु छै पिण अक्षर दीठे प्रमाण दीठो
 करिये ते कहै छै जे विशेषविशेषके कह्यु छै, जिम
 साभल्यु तिम लिख्यु छै, पछें तो जिम केवल ज्ञानी
 प्रकाश्यो ते सत्य — (सत्तरिसय सुकोसिज नय ।
 विस विहरमान जिना । समय खित्ते दसवा । जम्पई
 बीसदस गवा ॥ १ ॥

॥ दूहा ॥

विवरो ए गाथा तणो, केवलियो सभाल ।
 सित्तरसौ जिनवर होई, कहै केई काल ॥ १ ॥
 चढतो काल ओसरपेणी, वारे आठम जिन ।
 एकसो सित्तर १७० जिनवर हुवै, इण परिसुणो सजना २ ।
 पाच विदेह मेलवी, साठसौ विजे उपन ।
 भरतइरवत दस मिलै, सित्तर सौ होइ जिन ॥ ३ ॥
 पडते काले श्रवसर्पणी, सोलम जिन लगै हुत ।
 भरता रेवत जिन हुवे, साठिसो १६० विदेहे लहता ॥ ४ ॥
 केवली केई वाल परण्या, वयणे एहिंसोय ।
 आठमा जिन थी सोलमा लगै, विरह विदेहे न होय ॥ ५ ॥
 सोलमा जिन साथे सहु, मुगति जाइ जिन भाण ।
 विरहिसमै सहु क्षेत्रे में, उरह एहा पिछाण ॥ ६ ॥
 सत्तरमा जिन होय भरह, पच ऐरवत मिलनै दस ।
 समये क्षेत्रे दस कथा, लेहवा एह अवस्त ॥ ७ ॥
 सत्तरमा जिन अठारस्ता विचै, जन्मे वीस विदेह ।

बीस एकबीसमा विचें, सयम केवल देह ॥ ८ ॥
 भरता रेवत दस मिलै, मध्यम सपद तीस ।
 चौबीसमा जिन शिव गया, विदेह विचरै बीस ॥ ९ ॥
 आगत चौबीसे सातमा, आठमा विचें निरवाण ।
 विरह पडै सहु क्षेत्र में, अठम न होइ जिन भाण ॥ १० ॥
 आठमाथी नथी बली, एम सितरकादिक थाइ ।
 परपराई पूर्व जिम कही, लेवी एम सदाय ॥ ११ ॥
 दस बीस एकरा समै, जिनवर जनम कहात ।
 भरतइरायत दिन हुयै, पाच विदेहे रात ॥ १२ ॥
 आगमै इम भाखियो, चवण जन्म अध रात ।
 भरतेरावत जनिं होय, दिव विदेह विख्यात ॥ १३ ॥
 त्रीस सिंहासन सहू, दोइ मेरु पाचे लाधे ।
 दो दो पूरव पश्चिमे, एक दक्षिण उत्तर साधे ॥ १४ ॥
 ब्यार जन्मै विदेह प्रतें, पाच मिली नें बीस ।
 भरतेरावते दस होय, एक समय जन्म लहीस ॥ १५ ॥
 बीस ३ जन्में विदेहे सही, साठसो विजये पुराय ।
 लाख चोरासी पूर्वायुत, सधनुष पाचसै काय ॥ १६ ॥

चढते दोय पडते तीनं, आरै धर्म कहाय ।
 भरतैरावत ते सही, विदेही धरम सदाय ॥ १७ ॥
 परिवर्तिना काल भरहेर, वय लेखो इहांधी लेह ।
 चोथो नित्य विदेह में, आणद रुचि भणेह ॥ १८ ॥
 जिनवर ए नित्य समरता, लहिये सपद कोडि ।
 पडित पुण्य रुचि गुरु, सीस कहै कर जोडि ॥ १९ ॥

१४. हिं वै चक्रवर्ति नें १४ चउदा रत्न किहा
 ऊपजे ते चोराणुमो प्रश्न—चक्र १ असि २ छत्र ३
 अने डड ४ ए चार-रत्न आयुध शाला माहे ऊपजै-
 तथा मणि रत्न १ कागणी रत्न २ चर्म रत्न ३ निधि
 सिरि ग्रहे नीपजै. एव ७ सात, पुरोहित रत्न १
 वार्द्धिक रत्न २ सेनापति रत्न ३ गाथापति रत्न ४
 ए ४ च्यार रत्न पोताना नगरै उपजै. एव तिवार
 पछी स्त्री रत्न राज कुले नीपजै. गज रत्न १ अने
 अस्त्र रत्न २ वैताढ्य पर्वत ऊपर उपजै ए १४ चउदा
 रत्न नी उत्पत्ति कही -

६५ हिं वै नव निधान किहा प्रगटे ते पिचाणुमो

प्रश्न कहे छै —ते मध्ये गी शी वस्तुछै? गगा नदीने तट नव निगान नी नव पेटी प्रगटै, ते ते पेटी केवडी? १० द्वाग जोयण आथाम लाबी, नव जोयण पोहली पिस्तारै, अर्द्ध योजन नी ऊची त जोयण आत्मागुल प्रमाण, ए नव निधि मजुस नै आकारै छै वैडूर्य मणि रत्नमय कमाड (किंदाड-रुपाट) छै, तेहना नाम वस्तु कहिये छै— नै सर्पिक पहलू ते मध्ये स्कधावार नगर निवेश ए त्रिध पहिले १ पाडुक नामै बीजु तिहा धान बीज नी सर्व सपति २ किंगल नामै श्रीजु ते मध्ये नर नारी, हय गय नां आभरण त्रिध छै ३ चोयु महा पद्य नामै, ते मध्ये १४ चउदे जाति ना रत्न छै ४ पाचमो महि नामै विविध प्रकार ना वस्तु ते मध्ये छै ५ छठु काल नामै तेमा त्रिकाल ज्ञान ना पुस्तक छै ६ सातमुं महाकाल नामै ते मध्ये सोनो रुपो मणि लोह सर्व द्रव्य अखूट छै ७ आठमो माणवक नामै, ते मध्ये राज-नीति, युद्ध नीति, सर्व हथियाग युद्ध नी नीति छै ८.

नोमो सुख नामै, ते मध्ये चतुर्विध तुर्याना अगना नारि नाटक नी विधि सगीत ना ग्रन्थ छै ९ एकेक निधाने एक हजार देवता अधिष्ठायक छै. व्यतरीक देवता छै, तेह नो आयु एक पल्योपम नु, ए भाव.

९६ हिवै प्रभु जिहा पारणो करै तिहा केतली वृष्टि होइ ते छियाणमो प्रश्न—ते ऊपर गाथा—
“अद्धे तेरस कोडि उद्धोसच्छ होइ वसुधारा । अद्ध तेरप लपा जह नेया होइ वसुधारा ”

९७ हिवै १४ चउद विद्या मोटी छै ते सत्याण मो प्रश्न—ते विद्याना नाम लिखिये छै प्रथम नभोगामिनी १ पर शरीर प्रवेशनी २ रूप परिवर्तनी ३ स्तभनी ४ मोहनी ५. स्वर्ण सिद्धि ६ रजत सिद्धि ७ रस सिद्धि ८ वध मोक्षणी ९ शत्रु परायणी १० वश्य करणी ११. भूतादि दमनी १२ मर्व सपत्करी १३ शिवपदप्रापणी १४. ए १४ चउद मोटी विद्या जाणवी.

९८ हिवै पच प्रस्थानै आत्मा ते पच प्रस्थान

ते किहा ते अठ्याणमो प्रश्न.—अभय १ अकरण २
 अहर्मेद्र ३ कल्प ४ तुल्य ५, ए अवस्था साधना
 साधान छै अभयते अरिहत नो ध्यान १ अकरण
 ते सिद्ध नो ध्यान २ अहर्मेद्र ते आचार्य नो ध्यान ३
 तुल्य ते उपाध्याय नो ध्यान ४ कल्प ते साधु नो
 ध्यान ५ ए समान अवस्थाइ ते पच प्रस्थान मई
 आचार्य छैइ ए भाव, अर्थ ध्यानमाला ग्रन्थे विस्तारै
 कह्यु छै

१९ हिवै त्रीजु गुणस्थान चढता पडता कि
 आरै ते नन्याणमो प्रश्न —तत्रोत्तर—चढता पडता हे
 प्रकारै आरै ते किम ? अनादि मिथ्यात्वी होइ तेह नै
 चढता नारै ते प्रथम पहलाथी उपशम सम्यक्त पामै
 गठीभेद करै ते चोथे आरै ते माटे अनादि मिथ्यात्वी
 ते पहिलाथी चोथे आरै ते माटे मिश्र गुण स्थाने
 न आरै तथा सादि मिथ्यात्वी सम्यक्त पामी नै पड्यो
 होइ ते पाछे क्षयोपशम सम्यक्त पामै, ते तीजु गुण
 स्थानकै आरै तेह नै पडताइ पण आरै ए भाव इति

१००. हिंसा समोहिया असमोहिया मरण तेह नो
 अर्थ सूत्रे छै ते एकसोमो प्रश्न लिखिये छै—समोहिया
 ते श्यु? जे इहा थी जीव निकलै, सम कालै सर्वे प्रदेश
 लेइने पर भव जाइ, जिम दडो छूटो नाखै तो दडाना
 प्रदेश साथै जाय, ते समोहिया मृत्यु कहिये १. अने
 असमोहि मरणै तो जीव ना प्रदेश श्रेणी बघ जाइ
 आगल थी मोकलै अथवा जीव निकल्या पछी पल-
 वाडै जाइ मिलै श्रेणीगत जाइ पडाइ ना दोड नी
 परै. ए रीते सूत्र छै ए भाग

१०१ जीव ने उपयोग गुण ते सम्यक्त, अने
 ठरण गुण ते चारित्र ते आचारवा ने कुण बलवत्तर छै
 ते एकसौपेलो प्रश्न—जेहवो आत्मा नो उपयोग वस्तु
 आत्म जीवन गुण आवरवाने मिथ्यात्व बलवत्तर छै.
 तिम एह नी प्रणमन सुख निवारवाने अविरत्यादि हेतु
 बलवत्तर छै ते माटे मिथ्यात्व ने उदै सम्यक्त गुण न
 पामै अत्रिरत्त ने उदै चारित्र गुण स्थान रूप न पामै.
 ते माटे एह नी प्रणमन उपयोगै एकाग्र रूप प्रणमै.

तिवारे ए सुख रूप ज्ञान चारित्र मई सपूर्ण धर्म पाम्या
ए भाव

१०२ हिवै ३ तीन प्रकार ना कर्म किर्म छै ते
एकसौ बीजु प्रश्न —ते कर्म नी वर्गणा छै ते। द्रव्य
कर्म कहिये अने ते वर्गणा जिवारे पाच शरीर
पणै प्रणमै तिवारे तेह नै नोकर्म कहिये अशुद्धोप
योग ना राग द्वेष मोह परिणाम ते भाव कर्म ए भाव

१०३ हिवै एक पद ना श्लोक नी सख्या केतली
ते एकसौ बीजु प्रश्न —द्वादश्वैव कोट्यो लक्षा एयसीति
अधिकानि श्वैव । पचाशदष्टोच सहस्रस ॥ अष्टैव ८
सह सचुलसिहिं ८४सय १०० छक्क साढा ५० एक बीस
पयग धार ॥ एतली एक पदना श्लोक नी सख्या
जाणवी ए भाव

१०४ हिवै १४ चउद पूर्व ना जेतला पद छै
ते जुदार लिखिये छै ते एकसौ चोथु प्रश्न —तिहा
प्रथम उत्पाद पूर्व ना ११ कोडि पद छै १ बीजु

आग्रायणीयतेहना पूर्व ९६ छनु लाख पद है २ तीजो
 वीर्यापवाद पूर्व, तेहना ७० लाख पद है ३ चोधु अस्ति-
 नास्ति प्रवाद पूर्व ना ६० लाख पद है ४. पाचमु
 ज्ञान प्रवाद पूर्व, तेह ना ३६ कोडि पद है ५. छठो
 सत्य प्रवाद पूर्व, तेह ना १ एक कोडि ६० साठ लाख
 पद है ६ सातमो आत्म प्रवाद पूर्व, ३६ छत्रीस कोडि पद
 है ७ आठमो कर्म प्रवाद पूर्व, तेह ना एक कोडि ८
 आठ लाख पद है ८ नवमो प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व,
 तेह ना ८४ चौरासी लाख पद है ९ दसमो विद्या-
 प्रवाद पूर्व, तेहना ११ ग्यारे कोडि १५ पन्देरा हजार
 पद है १० इग्यारमो कल्याण प्रवाद पूर्व, तेहना ६२
 बासठ कोडि पद है ११ धारमो प्राणवायु पूर्व, १ एक
 कोडि ५६ छपने लाख पद नो है १२ तेरमो क्रियो
 निशाली पूर्व, ९ नव कोडि पद नो है १३ चउदमो
 लोकाविदुसार पूर्व, तेहना १३ तेरा कोडि ५० पचास
 लाख पद है १४ एक पद ना ५१८८८४० अक्षर। ८।
 एक पद नी संख्या जाणवी अनुयोग द्वारवर्त्तौ संपूर्ण

१०५ हिवै बीजा गुण स्थानै (सास्वादन) जिन नाम कर्म सत्ताइ किम न होय ते एकसौ पाचमो प्रश्न छै — ते कर्म ग्रथ नी अवचूरी मध्ये कह्यु छै यथा (सत्ते अडयालसर्य जाव उवसमुत्रि जिणु वीयातइय) अस्यार्थ । सत्ताइ कर्म नी प्रकृति १४८, एकसौ अडतालीस मिथ्यात्व गुणस्थान थी माडी यावत् इग्यार मा सुधी होइ पण बीजै त्रीजे गुण स्थाने जिन नाम कर्म विना १४७ एकसौ सैंतालीस प्रकृति सत्ताइ होय ते किम? तेंह ना अभिप्राय कहै छै चोथे गुण स्थाने क्षयोपशम सम्यक्त छै ते जिन नाम कर्म बाधै ते बाधी नें पाछो पडे समकित वमै तो ते पहिले गुण स्थानकै आवै, पण बीजे त्रीजै गुण स्थानै नावै ते माटै मिथ्यात्व गुण स्थाने जिहा सुधी उपशम समकित होइ, तिहां सुधी जिन नाम न बाधै स्तोक काल माटै क्षयोपशम तथा क्षायक समकित छै ते बाधै ते पाछौ वमै ते क्षयोपशम समकित पडतो जिन नाम कर्म बध वालो पहिले गुण स्थाने आवै, पण बीजै तीजै नावै तिहा १४८ श्रेकसो

अडतालीस प्रकृति सत्ताई होय तथा उपशम सम-
 कित वालो जिन नाम कर्म नथी बाध्यु ते पडते त्रीजे
 गुण स्थानै तथा बीजै आवै. अने उपशम भावै तो
 जिन नाम कर्म नो बध नहीं ते माटे बीजै त्रीजै गुण
 स्थानै सत्ताइ १४७ एकसो सैंतालीस प्रकृति होइ
 तथा उपशम समकित चार वार आवै, भव
 माहि ४ चारवार तो उपशम श्रेणी चढता आवै वली
 पाछो पड़े एक वार, ते उपशम समकित पामतां गंठी
 भेद थाइ ते समै आवै. तथा पाचमी वार आवै ते
 पाछो पडी आठमै गुण स्थानै आवी नें पछै क्षपक
 श्रेणीक माडी केवल ज्ञान पांमी सिद्धि वरें ए भाव

१०६. हिं वै क्षयोपशम समकितनु लक्षण कहै छै ते
 एकसौ छ मो प्रश्न — ३ तीन मोहनी, ४ चार
 अन्तानुबधी नी चौकडी, ए सात प्रकृति माहि थी
 मिथ्या (मोहनी) ३ अने ४ अन्तानुबधी चौकडी ए ७ सात
 प्रकृति माहि थी जे कांइक दलिया छै, वर्गणा छै, ते
 माहि थी जेतली वर्गणा ना दलिया ते प्रकृति ना उदै

आवै ते खपावै अने चाकी रह्या तेह नो उपशम करै—उपशमावै तेह नो नाम क्षयोपशम कहिये ते क्षयोपशम समकित ना भेद लिखिये छै

॥ दोहा ॥

चार खपहिं त्रय उपशमहिं, पच खय उपशम दीय ।
पय षट् उपशम एक थीं, क्षय उपशम त्रिक होय ॥ १ ॥

एह नो भाग्यार्थ लिखिये छै सात प्रकृति मध्य
४ चार चारित्र मोहनी नी छै, ३ तीन प्रकृति
मिथ्यात्व मोहनी नी छै ते मध्ये ६ छ पहली
पाषण (वाघिनी) जेरी छै एक सम्यक्त मोहनी
कुतरी (कुतिया) सरीखी छै तेह नो विवरो, ए सा
प्रकृति जिहा उपशमै तिहा उपशम सम्यक्त कहिये
ए ७ साते प्रकृति सत्ता माहि थी चय करै लिह
चायक समकित ए सात माहिली काईक खपै, काई
उपशमै तिहा क्षयोपशम समकित कहिये

॥ दोहा ॥

क्षयोपशम वरने त्रिविध, वेदक च्यार प्रकार ।
 चायक उपशम युगल जुत, नोवा समकित धार ॥ १ ॥
 क्षयोपशम समकित ३ तीन प्रकार नो, वेदक
 समाकित ४ च्यार प्रकार नो, चायक समकित एक
 प्रकार नो, उपशम समकित एक प्रकार नो एह नी
 रगत—जिहा ए सात माहि नी ४ च्यार क्षपे अने
 १ वे उपशमै, अने १ एक वेदै ते प्रथम भेद १ तथा
 ५ सात माहिली ५ पाच खपै, १ एक उपशमै, १ वेदै
 ते क्षयोपशम समकित नो बीजो भेद २ एवे प्रकारे क्षयोप-
 शम वेदक कह्यु तथा तीन प्रकार नु क्षयोपशम
 समकित कह्यु, एतले पाच प्रकार कह्या ४ च्यार क्षयो-
 पशम नो, तथा ४ च्यार क्षपे ३ तीन उपशमै ते
 क्षयोपशम सम्यक्त १ अथवा ५ पांच क्षपे २ दो उप-
 शमावै ते पिण क्षयोपशम समकित २ अथवा ६ छे
 क्षपे अने एक उपशमावै ते पिण क्षयोपशम समकित
 ३ ए तीन प्रकार करी क्षयोपशम समकित कहिये

हिवै क्षायिक वेदक नो एक भेद ते किम ? ते छ प्रकृति खपात्रै अने एक वेदै ते क्षायिक वेदक कहिये तथा छ उपशमात्रै अने एक वेदै ते उपशम वेदक कहिये इम तीन प्रकार नो क्षयोपशम समकित, बे प्रकार नो क्षयोपशम वेदक, एक प्रकारे क्षायिक वेदक, एक प्रकारे उपशम वेदक, एव ७ सात तथा एक क्षायिक जे साते क्षय जाय, एव ८ आठ तथा एक उपशम जे साते उपशमात्रै, एव ९ नव प्रकारे समकित ना विपरीते नव भेद छट्टा पूर्व मध्ये कह्या छै तेहर्न ए आम्नाय

१०७ हिवै मोहनी ना लक्षण कहै छै ते एकसौ सातमो प्रश्न — मिथ्यात्व मोहनी ते श्यु ? ते विभ्रम पणै युक्त आत्मस्वरूप विपरीत जाणै जिम सीप नै रूपो कहै ते ? मिश्रमोहनी ते विभ्रम पणै सदेह युक्त अनिर्धारपणै जाणै पण आत्म ज्ञान प्रते पामत्रा नादेर सम्पक्त मोहनी ते समी वस्तु ऊपर मोह उपजावै—
 म्हारा देव, म्हारा गुरु तथा जिनवचन मध्ये सका

कक्षा उपज्या ते लक्षण समकित मोहनी नु ३ तथा अनंतो
 छै अनुग्रह कर्म विपाक रसते अनतानुबधिया कहिये.
 ए भाव.

१०८ हिं वै सापेक्ष निरपेक्ष नो अर्थ कहै छै ते एक-
 सौआठमो प्रश्न—सापेक्ष ते सदय परिणाम ते हलै
 बलद (बैल) खेड़ता कोई अपेक्षा आसरी उतावल
 लै, पण कोई नी अपेक्षा विना निर्दयपणै कार्य न
 करै, कार्य पडे पण दया राखै, ते सापेक्ष कहिये अने
 निर्पेक्ष ते निर्दयपणै थई कार्य करै कार्य विना पण
 ताडना तर्जना करै ते निर्पेक्ष कहिये ए भाव

१०९ हिं वै सम्यक्दृष्टि नु एकसौनवमो प्रश्न
 कहै छै—सम थयुते, निमित्त माहि तो पुण्य पापना
 उदयनु सम थयु, जे आनै हर्ष नहीं, पापने उदै गये
 खेद नहीं तथा सम्यक् दृष्टी नै श्यु दृष्टि मध्ये सम?
 ते उपादान मांहि ते राग द्वेष धारा नो सम थया
 निमित्त मांहि तो पुण्य पाप ना उदय नो सम थय

जे आवे हर्ष नहीं, पाप नें उदै गये खेद नहीं एहवां
जेंहनी द्वाष्टि ते समद्वाष्टि कहिये एटले समद्वाष्टि ए बे
पद नो उपादान निमित्त देखाडयां, ए भाव

११० हिवै ४ च्यार निक्षेपा जिनना तेह नी
द्रव्य भाव थी भक्ति शी रीते करवी ते एकसौदसमो
प्रश्न — प्रथम पवित्रता पणै एकाग्र चित्तें असातना
टाली जिन नो नाम जपिये ते नाम जिन नी भक्ति १
तथा थापना जिननी अष्ट प्रकारी तथा सतर भेद
विधि सु करै पठै भाव पूजा तन्मय थई प्रणमै ते
थापना जिन नी भक्ति २ तथा द्रव्य जिनते जिनना जीव
तेह नें विषे तेह नें भावे, जिन ना जीव जाणीनें भा
सु वदणा करवी ते द्रव्य जिन नी भक्ति ३ तथा भा
जिन ते त्रगडै बैठा, समोसरणें घणाएक जीव नें प्रति
बोध आपता एहवा जे आज श्री सीमधर स्वामी तेह
वदणा, नमस्कार, गुण स्तुति इत्यादि करी ए तन्म
थई भारी जिन नें ए रीते भक्ति करै ४ ए निक्षेप ४ च्य
नी भक्ति नी रीते समन हृदय थी लिंस्युं छै ए भा

१११ हिवै जीव नें देवु अने दरिद्रपणो किम
 लै ते एकसौ ग्यारसो प्रश्न—जीव अनादिकाल नो
 ागद्वेष मोहै प्रणमै छै तेणै देवो नें दग्दिद्रपणु ए वे
 धें छै ते किम टलै ? समकित गुण पामै, रत्नत्रय
 धर्म पामै टलै ते किम ? ते दर्शन गुण प्रगटे द्वेष
 भाव जीवइ समभाव प्रगटै, ज्ञान गुण प्रगटै पुद्गलादि
 ऊपर राग भाव मिटीजे, वैराग्य गुण प्रगटै. चारित्र
 गुण प्रगटै, मोहनो दरिद्र जाइ, चरण ठरण गुण प्रगटै,
 इम ए गुण प्रगटै, ए दग्दिद्र जाइ तथा ए देवो करज
 (ऋण) टलै ते किम् ? दर्शन गुणै जन्म भवनी
 परपरोइ मिटै ज्ञान गुणै तो जरा नी वेदना मिटै चारित्र
 गुणै मरण भय मिटै, एतले अमर पद पामै सिद्धीवरें
 इम दर्शन गुण ज्ञान चारित्र गुणै प्रगटै जन्म जरा
 मरण ना भय टलै जिम एक नर लक्ष्मी धन प्रचुर
 पामै, दरिद्रपणु अने देवु ए वे टलै, तिम रत्नत्रय रूपै
 धर्म धन प्रगटै. राग द्वेष मोहै रूपै दरिद्रपणु जाइ
 अने जन्म जरा मरण रूपै देवा ना भय टलै ए भाव

છૈ એ ભાવ

૧૧૫ હિવૈ સાતાઈ સુખ, અસાતાઈ દુઃખ એ
માહિ નિમિત્ત ઉપાદાન કુળ છે તે એકસૌપદરમો પ્રશ્ન —
સાતા, અસાતા, દુઃખ, સુખ, યો શ્વાયો વિશેષ. સાતા,
તે અનુક્રમેણ ઉદય પ્રાપ્તિના વેદનીય કર્મ પુદ્ગલાનાં
અનુભવરૂપ, તથા સુખ દુઃખ ને પરોદીર્યમાન વેદનીય
અનુભવ રૂપ સાતા અસાતા તે ઉપાદાન રૂપે છે સાતા
અસાતા તે વેદનીય કર્મ ના ઉદય પામ્યા જે પુદ્ગલ
તેહનુ વેદવુ ભોગવુ, તે અશુદ્ધ ઉપાદાન રૂપ છે અને.
સુખ દુઃખ તેહના ફલ છે, તેહના ફલ ઉદેસ્યા? વેદનીય
કર્મ ભોગવુ એતલે નિમિત્ત રૂપ થયો જો સાતા ઉપા
દાને, સુખ નિમિત્તે સાતા તિહા સુખ હોઈ અને અસાતા
ઉપાદાને, અને દુઃખ નિમિત્તે એતલે અસાતા તિહા
દુઃખ એતલે તિહા જેહનો વૃત્ત તિહા તેહવો ફલ,
એ ભાવ

૧૧૬ હિવૈ સાતા અસાતા આત્માશ્રિત છે સુખ
દુઃખ તે પુદ્ગલાશ્રિત છે તથા વેદના ૨ વે પ્રકાર ની તે

एकसोत्तोलमो प्रश्न.— (वेयणा दुविहा अभुपगमीया उपकमीया अभुपगम कीया स्वय अभ्युपगम्यते वेदते यथा साधुः केश लुचना तापानोदिभिवेदयती उपक्राम- किंतु स्वयमुदीर्णस्योदीर्णा करणे न चउदय उपनीतस्य वेद्यस्य अनुभव इत्यर्थ ॥) एह नो भावार्थ—एक वेदनी कर्म काल पाकी स्वभावै उदय आवै ते समभावै वेदी खपावै ते अभ्युपगामकी वेदना अने एक उदीरणाइ करी उदय लावी नै वेदनी कर्म ना पुद्गल सम भावै वेदी खपावै ते उपक्रामकी वेदना जाणवी, ए भाव.

११७ हिवे जिन वचन स्याद वाद रूपै छै ते ४ च्यार प्रकारै छै ते एकसौ सत्तरमो प्रश्नः—ते कारण कार्य रूपै छै १ ते निमित्त उपादान लीघइ २ द्रव्य भाव सहित छे ३ निश्चय व्यवहार नथ युक्त छै ४ एहवा च्यार प्रकारै सहित होइ ते जिन धर्म देसना कही, ए भाव

११८ हिवे वे परिसह शीत छे ते किहा १ ते एकसौ अठारमो प्रश्न—आचारगे तृतीयाऽध्यायेन

धुरेटिका मध्ये इमकहू छै— जे २२ बावीस परिसह मध्ये २ बे परिसह शीत अने २० बीस परिसह उष्ण ते बे किहा? एक स्त्री परिसह १ बीजो सत्कार परिसह २ बाकी सर्व उष्ण परिसह छै— मन न तापकारी भाँटे उष्ण छै, ए भाव

११९ हित्रै बन्ध १ सत्तार उदय ३ नें उदीरणा ४ ए च्यार मध्ये आत्माश्रित अने पुद्गलाश्रित केतला होयते एकसौ उगणीसमो प्रश्न कहै छै — उदय १ अने सत्ता २ ए बे पुद्गलाश्रित छै, अने बध १ उदीरणार ए बे आत्माश्रित होइ, ए भाव

१२० हित्रै आठ वर्गणा ना पुद्गल मध्ये थोडा घणा किहा ते एकसौ बीसमो प्रश्न — आठ वर्गणा माहि उदारिक वर्गणा माहि योडा १, तेथी वैक्रिया माहि अनन्तगुणा २, तेथी आहारक माहि घणा ३, तेथी तेजस माहि घणा ४, तेथी भापा माहि घणा ५, तेथी सासोसास (श्वासोच्छ्वास) माहि घणा ६, तेथी

न ना पुद्गल घणा ७, तेथी कर्मणानि वर्गणाना पुद्गल
णा ८. इति भाव

१२१ हिवै २२ बावीस परिसह ते किहा कर्म
उपजै ते एकसौ इकवीसमो प्रश्न — ज्ञानावरणी
१२ वे, मोहनी ना ८ वेदनी ना ११, अतरायनो
१, ए च्यार कर्म थी उपजै अत गाथा— (दसण
मोहे दसण १ परिसहो पन्नाण २ पढमं मीचरिमे-
अलाभ परिसह सत्तेव ते चरित मोहनी १ अकोसे
अरई इच्छि ३ नि सीहीया ४ चेला ५ जायणा ६
चेवसकार पुरसकारोइकारस वेयणी जमि २पंचेव आणु
पुन्वी ५ चरीया ६ सिद्ध, तहेव जलेय ८ वहं ९ रोग
१० तणु फासा ११ से से सुनधि वियारो १२
इति)

• १२२ हिवै उपसर्ग परिसह नो अर्थ विचारवो ते
एकसौ बावीसमो प्रश्नः— उपसर्ग ते आत्मा कर्म
जनित छै उप (कहता) समीपे, सर्ग (कहता)

सर्जनजे उपसर्ग, ते माटे तथा परिसह ते पर जनितचै
पर ना निमित्त थी कद्या ते सहवु—परि समतात्
सह्यते इति उपसर्ग परिसहनो अर्थ विचारवो

१२३ हिवै प्रमाण ४ च्यार आत्मा थी वीर किम
मानिये ते एकसौ तेवीसमो प्रश्न कहै छै — अथ
प्रमाण ४ च्यार अनयोग सूत्रे कद्या छै — अनुमान
प्रमाण १ उपमा प्रमाण २ आगम प्रमाण ३ प्रत्यक्ष
प्रमाण ४ ते मध्ये आज श्रीवीर स्वामी प्रत्यक्ष प्रमाणे
किम मिले ? ते थापना निक्षेपा थी मिलै ते किम् ?
समभाउ शान्ति मुद्रा पर्यकासन नो उत्पादे अने राग
द्वेष नो विनास एहवी असल नी नकल जिन प्रतिमा
ते देखीने भाव थी वीर प्रत्यक्ष प्रमाणै मिलै जिन
प्रतिमा जिन सगीखी ते जिन प्रतिमा नी भक्ति जिन
भावै कीधाना फल श्रावकने महानिशीथ सुत्र मं कह
छै (अकसिणढो) इति वचनात् तिवारे जिन प्रतिमान
भक्ति कीधी ते जिन नी कीधी इम कारण कार्योपचा
रात् इम जिन नी थापना थी आज प्रत्यक्ष प्रमाणै

प्रीवीरमिल्या कहाइ सदेहो नास्ति.

१२४ हिवै कर्म वर्गणा जीव लीए छै ते थोडी
 घणी को नें आपै छै ते एकसो चोवीसमो प्रश्न —
 समैर जीव कर्म वर्गणा नें ग्रहे छै ते आठे कर्म पणै
 वेहचीनें आपै. ते माहि कोई नें घणी वर्गणा आपै
 सर्व थी योहु कर्म दल वर्गणा आयु कर्म नें आपै तेह
 थी नामगोत्र कर्म नें विशेषाधिक आपै. तेथी ज्ञाना-
 वरणी १, दर्शनावरणी २, तथा अतराय ३, ए कर्म नें विपै
 माहो मांहि विशेषाधिक आपै सरीखु, तेथी मोहनी नें कर्म
 वर्गणा दल अधिक आपै, तेथी वेदनी नें अधिक इम
 सर्व जोता तो वेदनी कर्म नें कर्म वर्गणा दल विशेष
 आपै इति भगवतीजी सूत्रे कह्यु छै. ए भाव

१२५. हिवै विग्रह गति केतला समय नो ते एकसो
 पचीसमो प्रश्न — भगवतीजी सूत्र मये एकेंद्री न
 पाच समय नो विग्रह गति ते त्रस नाडी बाहरै विदिसे
 रक्षो होय थावर जीव विदेसें त्रस नाडी बाहरै उपज-

वाला नें तथा उपशमवेदकवाला नें ए सात माहिज वेदै, एकै पण एक समै रहै, तेहना कालस्तोक माटे इहा गवेख्यु नथी ए भाव

१२९ हिबै समकित मोह नी प्रकृति को नें कहिये ते एकसौ उगणतीसमो प्रश्न — चर्यापशम उपशमवाला नें सत्ताइ छै तेह नी सत्ताइ मूल छै तेरौकरी कादा मोहनी वेदै छै 'कोईक जिन प्रणीत भाव सूक्ष्म पदार्थ मध्ये मुक्ताय शका कखा मोहनी साधू पण वेदै छै ते माटे भगवतीजी सूत्र मध्ये पण कह्यु छै ते विचारता समकित मोहनी प्रकृति तेहने कहिये ए भाव

१३० हिबै उत्सर्ग अपवाद बेमार्ग कहिये छै तेहनो स्यो भावार्थ ते एकसौ तीसमो प्रश्न — तत्रोत्तर उत्सर्गते व्यवहारमार्ग १ अपवाद ते निश्चयमार्ग २ यथा साधुने पृथिवी कायादि पट्कायनी विराधि ना निषेधी छै, पण कदाचित कोई कारणे नदी उत्तरवी पड़े तथा आहारादिक नें

अर्थे तथा गुरु देव वादवा अर्थे चालता विराधना थाइ, ते उत्सर्ग ते माटे अपवादै पचकखाण महा व्रत नो होइ अने आचरण काइक कारण पडै उत्सर्ग मार्ग होइ तथा वचनातरे कोईक ग्रथे उत्सर्ग ते निश्चय मार्ग कह्यो छै अपवाद ते कोमल मार्ग व्यवहार मार्ग कह्यो छै तेहनो स्वरूप आगु लिख्यो छै ए भाव, उत्सर्ग अपवाद मार्ग नी चर्चा घणी छै पण अत्र तो अल्प बुद्धि जेहवो जाणु तेहवो सचेप थी लिख्यो छै. इति

१३१ हित्रै कोइके प्रश्न पूछ्यो जे दीवा प्रमुख ना प्रकाश पडै छै ते दीवा मध्ये अग्नि ना जीव छै तेहना र्थीय, तरयोत रूप ते पुद्गल ना पर्याय ते एकसौ इकतीसमो प्रश्न — तत्रोत्तर दीवा मध्ये जे अग्नि ना जीव छै ते माहेज प्रणमी रह्या छै पण दाहक रूप पर्याय छै ते बाहर निकलै नहीं, तथा दीवा ना प्रकाश रूप जे बाहिरै दीसै छै ते तो विश्रसा पुद्गल नी पर्याय छाया आकृति तेज द्युति इत्यादि बहू भेदें पुलद्ग

साभलता निद्रा नावै १० बुद्धिवन होइ ११. दातार
गुण होइ १२ जे पाछै धर्म कथा साभले तेहना पछ
वाडे घणा गुण होइ, घणा गुण बोलै १३ निद्रा
कोई नी न करै तथा कोई सु ताण खँच वाद, विवाद
न करै १४ ए चउदा बोल श्रोता जिन वचन ना
साभलनार ना गुण जाणवा

द्विवै पुराणना नाम कहै अठार १८ ब्रह्म पुराण १
पद्म पुराण २ विष्णु पुराण ३ शिव पुराण ४ भागवत
पुराण ५ मार्कण्डेय पुराण ६ आश्वेय पुराण ७ नारद
पुराण ८ भविष्य पुराण ९ ब्रह्मवैवर्त्त पुराण १० लिंग
पुराण ११ स्कंध पुराण १२ वराह पुराण १३ वामन
पुराण १४ कूर्म पुराण १५ मच्छ पुराण १६ गरुड
पुराण १७ ब्रह्मांड पुराण १८ एव अठार पुराण नाम

१३३ अथ वर्ण, गन्ध, रस अने फरस (स्पर्श)
अने ए परमाणु पुद्गल ना गुण ए च्याग, शब्दे गुण
किहाथी आव्यो ? शक्ति होइ ते व्यक्ति थाइ २

तो शक्ति शब्दै गुण नहीं. तो शब्दै साभलिये छै कानै
 ते जीव नो गुण छै किम् पुद्गल नो गुण छै इति प्रश्न
 श्या ऊपर कह्यु छै ते एकसौ तेतीसमो प्रश्न —परमाणु
 मा बे फरस छै कर्म नी वर्गणा मा च्यार फरस छै
 शीत १ उष्ण २ लुखो ३ चोपड्यो ४ ए च्यार फरस
 छै शरीर मा आठ फरस छै ते ४ च्यार फरस बीजा
 किहा थी आव्या ? ते ऊपरि आठ फरस किहा थी
 नीपन्या ? ते किहा ? इहा बे सबध छै— समवाय
 सबध १ अने सयोग सबध २ समवाय सबध वस्तु
 गुण छै ते जाणवो देखवो पट द्रव्य पिण समवाय । ४ ।
 इति सयोग सबधे घणा मिल्लें उपचारे अपर गुण नीपजे
 कुण दृष्टाते ? खारो अने हलदरे जिम रत्तास याइ तिम
 शब्द गुण नीपन्यो आत्मा पुद्गल योगे शब्द थयो
 तिम ४ च्यार समवाय सबध हता तिम अपर बीजा
 ४ च्यार सयोग सबधे नीपन्या ए आठ फरस कहिये

१३४ हिवै पर भव नु आयु किम बवे ते
 कसो चांतीसमो प्रश्न —योग १ कपाय २ ध्यान ३

क्षेत्र थी सिय सप्रदेशी (सिय) अप्रदेशी हिवै भाव
 थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी भाव थी पण भजना
 भाव थी किम् भजना ? जे द्रव्य थी अप्रदेशी ते क्षेत्र
 थी नियमा अप्रदेशी जे द्रव्य थी अप्रदेशी ते काल
 थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी जे द्रव्य थी अप्रदेशी
 ते भाव थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी एणी रीति
 लीज्यो ए भाव

हिवै जे द्रव्य थी सप्रदेशी छै, जे क्षेत्र थी सप्र
 देशी, जे काल थी सप्रदेशी होइ नैं अप्रदेशी पण छै
 जे भाव थी सप्रदेशी

हिवै अप्रदेशी छै ते क्षेत्र थी सप्रदेशी अप्रदेशी
 ते द्रव्य थी सप्रदेशी, नियमा ते द्रव्य थी सिय सप्रदेशी
 सिय अप्रदेशी ते द्रव्य थी सप्रदेशी होइ नैं अप्रदेशी
 पण छै

हिवै अप्रदेशी काल थी सिय सप्रदेशी सिय अप्र
 देशी -काल थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी ते क्षेत्र

धी. पण ।सिय सप्रदेशी मिय अप्रदेशी

हिवै भाव थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी भाव
धी पण भजना भाव थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी
ते काल थी पण सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी इति

१३६ हिवै पट्द्रव्य ना गुण पर्याय किम
जाणिये ते एकसौ छत्तीसमो प्रश्न —अथ पट्द्रव्य नो
त्रिवरो द्रव्य गुण पर्याय लिखिये छै जीव द्रव्य १
पुद्गल द्रव्य २ धर्म द्रव्य ३ अधर्म द्रव्य ४ काल
द्रव्य ५ आकाश द्रव्य ६

१अथ जीव द्रव्य ना भेद—एक शुद्ध जीव द्रव्य,
एक अशुद्ध जीव द्रव्य शुद्ध जीव द्रव्य कोनें कहिये ?
नोकर्म (देहादि), द्रव्य कर्म ८ आठ (ज्ञानावर्णादि
भाव कर्म २ वे (रागद्वेष) रहित, सिद्ध सिद्धालये
तिष्ठे तिहा शुद्ध द्रव्य जीव कहिये अशुद्ध द्रव्य किं ?
जीव ना प्रदेश कर्मप्रमाणो माहि तिष्ठेयिं परस्पर तिहा-
अशुद्ध जीव द्रव्य कहिजे.

अथ जीव ना गुण ते श्यु ? एक शुद्ध गुण, एक अशुद्ध गुण शुद्ध ते श्यु? शुद्ध गुण ते केवल ज्ञानादि अनत गुण अथ अशुद्ध गुण ते श्यु ? मति, श्रुति, अप्रधि, मन, पर्यव, कुमति, कुश्रुति, कुअवधि, चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन, अप्रधिदर्शन, एव १० दस अशुद्ध गुण

हिवै जीव ना पर्याय किम्? एक व्यजन पर्याय १, एक अर्थ पर्याय २ व्यजन पर्याय ना बे भेद—एक शुद्ध व्यजन १ बीजो अशुद्ध व्यजन पर्याय २ शुद्ध व्यजन पर्याय ते चर्म शरीर प्रमाण किंचित उणो, सिद्ध सिद्धालये तिष्ठयि ते शुद्ध व्यजन पर्याय कहीजे,

हिवै अशुद्ध व्यजन पर्याय ते श्यु? नर नारकादि ४ च्यार गति अशुद्ध व्यजन पर्याय ज्ञातव्य

हिवै जीव का अर्थ पर्याय बे २—एक शुद्ध अर्थ पर्याय १ एक अशुद्ध अर्थ पर्याय २ ते शुद्ध अर्थ पर्याय किम् ? जिहा षट् गुणी हानि वृद्धि आपर्णे गुण सेणी तिहा शुद्ध अर्थ पर्याय कहीजे अथ अशुद्ध अर्थ पर्याय किम् ? मति ज्ञानादि अलोकना अव-

स्थिति एकाक्षर नें अनन्तमें भाग पर्याय ते ज्ञान प्राणि रहै तिहा अशुद्ध अर्थ पर्याय कहीजे जीव नो उत्पाद व्यय ध्रुव सयुक्त, एक गति नो उत्पाद, अन्य गति नो व्यय, ध्रुव द्रव्य शास्त्रत, ए जीव ना शुद्धा-शुद्ध द्रव्य गुण पर्याय

२ अथ पुद्गल महास्कव अपेक्षया सर्वगत भिन्न २ परमाणु अपेक्षाय असवगद (असर्वगत)

अथ पुद्गल द्रव्य ना भेद—एक शुद्ध पुद्गल द्रव्य १ एक अशुद्ध पुद्गल द्रव्य २ शुद्ध पुद्गल द्रव्य किम् ? आकाशके प्रदेश शुद्ध अविभागी प्रमाण अछेद भेद तिष्ठे तिहा शुद्ध पुद्गल द्रव्य हिवै अशुद्ध पुद्गल ते श्यु ? जे द्विणुकादि स्कध मित्या ते अशुद्ध पुद्गल

अथ पुद्गलगत ना द्रव्य ना गुण भेद एक शुद्ध गुण, एक अशुद्ध गुण शुद्ध गुण किम् ? अविभागी परमाणु वीस गुण सयुक्त तिष्ठे तिहा पुद्गल के शुद्ध गुण कहीजे अशुद्ध पुद्गल गुण किम् ? विशति आदि

परिणामै, आपणै गुण नी सु तिहा शुद्ध पर्याय कहीजे
 अधर्म द्रव्य असख्यात प्रदेशी लोक प्रमाण अखड
 आकृति तिहा शुद्ध व्यजन पर्याय कहीजे जिहा पट
 गुणी हानि वृद्धि करै तिहा शुद्ध अर्थ पर्याय कहीजे
 अधर्म द्रव्य के स्थिति नो उत्पाद, गति नो व्यय,
 ध्रुव द्रव्य शास्वत

५ अथ काल द्रव्य किं ? द्रव्य गुण वर्त्तना
 लक्षण, सर्प द्रव्याण पर्याय असख्यात अणु लोक
 प्रमाण शुद्ध पर्याय कहीजे वर्त्तमान समै नो व्यय,
 अनागत समय नो उत्पाद, ध्रुव द्रव्य शास्वत एक
 कालाणुनी द्रव्य आकृति तिहा शुद्ध व्यजन पर्याय
 कहीजे एव काल द्रव्य

६ अथ आकाश द्रव्य किं ? द्रव्य गुण अवकाश
 लक्षण पच द्रव्याणा पर्याय लोकालोक प्रमाण अनत
 प्रदेशी, घटाकाश उत्पाद, घटाकाश व्यय, ध्रुव द्रव्य
 शास्वत, आकाश द्रव्य लोकालोक प्रमाण आकृति तें

शुद्ध व्यजन पर्याय कहीजे एव आकाश द्रव्य ६ इति पट् द्रव्य हानि वृद्धि समाप्तः

हिवै पट द्रव्य ना गुण पर्याय जाणवा ने गाथा कहै छै—(परिणाम जीव मुत्ता सपऐसाएग खित्त किरियाय निच्च कारण कत्ता, सवगद मियर पवेसा १)

१३७ परिणामीक कुण द्रव्य ? जीव पुद्गल ए बे परिणामीक च्यार अपरिणामीक ते किहा ? धर्म द्रव्य १ अधर्म द्रव्य २ काल द्रव्य ३ आकाश द्रव्य ४ एव च्यार अपरिणामीक

१३८ कौण द्रव्य जीव कौण द्रव्य अजीव ? ४ च्यार प्राण नै करी जीव पूर्वही जीवै छै सुख, सत्ता, बोध, चैतन्य ये भी च्यार प्राण * करी सदा कालै जीवै छै इति जीव, पंच द्रव्य अजीव पुद्गल द्रव्य १ धर्म द्रव्य २ अधर्म द्रव्य ३ काल द्रव्य ४ अकाश द्रव्य ५ २

* इन्दी प्राण, घल प्राण, आयु प्राण, स्वासोस्वास प्राण, ये च्यार द्रव्य प्राणै करी जीवै छै, जीव्यो हतो, जीवशे अने भाव प्राण सुख, सत्ता, बोध, चैतन्य करी जीवै छै, जीव्यो हतो, जीवशे-

१३६ कौण द्रव्य मूर्तिक कोण द्रव्य अमूर्तिक ?
पुद्गल द्रव्य मूर्तिक, पच अमूर्तिक ३

१४० कोण द्रव्य सप्रदेशी कौण द्रव्य अ
प्रदेशी ? जीव द्रव्य १ पुद्गल द्रव्य २ धर्म द्रव्य ३ अधर्म
द्रव्य ४ आकाश द्रव्य ५ एव पाच सप्रदेशी काल
द्रव्य अप्रदेशी ४

१४१ कोण द्रव्य एक कोण द्रव्य अनेक ? धर्म १
अधर्म २ आकाश ३ एव तीन द्रव्य एक, जीव,
पुद्गल, कालाणु, ए तीनों अनेक ५

१४२ कोण द्रव्य क्षेत्री कौण द्रव्य अक्षेत्री ?
आकाश द्रव्य क्षेत्री, पच अक्षेत्री ६

१४३ कौण द्रव्य क्रियावत कौण द्रव्य अक्रियावत ?
जीव द्रव्य, पुद्गल द्रव्य ए वे क्रियावत ४ चार द्रव्य
अक्रियावत, ७

१४४ कौण द्रव्य नित्य कौण द्रव्य अनित्य ?
धर्म १ अधर्म २ आकाश ३ काल ४ नित्य जीव

पुद्गल ए वे अनित्य ८

१४५ कौण द्रव्य कारण कौण अकारण ?

पाच द्रव्य कारण, जीव अकारण ९

१४६. कौण द्रव्य कर्त्ता कौण अकर्त्ता ? जीव

कर्त्ता पच अकर्त्ता: १०

१४७ कौण द्रव्य सर्वगद कौण असर्वगद ?

आकाश द्रव्य सर्वगद, पच असर्वगद ११

१४८, गाथा— (ईहरहीयपचेस यद्यपीए
कत्ता मिलही तद्यपी आपणें गुण पर्याय तिष्ठत रहै)

१२ एव द्वादपा अधिकार समाप्त

सप्रदेशी पांच द्रव्य अप्रदेशी काल, सक्रिय पुद्गल
प्रने जीव छै अने च्यार अक्रिय, एक सचित जीव द्रव्य
अने ५ पांच अजीव द्रव्य, काल विना ५ पच अस्तिकाय,
पाच द्रव्य लोक मध्ये अने आकाश द्रव्य लोक अलोक
मध्ये छै. पुद्गल जीव ए २ वे गतिवन्त वाकी ४ च्यार
अगतिवन्त, पुद्गल जीव ना पर्याय पलटाइ, पण ४ च्यार

द्रव्य ना पर्याय पलटाइ नहीं

१४९ हिचै वेदनी निर्जरानी चौभगी नो एकसौ गुणपचासमो प्रश्न — महा वेदनी अने अल्प निर्जरा नारकी नैं १ अने महावेदनी महा निर्जरा साधु नैं होय गज सुकमालवत परे २ अने अल्प वेदना अल्प निर्जरा देवताने अने माहा निर्जरा अल्प वेदना से लेशी कारक ने ये चौभगी जाणवी

१५० हिचै मिध्यात्व नी चौभगी नो एकसौ पचासमो प्रश्न — अनादि अनन्त अभव्य नैं मिध्यात्व १ अने अनादि सात भव्य जीव नैं मिध्यात्व २ सादि सात समकित पामी फिरी पाद्यो मिध्यात्व जाय नैं फिरी समकित पामे तेनैं ३ अने सादि अनन्त कोई नैं नहीं ४ इति चौभगी मिध्यात्व नी

१५१ हिचै सींहपणें लेइ नैं सींहपणें 'पार्ले तेहनी चौभगी जाणवी ते एकसौ इकावनमो प्रश्न' — सीह ता ईमिस्क तो सीहताए विहरई जबूथूल

मद्राय १ सीहताए नाम एगे निस्कते सीयालताए
 हरइ. कच्छ महा कच्छ ककरि मरीच वत् अथ
 यालताए निस्कतो सीहताए विहरइ मेतार्य भव देव
 णीक यवकार सुवर्णकारवत् ३ सीयालताए
 नेस्कतो सीयलता निस्कताए सियालताए विहरइ.
 गार मर्दकाचार्य उदाई मारक कुल वालू वत् ४

१५२ हिं वै अनुयोग चारनो एकसौ बावनमो
 श्र — द्रव्यानुयोग १ धर्म कथानुयोग २ गणि-
 ानुयोग ३ अक्षरानुयोग ४ इति अनुयोग चतुर्द्धो

१५३ हिं वै षट् दुर्लभवोधि स्थाना नो एकसौ
 अपनमो प्रश्न कहीजे छैः— ६ हिठारणें हि दुल्लभ
 गोहि नारणक्रम पकरति अरिहताण श्रवन्न वयमाणे १
 अरिहत पन्नस्स धम्मस्स श्रवन्न वयमाणे २ आरियाण
 श्रवन्न वयमाणें ३. उवभायाण अवन्न वयमाणे ४
 चाउवन्नास्स सधस्स अवन्न वयमाणे ५ स्मदीठी देवाणा
 अवन्न वयमाणें ६ इति षट् दुर्लभ वोधि स्थानानि

नियमा-अवद्ध पुद्गल परिय द्धो चैव ससारो १) पुद्गल
ना परावर्त्त पुद्गल परावर्त्त अप कृष्ट किंच न्यूनो
धर्त्त पुद्गल परावर्त्त अपार्थ पुद्गल परावर्त्त

अथ अतर्मुहूर्त्तनो प्रमाण अतर्मुहूर्त्त अष्ट समयोर्द्ध
घटी द्वय यावदित्यर्थ तच्च सम्यक्तोपशामिक, अत्र चेत्र
पुद्गल परावर्त्त नानाधिकार द्रव्यादिन पुद्गल परावर्त्त
इत्युपदेस वदल्या

१५७ अथ जाति समरणना केटला भव देखै
ते एकसौ सतपनमो प्रश्न —गाथा—पुव्व भयासो पीव्व
ई एक दो तिन्नि जाव नव गवा । उवरि तस्स असि
ओ सभाव जाई सरणस्स ॥ १ ॥ चक्का १ असी न
छत्र ३ दडा ४ आउदसाल्लाइ हुति चत्तारी चम
मणी ६ कागणी ७ नही ८ सिरि गहे चकिणोहुति ॥२॥
सेणावई ९ गाहावई १० पुरोहीतओ ११ खुथइ १२
नियय नयरेथीर व्रण राय कुले वैयडे तले ग
तुरया १४ ॥ ३ ॥)

१५८. अथ धर्म पुण्य नो भेद ते एकसौ अठावनमो
 प्रश्नः—अथ केतलाइ जीव धर्म पुण्य नें एक मानै छै
 ते संदेह टालवा नें अर्थे धर्म पुण्य नो भेद लिखिये
 छै श्रण पुण्ये १ पाण पुण्ये २ लेहण पुण्ये ३ सयण
 पुण्ये ४ वथ पुण्ये ५ मन पुण्ये ६ वयण पुण्य ७
 काय पुण्य ८ नमस्कार पुण्य ९ इति नव भेद पुण्य
 ना कछा. १२ वार उपयोगमा २ वे अरूपी १० दस
 रूपी उपयोग, आत्म गुण माटे २ वे अरूपी छै पांच
 समकितना नाम छै तें मध्ये एक अरूपी चार रूपी
 आत्मा गुण माटे पांच भेद अरूपी छै सामायकादिक
 छ आवश्यक छै ते मध्ये सामायक १ चौबीसथो २
 पडिकमण ए त्रण आवश्यक सवर तत्व मध्ये छै.
 चाकी ३ त्रण निर्जरा तत्व मध्ये छइ गाथा—सन्न-
 गड नियमा एगामि भवमि सिग्गई अत्रस्य । विज-
 यादि विमाणे द्विय सखिज्ज भवा ओ ना यव्वी ॥१॥
 श्रावक जघन्य पदे केतला लामे ? क्षेत्र पत्योपम नें
 असख्यातमें भागी. आवश्यक, निर्युक्तो जबू द्वीप

मध्ये की टीकावधो अथवा नरा वहवा, तत्रोच्चर
तद समूर्ध्वच्छिमप्राण प्रिरह तदा काटिका स्तोका नरा
वहवो अथ श्रुत-सामायिक नो लाभ थाइ तिवारे दीपक
समकित होइ १ तत्र बीजो समकित सामायिक नो
लाभ २ श्रीजो देसविरत सामायिक नो लाभ ३
चौथो सर्प विरति सामायिक नो लाभ ४ छठा गुण
स्थान थी साधु त्रिण चोकडी नो क्षयोपशमथी ४
एत्र अभिप्राय यात्रत् यस्य पुरुषस्य अहारस्य द्वात्रिं-
शत्तमो भाग ते पुरुषोपेक्षया केवल मान आश्रित्य
(कुत्सित्य हृडीय कूठी शरीरना उ अडग मुहतीय
जावई देहरस ज औ पुव्व रयण तवोसस) कुसिता
कुटीर कुकुटी शरीरमित्यर्थः तस्या शरीर कुपाया
कुकुटाया अगक मित्राड कमूखमुच्यते ॥ गर्भे
प्रथम मुप स्योत्पादात्मुख मध्ये आयाति तावत्कुवलय
मूढ त्रयमदा चाष्टो तथाऽयतनानि षट् अष्टो शका-
दयश्चेति दृग् दोषा पचर्षिंशति १

पाच षटीक शालाना नाम घरटी नी खटकशाला १

चूलानि पटकशाला २ पाणी हारी नी पटकशाला ३
 सारवणोनि पट् कशाला ४ उखलानि पट् कायाविराधनो
 ५ ए पाच स्थान के छ. काय विराधना इति

१५६. आत्मा नी किंचिदात्मता लिरयते ते
 एकमौ गुणसाठमो प्रश्न.—प्रथम आत्म स्वरूप वर्यन्ते
 अमख्यात प्रदेशी-१ अनन्त ज्ञानमयी २ अनन्त
 दर्शनमयी ३ अनन्त चारित्रमयी ४ अनन्त दानमयी,
 अनन्त वीर्यमयी, अनन्त लाभमयी, अनन्त भोगमयी,
 अनन्त उपभोगमयी, अरूपी, अखंड, अगुरु लघू
 मह, अक्षय, अजर, अमर, अशरीरी, अत्येन्द्री,
 अनाहरी, अलेशी, अनुपाधी, अरागी, अद्वेषी,
 अकोही, अमानी, अमायी, अलोभी, अलेशी, मिथ्यात्व
 रहित, अविराति रहित, कपाय रहित, यौग रहित,
 अजोगी, सिद्धस्वरूप, सत्तार रहित, स्वआत्मसत्तावत,
 परसत्ता रहित, पर भावनो अकर्ता, स्वभाव नो
 कर्ता, परभावनो अभोक्ता, स्वभावनो भोक्ता, ज्ञायक

वेत्ता, स्वचेत्तावगाही, पर क्षेत्र पणै अनवगाही, लोकप्रमाण श्रवगाहनवत, धर्मास्तिकाय थी भिन्न, अधर्मास्तिकाय थी भिन्न, अकाशस्तिथि भिन्न, पुद्गल थी भिन्न, पर काल थी भिन्न, स्व द्रव्यवत, स्व क्षेत्रवत, स्वकालवत, स्वभाववत, अवस्थान पणै स्व गुण थी अभिन्न, कार्य भेदै भिन्न, स्वरूप सत्तावत, अवस्थित सत्तावत, परणमन सत्तावत, द्रव्यास्तिक पणै नित्य, पर्यायास्तिक पणै नित्यानित्य, द्रव्यपणै एक, गुण पर्यायपणै अनेक, अनता द्रव्यास्ति धर्म, अनता पर्यायास्ति धर्म, एहवी स्वसपदामयी चेतन लक्षणै लक्षित, स्वसपदाए पूर्ण छै पर सगै प्रणम्यो ससार कस्यो स्व ज्ञान दर्शन चारित्रै प्रणम्यो सिद्धत्ता करै एहवा आत्म द्रव्य नी ओलखाण अनत नयै अनता निचैपै थाइ ए रीते जे आत्मा नी परतीत करे, एहवा परतीतवते नै जैनमार्गी मार्ग मां गणै छै एहवा आत्मा जैनमार्गे अनेकात्मयी कस्यो छै ए रीते परतीत ते सम्यक् दर्शन, ए रीते ज्ञान ते ज्ञान, ए

माहि रम्यो ते चारित्र

अस्थित्व १ वस्तुत्व २ द्रव्यत्व ३-प्रमेयत्व ४
प्रदेशत्व ५ अगुरुलघुत्व ६ ए द्रव्यमिक्त ना सामान्य
स्वभाव जाणवा

नित्य स्वभाव १ अनित्य स्वभाव २ एक स्वभाव ३
अनेक स्वभाव ४ सत्य स्वभाव ५ असत्य स्वभाव ६
वक्तव्य स्वभाव ७ अव्यक्तव्य स्वभाव ८ भेद स्वभाव ९
अभेद स्वभाव १० परम स्वभाव ११ ए विशेष स्वभावं
ना नाम, स्वप्रदेश स्वभाव १ अप्रदेश स्वभाव २ चेतन
स्वभाव ३ अचेतन स्वभाव ४ मूर्त्त स्वभाव ५ अमूर्त्त
स्वभाव ६ कर्तृत्व स्वभाव ७ भोक्तृत्व स्वभाव ८
परिणामीक स्वभाव ९

धर्मास्तिकाय ना गुण चार मुख्य—अरूपी १
अचेतन २ अक्रिय ३ गति सहाय ४.

अधर्मास्तिकाय ना गुण चार मुख्य—अरूपी १
अचेतन २ अक्रिय ३ स्थिरसहाय ४.

सद्धहणा, परूपणा २ सत्रेग पक्षि नै, फरसणा
नहीं ४

फरसणा बाल तपस्वी नै, सद्धहणा १ परूपणा २
नहीं ५

परूपणा १ असजती नै, सद्धहणा १ फरसणा २
नहीं ६

फरसणा १ परूपणा २ अभव्य नै विषे छै, पण स
द्धहणा नहीं ७

असद्धहणा १ अपरूपणा २ अफरसणा ३ अना
दी मिथ्यात्वी नै होइ ८ इती अष्ट भेद ना अर्थ
आठमो भेद ते निगोदीया प्रमुख एकेंद्री प्रमुख नै होइ
एभाव

१६२ हिं वै प्रभु नै दानाधिकार नो एक सौ
बासठमो प्रश्न - अथ तीर्थकर ना दान नो अधिकार
लिख्यइ दिनदिन प्रते एक कोडि अने आठ लाख सो
नइया दीये सोनइयो ८ आठ रती नो नै कोइक
जायगा सोनइयो ८ ० अशी रती नो पिण लिख्यो छै सो

निचारजो जाणजो तीर्थकर जितरमो होई तितरमा
 तीर्थकर ना पितानो नाम माड्यो होइ ते एक दिन ना
 सोनइया ९००० नव हजार मण थाइ. एक गाडो मण
 चालीसनु एहवा गाडा २२५ दोसो पच्चीस थाइ
 आप आपणा वाराना गाडा जाणवा सवच्छरी
 दान ना सोनइया सर्व इद्र नें आदिसै ये श्रमण
 देवता ८ आठ समय माहे नीपजावी नें तीर्थकरना
 भडार भरे ते दान देवाना ६ छ अतिशय
 जाणवा तीर्थकरना हाथ नें विषे सौधमेंद्रस्थिती
 एतले दान देता थोकै नहीं ईसानेंद्र सुवर्ण मय रत्न
 जडित लाकडी लेइ उभा रहै इद्र चौसठ वर्जि सामा-
 नेक देवता नें वर्जें तथा मनुष्य ना भाग्य माहि होय,
 जेहवी जेहनी प्राप्ति होइ, जे जेहवो पोसाइ ते तेहवो
 तीर्थकर ना मन ईसानेंद्र करै तथा तेहवो तेहना मुख
 माहिथी कढावै २ चमरेंद्र बलेंद्र तीर्थकर नी.मुठी
 माहिला सोनहिंया अधिका आवै ते गेरवै, ओछा
 होय तो अमोरे, साहमानी प्राप्ति सारू ३

देवता भरत क्षेत्रना मनुष्य नें तेडी आवे ४ वाण
 व्यतर देवता ते मनुष्य नें पाछ मुकी आवै ५ ज्योति
 की देवता विद्याधर नें दान लेवा, भणी जाण दीयें.
 एउ तेणै प्रस्थावै तीर्थकर नो पिता व्रण मोटी साला
 करावै एक सालाई भरत क्षेत्र ना मनुष्य नें अन्न
 पानादिक आपै वीजी सालाइ वस्त्र आपै त्रीजी
 सालायै आभरण आपै छ घडी पछी दान देवा माडे
 तिवारै पौणा दो पहर ताइ दीये इति दानाधिकार

१६३ साधु सिन्हाय करै छै शुभ योग व्रतादिक
 नी शुभ क्रिया करै छै, तथा शुद्धोपयोगै शुद्ध स्वभावै
 (अर्पण भावैमाणे विहरई) इम आत्म ध्यान करै
 छै ते सर्व कर्म खपावानें अर्थे ते किहा कर्म खपावै ?
 खपावमाना तो व्रण्य कर्म छै उदे कर्म, अने बन्ध
 कर्म, उदीरणा कर्म तो उदय ना पेटा मध्ये गवेखिये
 तथा कर्म ते मध्ये उदय कर्म शोणे खपावै छै ? तथा
 सचा कर्म शोणै सोधे छै इति बन्ध कर्म किम मिटै ? शुभ
 योगै पच महा व्रत सवर रूप क्रियाइ नवा बन्ध पामै

ते माटे, बन्ध कर्म, निवारें, ते व्रतादिक शुभ क्रियाई
 तथा पाच प्रकार नी सिम्हाइ उदय कर्म स्वपावै छै;
 निफल करै छै तथा शुद्धोपयोगी आत्म ध्याने सत्ताई
 जे कर्म छै ते सोधे खपावै. इम मुनि आत्म गुणै
 निर्मल करी सिद्धि वरै छै ए भाव

१६४. तथा आश्रवा ते परिश्रवा, जे शुद्धोपयोगी
 आत्म परिणामै जो आश्रव ना कारण होइ ते सवर
 रूप थाइ ते श्री आचारागै सूत्रे चौथे अध्ययने द्विती-
 योदेशके समाकित ना अध्ययन मध्ये ए गाथा छै.
 तथा जीवाभिगम सूत्र मध्ये निर्लेप पदे श्रीगौतमे
 पूछ्यो छै जे, स्वामी पाच थावर ना जीव हसणा
 चर्त्तमाने समै जेतला छै ते निर्लेप थाशे गत्यातरे
 जाशे ते एकसौ चौंसठमो प्रश्न.—तिवारे श्रीवीरे कह्यु
 एक वनस्पति काय विना पाच काय ना जीव निर्लेप
 थागे. पृथ्वी, अप, तेउ, वाउ, त्रम काय ना जीव सर्व
 स्थानातरे निर्लेप थाशे पण वनस्पती काय निगोद गो-
 लक ना जीव निर्लेप नथी तत्र अधि.

जेहीं न पतो त साइ परीणामो (उवयति षयन्निय
पुणोत्री तथैव तथैव) एणे न्याये वनस्पति कायना
जीव निर्लेप न थाइ ए भाव

१६५ एकसौ पैसठमो प्रश्न — तथा बादर
अपनाय बारमा देवलोक सुधी कही छै तथा बादर
तेउ काय त्रीछी अढी ध्विप सुधी कही छै, ऊची
मेरु पर्वत नी चूलीका सुधी कही

१६६ एकसौ ब्यासठमो प्रश्न — तथा सातमी
छाठि नरगै कुभी मा उपजवु नथी तिहा आलिया छै.
जिम नदी नें भेखडे बिल होई तिम तिहा आलिया
छै तेतले सुत्ता छै ते ऊपरि शरीर वृद्धि थाइ
तिगारे पडे इम सामल्यो छै ए भाव

१६७ हिवै साधु ना १४ चउद उपगरण ते
किहा ते एकसौ सणसठमो प्रश्न —

गाथा.

पत्त पत्ता बधो पाय ठवण चा पाय केसरिया ।

पडिलाइ रयत्ताणं गुच्छओ पाय निलोंगो ॥ १ ॥
 तिन्नेव पछागासय हरण चैव होई मुहपत्ती ।
 एसो दुवालस विहोउवही जिणरुप्पियाणनु ॥ २ ॥
 ए एचेव दुवाल समत्तरेगा चोल पटोय एसो ।
 चउदस रूवोउवही पुण्येर कप्पमि ॥ ३ ॥

अर्थ—पत्त कहता पात्रु १ पत्तावध ते झोली २
 पायठवण ते कापत्ती नो कटको ३ पाय केसरिया ते
 चरवलो ४ पडलाई ते भिच्चा जाता ऊपरि कपडो
 राखै ५ रयत्ताण ते पात्रा वेठवानु लूगडु ६ गुच्छओ
 ते कवलमय खडा पात्र ऊपर दीजिये ७ ए सात तो
 पात्र ना उपगरण तथा ३ तीन कपडा राखै बे सूत्र-
 मय एरु उर्णिका तथा श्रोघो मुहपत्ती एव १२ वार
 जिनकट्पी नें होइ तथा एक मातु एरु चोलपटो ए
 १४ चवदा उपगरण विवरकट्पी नें होय

१६८. तथा युग प्रधान आचार्य जिहा विचरै
 तेहना लक्षण काव्य ते एक सौ अडसठमो प्रश्न —
 एपाहि वत्तेन पत्तति युका नराब्द भगोनच देश

धर्मातराय कर्म नो क्षयोपशम थाय त्यारे एकाग्रता रूप ध्यान माहि सिद्धि वरे तथा सयमफल पामै थकै तथा ४ च्यार कर्म चायिक भावै प्रणमै केवल ज्ञान पामी सिद्धि वरे ए भाव

१७३ हिवे च्यार प्रकारनी बुद्धि नदी सूत्र मध्ये कही तेहना नाम ना शब्दार्थ लिखिये छै ते एक सौ तिरियोत्तरमो प्रश्न — उपतीया १ विणीयार कमीया ३ परिणामीया ४ ते मध्ये किहाइ दीठु साभल्यु होय नहीं पोता नी मति ज्ञानावरणी ना क्षयोपशम थकी स्वभावै २ उपजै ते उत्पातकी बुद्धी कहिये अभय कुमार नी परे १ विनय कीधा थकी जे बुद्धी उपजै नागार्जुनादिक नी परे ते विणीय थकी कहिये २ कमिया ते करसणादिक कीधा थाइ विज्ञान कलाइ ते उपजै, व्यापार नी परे, ते कम्मीया कहिये ३ तथा परिणामिया ते श्रावता काल नो विचार करं, रोहा नि परे ४ तथा जिम अभय कुमारे आद्र कुमारे न जिन प्रतिमा मूकी तिणें धर्म पाम्यो इम च्यार बुद्धि

तो.भा.ार्थ जाणवो इति बुद्धी च्यार४

१७४. एक सौ चुमोत्तरमो प्रश्नः— तथा
ज्ञाती समरण ज्ञान ते मति ज्ञान नो भेद छै विभग
ज्ञान जे देखै ते अवधि दर्शन ना पेटा माहि छै इति.

१७५ चन्द्रमा नी चालनो एकसौ पिच्योत्तरमो
प्रश्न.— मेघ राशि नो सूर्य होई तिहा कन्या राशि
ना सूर्य ताई चन्द्रमा नी चाल उत्तर दिस भणी, तथा
तुल राशि यकी माडी मीन ताई चद्रमानी चाल दक्षिण
दिशा भणी होइ इति

१७६ अथ मिथ्यात्व अविरत हेतु नो एकसौ
द्विहोतरमो प्रश्न — जेहवो आत्मा नो शुद्धोपयोग
वस्तु आचरवानें जिम मिथ्यात्व बलवर्ते छै, तिम एहनी
गणमनसुख निवारवानें अविरति बलवर्ते छै, जिहा
आत्मा ना प्रणमन अविरत नो उदय अविरत रूप
आत्मा प्रणमै तिहा एह नें आत्मिक एकाग्रता रूप
सुख न पामै, ते सम्यक् दृष्टी नें अविरती हेतु मिटै

एहनी प्रणमन उपयोगै एकाग्रता रूप प्रणमै तिवारे
एक सुख रूप सुखमई सपूर्ण धर्म पामै इति भाव

१७७ तीन प्रकारे कर्म नी वक्तव्यता नो एक
सौ सित्योतरमो प्रश्न — तथा श्रनादि श्रशुद्धोपयोग
रूपे विभावताइ राग द्वेष मोह रूप आत्मा प्रणमै ते
भाव कर्म १ तिण आकर्षणें कर्म रूप वर्गणा बधाय
ते द्रव्य कर्म२ ते वर्गणा जिवारे पाच शरीरे प्रणमै
तेह नोकर्म कहिये३ इम तीन प्रकारे कर्म नी वक्त-
व्यता जाण्णी इति भाव

१७८ हिवै एक सौ अठ्योतरमो प्रश्न — तथा
सम्यक्दृष्टी जीव मिथ्यात्व नें उदये समकित बसीनें
पाछो मिथ्यात्व गुण ठाणै जाय तोही पिण आयु
वर्जि नें सात कर्म नी स्थिति पत्योपम नें श्रसख्यातमें
भागें उणी एक कोडा कोडी सागरोपम नो बन्ध
करै उत्कृष्टो बन्ध एतलो करै देश विरती नें नव
पत्योपम उणी एक कोडा कोडी सागरनो बंध उत्कृष्टो

करै, तथा मुनि पणो पामीने पाछो पडै, मिथ्यात्वे जाय तो पण आयु वर्जिने साते कर्म नी उक्कृष्टी स्थिति बाधै तो नव हजार सागरे उणी एक कोडाकोडी सागरोपम नो उक्कृष्टो बध करै, तथा उपशम श्रेणी थी पडीने मिथ्यात्वे जाय ते पण आयु वर्जि ने सात कर्म नी उक्कृष्टी स्थिति बाधे तो नवहजार सागरोपम उणी एक कोडा कोडी सागरोपम नो उक्कृष्ट स्थिति बध करै इति भवन भानु केवली चरित्रे उक्तच तथा मार्गाभिमुखे जीव किवारे थाय ? जिवारे भव्यताने उदै श्रेकाम निर्जराइ कर्म सपावता बे पुद्गल परावर्त्त ससार रहै तिवारे प्रभुमार्ग सन्मुख आस्तिक पणै सन्मुखी भाव थाइ तिहा थी ससार भव भ्रमण करतो जीव ऊंचो आवै तिवारे जीव मार्ग पतित पणु डोढ परावर्त्त पुद्गल ससार रहै, तिवारे जिनोक्त मार्ग, रुचि रूपे बैठो वली कर्म ने उदै ते भाव थी पडयो ससार मध्ये परिभ्रमण करतो एक परावर्त्त ससार पुद्गल रहै तिवारे जीव मार्गानुसारी पणु पामै

तिहा मित्रादि दृष्टी प्रगटै न्यायसपन्न विभक्त इत्यादिक
 ३५ पात्रीश गुण प्रगटै तिहा आत्मा जिनोक्त मार्ग
 चाल्यो तिहा मिथ्यात्व मन्द रूप होय तथा एतला
 सुधी गुण पामी नें कोई जीव ससार माहे नदी पापाणनी
 परे घचन घोलना करता अर्द्ध परावर्त्त पुद्गल ससार
 माठेरा रहै, तिवारे आर्य देश सञ्जी पचेद्री पणो गुरु
 उपदेशै तथा सहज स्वभावे कोई निमित्त पामीनें यथा
 प्रवर्त्त करणें करी आत्मरीर्य वकी अपूर्ण करणें
 मिथ्यात्व राग द्वेषनी जे अर्थी तथा उपशम अर्थी भेद
 करतो जे मोहनी कर्म नी सात प्रकृति तेहनें उपशमा
 वतो वरतो जीव अनि वृत्ति करणे करी एक समय नो
 अन्तर करणे करी जीव उपसम समकित पामै तिवारे
 जीव मार्ग प्राप्त कहिये वस्तु धर्म समकित नें पाम्यो
 ए अधिकार योगबिंदु अथ मं कह्यो छै

१७९ तथा साधुने जे त्रिण्य जोग छै ते त्रण्य
 रत्न त्रय गुणे प्रणम्या छै ते किम ? ते एक सौ उगण
 यासीमो प्रश्न — मनो योग ते सम्यक् दृष्टी दर्शन गुणै

दृढास्थिकतादिरूपे प्रणम्यो छै तथा वचन योग ते
जिन वाणी मांहि ते ज्ञान गुणे प्रणम्यो छै तथा काय
योग्यते चारित्र गुणे, “जयचरे जय चिह्ने जय माशे
जय सुये इत्यादिक रूपे प्रणम्यो छे त्यारे जाव जीव
तांइ सावद्य योग थी निवत्तिने मुनि मज्जम योगे
प्रणमै छै इति.

१८०. तथा ससार माहे जीव केतली प्रकारना
छे ते एकसो अशीमो प्रश्न— जीव ३ तीन प्रकार
ना छै-भव्य १ अभव्य २ भव्याभव्य ३.

१८१ भव्यनु लक्षण कहे छै ते मध्ये
भव्य जीव ३ तीन प्रकारना—एक निकट भव्य
१ मध्य भव्य २ दुर भव्य ३ ते माहे निकट भव्य
जीव होय ते कीणनीपरे सहवा ते सौभाग्यवन्ती स्त्री
यत्तिम निकट भव्य जीव होइ तत्काल स्त्री परणीने
पट्ट माम माहे गर्भ रहै अने पुत्र नी प्राप्ति थाय, पुत्र
रूप फल पामै केतला जीव ते भव्यसिद्धि वरे, ते निकट

भव्य १ तिम केतलाइ जीव मध्यम भव्य छै जिम ते परणी स्त्री नें बे वरसे पण नजीक पुत्र फल पामै तेम जीव थोडा माहे भव सिद्धि वरे, मेष कुमार नी परे २. केतलाइक जीव दुर भव्य छै ते जिम परणी स्त्री नें घणे वरसै पूत्र फल पामै तिम ते जीव गौशाला नी परे, केतलाइक तथा अनता पडवाइ नी परें घणे काले सिद्धि वरशे इम तीन प्रकारना भव्य जीव जाणया

१८२ हिंवै अभव्यनु लक्षण कहै जिम वधा स्त्री घणे काल लग भरतार नो योग मिलै, उपाय अनेक करै, पण पुत्र न पामै तद्वत् अभव्यनु जीव व्यवहारे चारित्रनी क्रिया आदरी नवमा श्रेवेक सुधी जाय पण सिद्धि फल न पामै

१८३ हिंवै त्रिजो भव्या भव्य कीह्यो ते जीव ते द्रव्य लक्षणे दलवाडु भव्य परें कर्म नी विशेष निवडताइ व्यवहार राशी मध्ये ऊचा नहीं आवै, धर्म पास्यो नी सामग्री न मिलै अत्र गाथा—(सामग्रीय भावओ व्यव

हा राशि अप्य विसाओ । भव्वाचिते अणते जे सिद्ध
सुह न पावति ॥ १ ॥ कुण दृष्टाते कुण नीपरें ? जिम
कोइ बाल विधवा स्त्री नीपरें. तें स्त्री नें पुत्र थावा ने
सक्ति रूप छै पण भरतार ना योग नें अभावे पुत्र
फल न पामै तिम केतलाइक भव्य जीव छै पण
सामग्री नें अभावे नहीं पामै एहवी गाथा पन्नवणा सूत्र
नी टीका मध्येछै यत — (अधीअणता जीवा जेहेंन
पत्तोत साइ परिणामे । सुजतिययती यतीय प्णोवि-
तथेव तथेव ॥१॥) इति

१८४. हिवै अध्यात्मसार ग्रथे तीन प्रकारना
जीव कह्या छै—भवाभिनदी ते मिथ्या दृष्टी १ बीजो
पुद्गलानदी ते चौथा पांचमा गुण टाणावाला सम्यक्
दृष्टी २ आत्मानदी ते मुनि ३ इति

१८५ वली एहीज ग्रथे तीन प्रकारनों वैराग्य
कह्यो छै ते एकसौ पिच्चासीमो प्रश्न — दुख गर्भित १
मोह गर्भित २ ज्ञान गर्भित ३ वैराग्य एहनो विस्तार

भव्य १ तिम केतलाइ जीव मध्यम भव्य, परणी स्त्री नें घे घरसे पण नजीक पुत्र फल जीव थोडा माहे भव सिद्धि वरे, मेष कुमा केतलाइक जीव दुर भव्य छै ते जिम पर घणे घरसे पून फल पामे तिम ते जीव गौ परे, केतलाइक तथा अनता पडवाइ नी परे सिद्धि वरशे इम तीन प्रकारना भव्य जीव

१८२ हिंवै अभव्यनु लक्षण कहै जि स्त्री घणे काल लग भरतार नो योग मिलै, अनेक करै, पण पुत्र न पामे तद्वत् अभव्यनु व्यग्रहारे चारित्रनी क्रिया आदरी नवमा अवेक जाय पण सिद्धि फल न पामे

१८३ हिंवै त्रिजो भव्या भव्य कीछो ते जीव द्रव्य लक्षणे पलवाडु भव्य परे कर्म नी विशेष निवड व्यग्रहार राशी मध्ये ऊचा नहीं आवै, धर्म पासामग्री न मिलै अत्र गाथा—(सामग्रीय भाव

र राशि अप्य विसाओ । भव्वाचिते अणते जे सिद्ध
 न पावति ॥ १ ॥ कुण दृष्टाते कुण नीपरें ? जिम
 वैद बाल विधवा स्त्री नीपरें. तें स्त्री नें पुत्र थावा ने
 मक्ति रूप छै पण भरतार ना योग नें अभावे पुत्र
 कल न पामै तिम केतलाइक भव्य जीव छै पण
 सामग्री नें श्रमात्रे नहीं पामै एहवी गाथा पन्नवणा सूत्र
 नी टीका मध्येछै यतः— (अथीअणता जीवा जेहेन
 पत्तोत साइ परिणामे । सुज्जितिययंती यतीय पणोवि-
 तथेय तथेव ॥१॥) इति

१८४. हिवै अध्यात्मसार ग्रथे तीन प्रकारना
 जीव कह्या छै—भवाभिनदी ते मिथ्या दृष्टी १ बीजो
 पुद्गलानदी ते चौथा पाचमा गुण ठाणावाला सम्यक्
 दृष्टी २ आत्मानदी ते मुनि ३ इति

१८५ वली एहीज ग्रथे तीन प्रकारनों वैराग्य
 कह्यो छै ते एकसौ पिच्चासीमो प्रश्न —दुख गर्भित १
 मोह गर्भित २ ज्ञान गर्भित ३ वैराग्य एहनो विस्तार

तिहा थी जोइयो ए भाव इति

१८६ ससारी प्राणी केतली प्रकारना ते एक सौ त्रियासीमो प्रश्न — ते ४ च्यार प्रकारना कथा है ते किहा ? एक सघन रात्रि सम १ एक अघन रात्रि सम २ एक सघन दिन सम ३ चौथो अघन दिन सम ४ हिवै सघन रात्रि समान ते भयाभिनदी ते जीव मिथ्यात्वी, मिथ्यात्प्र गुण ठाणा वर्ती जीव जाणवा जे माहि काई उजवाळु नहीं १ तथा बीजा मार्गाभि मुखी, मार्गानुसारी जीव अघन रात्रि समान जीव जाणवा २ त्रीजो जीव सघन दिन समान ते ममकित दृष्टि थी माडिने वारमा सुधि ते जीव सघन दिन समान ३ चौथो अघन दिन समान ते केतली भगवान ४ ए च्यार प्रकार ना जीव जाणवा

१८७ तथा ससारी जीव नें आठ दृष्टी कही तेहना नाम ते एक सौ सत्यासीमो प्रश्न — मित्रा १ तारा २ बला ३ दीप्ता ४ थिरा ५ काता ६ प्रभा ७

परा ८ ए आठ दृष्टि नो विस्तार योगदृष्टि समुच्चय
प्रथ थकी जाणवो इति

१८८ तथा सर्व वस्तु पदार्थ मात्र माहि च्यार
कारण छे ते किहा ? ते एक सौ अठ्यासीमो प्रश्नः—
एक उपादान कारण १ निमित्त कारण २ असाधारण
कारण ३ उपेक्षा कारण ४ ए च्यार ना अर्थ—उपादान
ते श्यु कही इ ? जिम दृष्टाते उपादान कारण ते मृत्तिका
जे माहि घट उपजवानी शक्ति तेहनो नाम उपादान
१ तथा निमित्त कारण घटोत्पत्तो चक्र चीवर इत्यादि
जिणे करी घट नीपजै २ असाधारण कारण ते कुभ
कार जे घट निपजावै ३ अने उपेक्षा कारण ते श्यु
कहिये ? वस्तु जिम छै तिम नी तिम रहै पण तेहनी
सहायै आपणु कार्य करीइ जिम घट नीपन्यो तेम नो तेम
रहै पण तेहनी साहाजे जल भरण पान रूप काम
नीपजै तथा जिम सूर्य दीपे छै तेनी साहाजे आपणा
कार्य करीये ते अवेक्षा कारण ४ ते मध्ये उपादान
कारण धुरथी माडी छेहडा पर्यंत रहै असाधारण

कारण पूर्ण इमज इम च्यारे कारण जाणवा

१८९ वली तीन कारण बीजा कक्षा छै समवाय कारण ते घटनुं उपादान मृत्तिका जाणवो १ असमवाय कारण ते कुभकार २ तथा निमित्त कारण ते चक्र चीवरा दि इम घटप्रते ३ तीन कारण जोड लीजे

१९० तथा सर्व वस्तु द्रव्यार्थ पर्यायार्थ ए बे नय लीधे छै ते माहि थी सात नय ते किहा ? सग्रह नय १ व्यवहार नय २ नैगम नय ३ ऋजु सूत्र नय ४ शब्द नय ५ समभिरूढ नय ६ एवभूत नय ७ ए सात नय तेहना उपनय ए विस्तार नय चक्र ग्रन्थ थी जाणवो इति

१९१ तथा कषाय उपने पूर्व कोडनो पाल्यो चारित्र चय करै ते ऊपर गाथा आचारागनी दीपका मध्ये यत—सामण मणु चरतस्स कसायाजरस्स उक्कडा हुति । ममन्ना मियत्त पुफ्फ च निष्फल तस्स सापण ॥ १ ॥ ज अजिय चरित देसूणा एवि पुर्व कोडि । एतापि कषाय

मित्रो हारेई नरो मुहुचेण ॥ २ ॥ इत्यर्थ

१९२. तथा आबिल शब्द नो अर्थ आवश्यक टीका मध्ये कहु छै आय कहता जे (ओसामण काहुओ होई) ते मध्ये थी जिम अन्न काढे ते रीते काढिये ते आहार करवो. अने जे आम्त जे खाटो रस (पट्ट विगय) ए बेइने वजे ते आबिल कहिये इति अर्थ.

१९३. तथा नियाणकमा तेह ने व्रत नआवे उदय जे इम कह छै तत्रोत्तर. तेमध्येनियाणा नव प्रकारे दसाश्रुत स्कध मध्ये कहालै तथा जे नियाणु समकित नु छै, अव्रत नु छै ए. बे मध्ये जे समकित नो घात कारी नियाणो बांधे ते समकित पामवो दुर्लभ करे तथा अविरति नु भोग प्रतियु नियाणो बाध्य ते भोग पूरा थए व्रत उदै आवै जेम द्रोपदीने जीवे पूर्व भवे भोग प्रतियु नियाणो बाध्यु हतुं, ने पांच भर्तारी थई भोग पूरा थया पछी व्रत उदय आब्यु. ते माटे एहने अविरतिआसरि नियाणो कहिये, पण समकित नो नथी इत्यर्थ

१९४ तथा सामायक चार प्रकारना क्हा—

श्रुत सामायक १ समकित सामायक २ देश विरति सामायक ३ सर्व विरति सामायक ४ ते मव्ये श्रुत सामायक नो लाभ ते भव्य मिथ्यात्वी नें होइ अभव्य नें पण द्रव्य थी श्रुत नो लाभ थाइ १ तथा समकित सामायक ते सम्यक्दृष्टी नें होइ २ पाचमै गुण ठाणै देश विरति सामायक नो लाभ होइ ३ सर्व विरति सामायक ते छठे गुण ठाणा थी मुनि नें होइ ४ एतला मध्ये मुख्य समकित सामायक ते सपर रूप छै तेहनो स्वरूप कहिये छै जिनपाणी प्रतीते ग्रहीने प्रत्यक्षे स्वरूप नें वेदे, गुण पर्याय नो मिलदन करे, भेद रूप रत्न त्रय नें आराधै, ते व्यवहार समकित कहिये. तथा गुण पर्याय अभेद रूप रत्न त्रयें द्रव्य द्रव्य रूपें निर्णिकल्प समाधि पणें प्रणमै तेहने निश्चय समकित कहिये ते आगले व्यवहारे वस्तु, समकित नें मेलवै इति

१९५ ज्ञान क्रियाभ्या मोच. तत्र कथं ? द्रव्य

ज्ञान ते शास्त्रादि पठन रूप भाव ज्ञान ते आत्मस्वरूप
नो जाणवो

१९६. तेम क्रिया बे प्रकारनी—योग क्रिया ते
शुभाशुभ बध रूप उपयोग क्रिया ते पोताने स्वरूपे
प्रणमै ने निर्जरा रूप जोग क्रिया ते जाते आश्रव
रूप छे बध ने अपै अने एहनो जे उपयोग छै ते स्वरूप
निर्जरा करे एतले कर्म ग्रहण त्याग रूप सालटो
पालटो छै, पण सर्वथा मोक्ष क्रिया मध्ये नथी सर्वथा
मोक्ष ते उपयोगै छै. ते माटे जे क्रिया करे ते आश्रव
रूप, माटे मोक्ष नी कतरणी कही छै, पण मोक्ष ते एह
नां उपयोग माहे छै इत्यर्थ.

१९७. अथ चौथा कर्म ग्रथ मध्ये तथा अनुयोग
द्वार सूत्र मध्ये नव अनता कह्या छे, ते मध्ये पाहिलो,
बीजो, त्रीजो, ए तीन अनता ना नाम ए माहि तो
कोई एहवी अनती वस्तु लघु नथी जे आवै, ते माटे
ए तीन अनता सून्य, एहना स्वामी कोई नहीं तथा

चौथे अनते अभव्य जीव आख्या ते माटे चौथा भागा
ना ए स्वामी पाचमें अनते मध्य भागे सम्यक्त पड-
वाई जीव कख्या बली तेहीज पाचमें अनते सिद्ध
कख्या पण पडवाई थी अनत गुणे अधिका पण ए
सर्व पाचमा अनता ना स्वामी तिवार पछी छठे
अनते कोई नहीं सातमै अनते पण कोई नहीं एबें
अनता थी ससारी जीव पुद्गल परमाणुआ नो काल
सर्व आकाश प्रदेश घणा अनता, ते माटे बे अनता
नो स्वामी कोई नहीं शून्य भागा जाणवा तिवार
पछी ए सर्व आठमे अनते जाणवा ते माही विशेष
सर्व निगोदिया वनस्पति कायना जीव आठमै अनते
तेथी अनतानत गुणे अधिका पुद्गल परमाणु, ते थी
काल, ते थी सर्व आकाश प्रदेश, ते थी केवल ज्ञान
दर्शन ना पर्याय, इम एकेक थी अनन्ता गुणीये पण
सर्व आठमा अनन्ता ना स्वामी एतले भागे, वस्तु
नमो अनन्त पूरो थयो नहीं ते माटे ए नवअनता
माहे तीन अनन्त ना स्वामी कख्या ए गाथा माहि

दङ्क मूत्र ९८ अत्पा बहुत्व नो द्वार छै तेहनी गाथा
१९ मी मध्ये ए तनि स्वामी कह्या इति भावार्थ

१९८ तथा सिद्धान्त आगम माहि प्रथम क्षयो-
पशम सम्यक्त पामै, उपशम नो तन्त नहीं ते श्री जिन भद्र
गणी क्षमा श्रमणनी कीधी सम्यक्त पचवीसी मध्ये
पहिलो क्षयोपशम सम्यक्त पामै, उपशम नो तन्त नहीं.
तथा कर्म ग्रन्थ मध्ये पहिलो उपशम समकित पामै एहवो
तन्त छै त्यार पछी क्षयोपशम सम्यक्त पामै, उपशम नो
तन्त नहीं, एहवो आचार्य नो मत छै अथ त्यार पछी काल
सीतरी ग्रन्थ मध्ये कालीकाचार्य तीन जुदा कह्या छै.
तथा कलकी थारै ए अधिकार पण कालसितरी ग्रन्थ
मध्ये दइ इत्यर्थ

१९९ अपरं तत्त्वार्थ मध्ये इम कह्यु छै पृथ्वी, पाणी,
अग्नि, वायु, वनस्पति प्रत्येक एतले स्थानकै एकेकी
पर्याप्ता निश्चार्ये असख्याता अपर्याप्ता होइ, पण
सूक्ष्म निगोदिया पर्याप्ता नी निष्टाइ अनन्ता अपर्याप्ता

न होइ ते अनन्ता अपर्याप्ता शरीर जुदा, तेहनो पण आयू २५६ दोसो छपन आवली नो होइ पण अपर्याप्तो मरै इम न होइ, सर्वे चुल्लक भविया छै ते माटे तथा पर्याप्ता नु आयू एतलो, पण तेतला माहे प्राप्ती पूरी करीने मरै एहवो धार्यो छै तत्व इति

२०० व्यवहार राशियो जीव फरी सूक्ष्म निगोद माहे जाइ तो उत्कृष्टो अढी परावर्त्त पुद्गल ताइ रहै ते क्षेत्रपरावर्त्ति लीजिये पण सूक्ष्म ने बादर बे माहि थई ने तथा ते वली पृथ्वी काय माहे आनी, वली सूक्ष्म निगोद माहे जाय तो वली बीजा अढी पुद्गल परावर्त्त रहै उत्कृष्टे वली ऊचो आनी पृथ्वी पाणी माहीं आनी वली सूक्ष्म निगोद मा जाय तो तिम जे उत्कृष्टो काल निगोद मध्ये इम तिर्यच नी गति बाध्या थी जाइ आत्रै तो उत्कृष्टे असख्याता पुद्गल परावर्त्त रहै ते असख्याता केतले माने—आवलीने असख्यात में भागै जेतला समै असख्याता थाइ तेतला गानै, असख्यात पुद्गल परावर्त्त क्षेत्र थी जाणवा.

इम पन्नवणा मध्ये तथा कायस्थि स्तोत्र नी टीका
मध्ये कह्यु छै इति पूर्ण

२०१ तथा दर्शननी क्षपक श्रेणी ते चौथा थी
माडी; चारित्र नी क्षपक श्रेणी आठमी थी माडै

२०२ कर्म नो बध जघन्य थी एक समै नो, जघन्य
स्थिति तें अत मुहूर्त ताइ भोगवै उत्कृष्टै ज्ञानावरणी
कर्म नी त्रिस कोडा कोडी इम ए रीते.

२०३ तथा भव्य अभव्य सर्व जीव सूक्ष्म निगोद
थी निकल्या छै, मूल भूमिका ते जाणवी

२०४ तथा मनोयोग तो जघन्य थी एक समय नो
उत्कृष्टो अतरमुहूर्त नो काल इम वचन योग नो पण
काल ए रीते छै इम धारयु छुं इति

२०५ पद् गुणी हानि वृद्धि द्रव्यने छै तेहनो स्वरूप
यथा श्रुत लिखिये छै द्रव्य नू लक्षण श्यु? ते द्रवाइ
ते सेणे? गुण पर्याय करी द्रवाइ ते द्रव्य कहिये तथा
द्रव्य ते उत्पादादि, व्यय, ध्रुव ताइ सहित छै. ते द्रव्य

परिणामी छै ते प्रणमन उत्पाद, व्यय रूप छै, ते
 जिवारे द्रव्य थी प्रणमन रूप पर्याय छै ते जघन्य,
 मध्यम, उत्कृष्ट स्वरूपै छै तिहा पट् गुणी हानि वृद्धि
 नीपजै ते केम ? सख्यात गुणी वृद्धि, इम असख्यात
 गुणी वृद्धि, अनत गुणी वृद्धि इम अनत भागे
 हानि, असख्यात भाग हानि, सख्यात भाग हानि
 हिवै असख्यात भागे सख्यात, ते व्यय रूप प्रणमन
 नो स्वरूप इम उत्पाद व्यय रूपे सिद्धि नै विषे पर
 इम द्रव्ये द्रव्यत्व प्रणामी प्रणमन आसरी पट् गुणी
 हानि वृद्धि सभवीए छै पछै तो श्रीवीतराग देवे जे
 कह्यु ते सत्य इति

२०६ बध ना चार प्रकार छै तेहना स्वामी बे, कपा
 वसें तिवारे जीव प्रणमै जिवारे स्थितिबध अने र
 बध करै, अने केवल योग प्रणमनें आत्मा प्रण
 तिवारे प्रदेशबध अने प्रकृतिबध ए बे होय

२०७. हिवै केवली भगवत जे साता वेदनी यो

बाधै छै ते किम ? तेहनें काई शुभ सकल्प रूप व्या-
 पार नथी जे केवली भगवत नें एक शुक्ल लेश्या
 नो उदै छै ते जोग द्वारै प्रणामै अने योग नी प्रणामन
 ते उदये उदयैक भावै जाइ प्रणामै, पुद्गल नें पुद्गल
 नो विश्राम तिवारे ते लेश्यार्थे एक समे एक साता
 वेदनी नो वध थाय छै पण उत्तम पुद्गल ग्रहै, बीजे
 समै वेदें, बीजे समै निर्जरै ए रीते धारू छू इति

२०७ हिवै चौथे गुण स्थानै सम्यक् दर्शन पामै
 अनतानुबन्धीया राग द्वेष तथा मिथ्यात्व मोहनो क्षय
 तथा क्षयोपशम थाए ३

२०८ श्रवणगुण उदै माहि थी तथा सता माहि थी
 जाइ ते किहा गुणै खार, बैर, नें जहर जाय ? सम्यक्
 दर्शन गुणै खार जाइ, सम्यक् ज्ञान गुणै बैर जाय,
 मिथ्यात्व मोह गए तथा चारित्र मोह गए जहर जाय
 तथा छठै गुण स्थानै मुनि नें उदय माहि थी विषय
 माहि थी विषय, कषाय, उत्सृज, परुपणा, ए तीन
 श्रवणगुण जाइ तथा केवली नें राग, द्वेष, मोह गए

छै - पहिलो कर्णेद्री ना भेद १२ बार ते किम होइ? सचित शब्द रूडा, मयूर, कोकिला प्रमुख ते १ अचित शब्द मृदग, ताल प्रमुख २ मिश्र शब्द पुरुष तथा स्त्री ते माहि वस्त्रादिक वाश्री भेरी प्रमुख ते ३ ते शुभ अशुभ भेद छ ते छ भेद रागै अने द्वेषै एव १२ भेद श्रोतेंद्री ना विषयविकार जाणया ४

२ हिवै चक्षु इद्री तेहना ६० साठ प्रकार जाणया ते किम ? वर्ण पाच ते बिहु प्रकारै शुभ अशुभ, शुभ ते रत्नादिक, अशुभ वर्ण केशादि एम १० दस भेद ए सचित रत्नादि अने अचित गुली प्रमुख मिश्र स्त्री पुरुष प्रमुख भेदें त्रिगुण करता ३० तीस भेद थाइ ते रागै अने द्वेषै इम वमणा करता ६० साठ थाइ ४

३ घ्राणेंद्री तेहना १२ बार भेद गन्ध बेहु प्रकारे—सुरभिगन्ध, दुरभिगन्ध, सचित पुष्पादि शुभ अशुभ लक्षणादि अचित कस्तूरी प्रमुख, शुभ, अचित पिष्टादिक प्रमुख अशुभ, मिश्र पदमनी स्त्री

प्रमुख, अशुभ सखणी स्त्री प्रमुख इम ६ छः भेद ते राग अने द्वैपै करी १२ बार भेद थाइ

४ जिब्हा इद्री ना ७२ चौहतर भेद इम जाणवा रस ६ ते शुभ अने अशुभ करता १२ बार भेद नें ते सचित, अचित, मिश्र करता ३६ छत्तीस भेद थाइ ते रागै नें द्वैपै करता ७२ भेद थाइ

५. स्पर्शन इद्रीना ६६ छन्नु भेद ते किम ?
स्पर्श आठ—हलुवो स्पर्श अर्क तुल्य १ गुरु स्पर्श वज्रादिक २ मृदु स्पर्श हस रूप स्पर्श प्रमुख ३ खर स्पर्श करवत धारा गोजिब्हा प्रमुख ४, शीत स्पर्श हेम प्रमुख ५, उष्ण स्पर्श अग्नि प्रमुख ६, स्निग्ध स्पर्श घृतादि ७, लूखो स्पर्श राक्षादि ८ तेहना तीन प्रकार सचित, अचित, मिश्र सचित पुष्पादि, अचित माखण प्रमुख, मिश्र स्त्री पुरुष इम आठ ने त्रीगुणा करता २४ चौबीस भेद ते रूडा नें पाडुवा करता ४८ अडतालीस थाइ ते रागै अने द्वैपै करता ९६ छन्नु भेद सर्व

सख्या २५२ भेद जाणवा इमश्रोत्रेद्रीना १२ विकार,
 चक्षु इद्रीना ६०, नासिकाना १२, जिह्वा ना ७२, स्पर्श
 इद्रीना ९६, इम सर्व मिली २५२ एतलें पाचेंद्रीना
 विषय २३, अने विकार ते २५२ भेदे जाणवा इति
 विषय विकार सपूर्ण

२२० शब्दादि इद्री नो विषय कहै छे भाष्य
 कताह—(वार सहितो सुतस्सेसाण नव हीं जोइखे
 हितो। गिणत्तो पत्तमथ ए तो परतो नगिणत्ति ॥१॥)
 चक्षु नो एक लाख योजन विषय कह्यो छै
 तथ नानना वार जोयण इत्यादिक कह्यु छै जोयण
 आत्मागुल प्रमाणे च्यार गाऊ नो जाणवो तथा सूर्य
 नो विष तो आत्मागुल प्रमाणे घणा लाख योजण
 थाई ते माटे एतलो चक्षु नो विषय नथी तो सूर्य नो
 विषय किम देखै छै? तत्रोत्तर—सूर्य नो विमान तो
 देवकाय एक योजण ना एक सढी या अडतालिस
 भागनो छै तेहना आपणा गाऊ १३०० तेरासो

आसरे मोटो विमान छै ते सम्पूर्ण ते बडो मानवी
 दृष्टे नयी आवतु, पण तेह ना विमान ना तलिया नो
 ज नो आभास मान भलक काति दीसै छै पण
 पूर्ण विमान जेबडो छै तेहवो दृष्टे न आवे, ते माटै
 आत्मागुल प्रमाण नौ लाख योजन विषय कहिये
 इम शब्द नो विषय पिण्डो गाये, तेहनें श्रोत्रेद्री
 नो भलो क्षयोपशम होय ते साभले, इम नव योजन
 आव्या वायुनें योगै खाटा खारा पुद्गल नु जिब्हा ईद्री
 र्थ ग्रहण थाई इम नासिकाये वायु योगे आव्या
 नव जोयण सुरभी दुरभी जे ग्रहण थाई इम स्पर्श
 इन्द्रिये नव जोजन ना वायु योगे आग्रहण
 थाई पण ते सर्व जोयण आत्मागुल प्रमाण
 गाऊ ४ जाणवा तत्र गाथा— (पुठ सुरेइ सह
 लठ पुण पासई । अपुधतु गध रसच वध फास पुठ
 नियागरोति ॥) तथा चक्षु इद्री नो आकार मसूरनी
 दाल जेबडो बडो, श्रोत्रेद्री नो आकार आगळीया वृक्ष
 ना फूल जेहवो, तथा नासिका नो आकार तिलना फल

सारीखो, तथा रसेंद्री नो आकार छरपलो तथा कगत ना पत्त सरीखो, फरसेंद्री नो आकार अनेक प्रकारे छै इम साधु ने पचेंद्रीय ते आकार रूपै छै पण विकार रूप नथी ते माटे पचेंद्री ना विषय विकार दमै ते मुनीने पण वीतराग रूप कहिये इति

२२१ पुनरपि पचेंद्री ना द्रव्य भाव रूपै कहिये छै श्रोतेंद्री बेहु प्रकारे-द्रव्य अने भाव तिहा द्रव्य इद्र बेहु प्रकारे—सूक्ष्म ने वादर वादर ते बाहिरै दीसै सूक्ष्म ते कर्ण माहि विषय ग्रहण व्यापारे, जघन्य थी अगुलनो असख्यातमो भाग, उत्कृष्टे १२ जोयण नो विषय इम सर्व इंद्री ने विषय जघन्य थी अगुल नो असख्यातमो उत्कृष्टो विषय जिम पुर्वे कह्यु छै तिम जाणो

२२२ हिवै भावेंद्री ते जीवने दर्शनावरणी कर्म क्षयोपसमै शब्द रूप रस गन्ध स्पर्श लेवानी शक्ति उपजै ते उपयोगै भावेंद्री कहिये अने आकारे द्रव्य इंद्री

कहिये इति पञ्चवणा सूत्र मध्येन्द्रीयद मध्ये छै तिहा
थी विस्तार जाणवो. इति

२२३ तथा सिद्ध थयानो पण विचार श्रीपञ्चवणा
सूत्र मध्ये कह्यो छै मनुष्यकी सीझै तेहने आठ इद्री,
नारकी थकी मनुष्य थइ सीझै तेहने १६ सोलेंद्री, तिर्यच
थकी तथा पृथ्वी थकी मनुष्य थइ सीझै तेहने १७ इद्री,
तथा देवता थकी पृथिवी थकी मनुष्य थइ सीझै तेहने
१७ इद्री पृथिवी पाणी वनस्पाति माहि थी मनुष्य थइ
सीझै तो ९ इद्री इम सर्व विचार पञ्चवणा मध्ये कह्यो
छै. पण एहनो अर्थ आमनाय गुरु गतिार्थ पासे
ते लियो इति

२२४ अथ आत्मागुल १ उच्छेदागुल २ प्रमाणागुल ३
ए तीन नो मान गाथा थकी जाणवो (उसेहगुल मेग हवइ-
पमाण गुल सहस गुण । तचेव दुगणीय खलु विरसायगुल
भणीय ॥ १ ॥ आयगुले केण वथु उसेह पमाणतु मिण
सुदेह । नग पुढवी विमाणाई मिण सुपमाण गुले-

णतु ॥ २ ॥) इति आव० निर्युक्तो उक्त इति

२२५ तथा मति ज्ञान ना२ वे भेद,—श्रुत निश्चित १
 अश्रुत निश्चित २ ते मध्ये श्रुत निश्चित ना४ च्यार भेद—
 उग्रह १ इहा २ अत्राय ३ धारणाय ४ उग्रह ना २ वे
 भेद—व्यजना अवग्रह १ अर्थावग्रह २ व्यंजना वग्रह
 ना ४ भेद—परसे १ रसे २ घ्राणे ३ श्रोत्रे ४ अर्था
 वग्रह ना ६ भेद—पाचे इद्री अने छठो मन इम
 छचोक चोत्रीस अने व्यजनावग्रह ना४, इम इहा
 अवाय धारण करता एव २८ इम एकेक ना १२
 भेद थाइ बहु १ अबहु २ बहु विध ३ अबहु विधादिक
 १२ भेद, तिहा अनेक जीव वाजित्र शब्द ना शब्द
 साभलैछै, ते मध्ये ज्योपसमिक विचित्रताई करी
 कोई जीव घणा शब्द ग्रहै ते बहु १. कोईक थोडा
 ग्रहै ते अबहु २ कोई एक शब्द ना तार माडे इत्यादिक
 घणा विशेष जाणै ते बहु विध ३ कोईक थोडा विशेष
 जाणै ते अबहु विध ४ कोईक तुरत ग्रहे ते क्षिप्र ५.
 कोईक ससते ग्रहै ते चिर कहिये ६ कोईक घुमादिक

ऋगे करी आगादिक जाणै तेसलिंग ७ तथा ते लिंग
 रना जाणै ते अलिंग ८ सदेहालो जाणै ते
 दिग्घ कहिये ९ सदेह रहित ते असदिग्घ १०
 कोईक वेला कह्यु ते बीजी वेला अण कहे
 जाणै ते ध्रुव ११ कोईक चारवार जणावै ते
 ग्रध्रुव १२ इम अत्रग्रहादिक २८ भेद ते १२ चार गुणा
 करता ३३६ भेद थाइ एतला श्रुत निश्चित ना भेद
 तथा अश्रुत निश्चित ना ४ भेद—उत्पातकी बुद्धी १
 विनयकी बुद्धि २ कर्माया ते कार्मण बुद्धि ३ परि-
 णामीया परिणामिक बुद्धि ४ एव चार इम श्रुत
 निश्चित अश्रुत निश्चित सर्व मिली मति ज्ञान ना ३४०
 भेद कर्म ग्रन्थ नि टीका मध्ये कहा छै इत्यर्थ.

२२६ तथा पन्नवणासूत्र ना छटा वकति पद
 मध्ये कह्यु छै जे योतिपी देवता माहि समुर्द्धिम मनुष्य
 असनीयो तथा तिर्यंच असनीयो समुर्द्धिम असंख्याता
 वर्षा ना आयुषा ना युगलिया पखी तथा अतरद्दीप ना
 युगलिया मनुष्य एतला माहे श्री आर्व्यो ते योतिपी

देवता परं न उपजै इत्यर्थ

२२७ हिवै पाच लब्धि नो भावार्थ लिखिये छै
 प्रथम काल लब्धि १ इद्री लब्धि २ उपदेश लब्धि ३
 उपशम लब्धि ४ प्रयोगता लब्धि ५ ए पाच लब्धि
 पामै तिवारे जीव आत्मबोध समकित धर्म पामै ते
 मध्ये ३ तीन लब्धि पहली पाम्या पछी छेहली एकठी
 एक समै प्रगटै ते मध्ये काल लब्धि ते यथाप्रवृत्ति
 करण थये आवै सात कर्म नी थिति सात कोडा कोडि
 सागर नी थितै आणै, एतले ज्ञानावर्णा कर्म नी थिति ३०
 कोडा कोडी उत्कृष्टे हती ते अकाम निर्जराई औछी करै
 तो २९ कोडाकोडी घटाडी नवि अणबध तो एक कोडा
 कोडि माहि आणी मूकै इम ७ सात कर्म नी जेह नी जे
 स्थिति उत्कृष्टी छै * ते माहि थी सर्व घटावै तो एक

* ज्ञाना वर्णि १ दशना वर्णि २ वेदानि ३ अन्तराय ४ ये
 च्यार कर्म नी उतकृष्टिस्थिती ३० घांश कोडाकोडी नी, अने
 नाम कर्म १ गौत्र कर्म २ ये ये कम नी उतकृष्टिस्थिती २०, घांस
 कोडाकोडी नी छै, अन मोहनी कर्म नी उतकृष्टिस्थिती ७० सितर
 कोडाकोडी नी छै, ते ७ सात कम नी उतकृष्टिस्थिती माह थी
 सब खपावे, याकी एके एक कोडाकोडी नी राखे

कोडा कोडी रहै इम आयु वर्जिनै सात कर्म नी स्थिति सात कोडा कोडी सागर माहे आणै त्यारै, काल लब्धि जीव पाम्यो, पण इद्री लब्धि जे पंचेद्री पणौ संज्ञी पणौ न पाम्यो. काल लब्धी थि एकेंद्री विगलेंद्री पणौ पाम्यो ते काम न आवै इम भव नी परम्पराइ किवारै अकाम निर्जराइ ऊचो आवै, पंचेद्री संज्ञी पणौ पामै. तिवारे इद्री लब्धि पाम्यो, पण काल लब्धि न पाम्यो इम भवनी परम्पराइ कोई जीव नै काल लब्धि न पामै ते जिवारे जीव नै भव थिति घटै, साते कर्मनी थिति एक कोडा कोडी माहे आणै एहवा उत्कृष्टै यथाप्रवर्त्त करण चरमावर्त्तन आवै जो जीव पाछो नहीं पडै, ससार वधार से नहीं, एहवा जीव ने काल लब्धि पाम्यो इद्री लब्धि पामी नै उप-वेश लब्धि पामै तीर्जी त्यारे गठी भेद करै ते समै तिहा उपशमता लब्धि पामै तिवारे, उपशम भावै वर्त्ततो अपूर्व करण बीजो पामै तिवारे कुर्भेद जे गठी, तेह नै भेद तिहा चौथी लब्धि पाम्यो. तिवारै

पक्षी अनिवृत्तिकरणा अतर करणे वर्त्ततो जीव
 प्रयोगता लब्धि पामै तिहा वीतराग धर्म शचि
 प्रतीतात्मक धर्मे शुद्ध श्रद्धाने आत्म स्वरूपनो दर्शण,
 ज्ञान, स्वरूपाचरण रूपै समकित पामै इम समी
 लब्धि सम्यक् दर्शन पामै इति नियमसार ग्रन्थे कहुं
 छै तिहा धी ए लब्धि ना भेद किंचित लिख्या छै इति

२२८ हिवै उद्धार पल्योपम, अने एक अद्वा पल्यो-
 पम, एक क्षेत्र पल्योपम एतीन नो स्वरूप लिख्यते ए
 तीन ना सुक्ष्म अने बादर ए वे भेद करता छ भेद
 थया तेह ना मान अनता सुक्ष्म परमाणु आनो एक
 व्यापहारिक परमाणु तेणे आठै त्रसरेणु, ८ ऊर्ध्वरेणु, ८
 रथरेणु, ८ उत्तर कुरू युगलीया ना वालाग्रे ८
 महा हिमवन्त क्षेत्र युगलिया, ८ हिमवत क्षेत्र
 युगलीया, ८ महा त्रिदेह नर वालाग्र, ८ भरत नर
 वालाग्र, ८ लीख ८, जूय ८, जवमध्य ८, अगुले इम
 प्रत्येक आठ गुणा करे तिपारे उच्छेद आगुल तेणै
 घोनीस आगुले हाथ चऊ हाथे धनुष तथा वे हजार

२००० धनुषे कोस चिहु कोसै एक योजन प्रमाणे
 लांबो, पहुलो, ऊडो एहत्रो कुप पालो कहिये ते मधे
 देव कुरू उत्तर कुरू ना युगलीया ने बाले ठास
 भरिये तो एक समय एके को काढतां जिवारें पालो
 खालीयें । थाइ तेतलो काल बादर उद्धार पल्योपम
 संख्यातो काल थाइ, संख्याताखड माटे १ तथा पूर्व
 बालाग्र खड ना एक ना असंख्याता कर्पीयें समें
 समे काढतां जिवारे खाली थाई तिवारे सूक्ष्म उद्धार
 पल्योपम. २ एहवा २५ कोडा कोडि पल्ये द्वीपें समुद्र ना
 परमाण छै तथा पूर्वोक्त पालो बालाग्रें भरयो छै ते
 सोए बरसै एक खड काढता पालो खाली थाय ते बादर
 श्रद्धा पल्योपम संख्यात वर्ष प्रमाण माटे ३ हिवे ते
 खड ना असंख्याता खड कल्पिइ तेह नो कल्पना
 खड खड सौसौ वर्गसे एके को काढता हुता जिवारे
 पालो निर्लोपम थाइ तिवारे अद्वा पल्योपम सूक्ष्म थाइ.
 ते हवे दस कोडा कोडी अद्वापल्योपमे एक सागरोपम
 तीणे दस कोडा कोडी सागरे एक श्रवसर्पणी

काल इम एरुं सुक्ष्म अद्वा पल्योपमे करीने देवता नारकी तिर्यच, मनुष्य आयु मान, कर्म स्थितीमान, काय स्थिती मान, काल मानादिक लेखो ४ तथा तें बालाग्र खड भस्या पल्य माहि थी कल्प बालाग्रे स्पर्श जे आकाश प्रदेश ते माहि थी एकैके आकाश प्रदेश समय २ काठता जिवारे सर्व बालाग्र स्पर्श प्रदेश निर्लेप होइ तिवारे बादर क्षेत्र पल्य थाइ ५. अने जिवारे ते पल्य ना आकाश प्रदेश कल्पा सर्व स्पर्शी थाते समैर एकैक काठता जिवारे निर्लेप थाइ तिवारे सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम थाइ ६ एणे करि दृष्टिवाद मध्ये एकेंद्री अथवा त्रसादिक जीव नो प्रमाण कीजाए असख्याता उत्सर्पणी प्रमाणें इम तीनर सूक्ष्म पल्योपम शास्त्र नें त्रिपे उपयोगी होय ३ तीन बादर कल्या ते सूक्ष्म नो सुक्ष्मान बोधार्थ इहा प्राई घणो अद्वापल्योपम प्रयोजन छै इम कोडाकोडी सागरो पमे एक काल चक्र तेरुं अनते काल चक्रे पुद्गल परावर्त्त होइ, ते आठ प्रकार नो छै तिहा थी जायो अस्य गाथा— (उद्धार अधारि

अथ पलियतिहां समय वाससय ममए केसवहारोदी
 वो वही क्षाउत साय परिमाण ८५ ॥) पाचमें कर्म
 प्रन्थे उक्त.

२२६ तथा आत्म सम वस्तान उपयोग रूप ध्यान
 कहिये ते एणी परम्पराइ होई मोहनी कर्म न पर
 भसै जीव पर द्रव्य प्रवृत्ति करै छै सुख तृष्णाई भूलो,
 जिवारे मोहनी कर्म नी थिति घटै तेहने पर द्रव्य
 नी प्रवृत्ति मिटै. अने पर द्रव्य नी प्रवृत्ति टलै तिवारै
 विषय वैराग्य होई तिवार पछी मनोरोध थाई. जे
 माटे ठाम विना मन किहा जाइ ? जिम “ अतुरे
 पतितो वह्नि स्वयमेवपशाम्यति” (तृष्णावीना नि अग्नि स्व
 भावेई उपशमे) तिम विषय विना मन आपणी मेलै
 रुंधाय मनोरोध थी मन नी चचलता मिटै तिवारे मन
 एकाग्र थईने आत्माने विपै प्रवर्त्तै आत्मानो स्वभाव
 तै कह्यु छै यत—(जोवर्षई मोह खलुसो विषय विरतो
 मणोणिहंभित्ता समठी दोस भावे सो अप्पाण हवे
 ईश्वर ॥ १ ॥) इति उक्त प्रवचन सारोद्धारे.

२३० हिवै आत्म भावनानी गाथा तीन लिख्यते
 —(नाह दोमी परेसि णमे परेणम ष्म मिह किंवा । इय
 आय भावणाये राग दोस विलय जन्ती ॥ १ ॥ नाणस्त
 विसुद्धिए अप्पा एग तउण ससुद्धो । जमा नाण अप्पा
 नाणच अणवा ॥ २ ॥ आयासामाइए आया-
 सामाई यस्त अठोत्ति तेणव । इम सुत्त भासइ च
 आय परिणाम ॥ ३ ॥) ए मूर्त्रे पण चारित्र ते आत्म
 परिणाम रूपज कहिये छै पण बाह्य क्रिया रूप नथी
 कछू तत्र काव्य

येषा न चेतो ललना सु लग्न
 मग्न न साहित्य सुधा समुद्रे ।
 ज्ञास्यति ते किंम महा प्रयास
 नाधो यथा वाट वधु त्रिलासन् ॥

इत्यर्थं

२३१ हिवै प्रवचन सार मध्ये उत्सर्ग मार्ग ते
 उत्कृष्टो कठोर घोर ब्रह्मचर्यादिक पालै जिन कल्पी

णो तेहनें कहिये छै अने अपवाद ते कोमल मार्गे मुनी
 बेचो, पच महा व्रत पालें, यथाशक्ति तप करें, शिष्य
 शाखादिक राखै, धर्मोपदेश आपैं, ते अपवाद मार्गी
 मुनि कह्या पण ए बे मार्गी आत्मार्थी जाणवा इति
 उत्सर्ग अपवाद इति

२३२ - हिवै पाच निधर्मा कह्या छै ते धर्म न
 पामै ते ऊपर गाथा—(भद्रो देवाइ चो वसहासत्तो अज्जि
 या पुत्तो । गुरु देवाणु दुट्ठो निधम्मा पच पन्नतां ॥१॥)
 अर्थ अष्ट ज्ञात कुलुंथी त्रिणठो ते १ बीजो देवनो
 पुजारो, तथा देव को माल खाय ते २ विषया-
 सक्त लोलुपी तथा स्त्री लपटी होय ते ३ चौथो आर्या
 नों पुत्र—साध्वीइ व्यभिचार सेव्यु होय तेह नो पुत्र
 थयो ते ४. पाचमो देव गुरु नो निदक उपाथक घातक
 ५. ए पाच निधमा कह्या धीतराग नो भाप्यो धर्म
 नपामै इति अर्थ

२३३. तथा समुद्धिम मनुष्य मरी केतले दडके

जाई ? बसौ तेतीसमो प्रश्न—तत्रोत्तर दस १०
 दडके जाय ते किहा ? पाच ५ थावर माहे, त्रण ३
 विगल्लेंद्री माहे, एव आठ पचेंद्री मनुष्य तथा पचेंद्री
 तिर्यंच माहि जाय पण युगलियो न थाय तथा
 ए दस दडक माहि तेउ, वाउ ए२चे दडक वर्जी नें बीजा
 आठ दडक ना आव्या समुच्छिम मनुष्य थाइ इति

२३४ तथा देवता नारकी नें छमास थाकतो होई
 त्पारें परभव नो आयु बाधै तथा निरुपक्रमी आयुवालो
 पृथवी कायओते त्रीजे भागै एतले वे भाग पहिला
 मूकीने त्रीजे भागै रहै तिहा पर भवनो आयु बाधै जीव नें
 पर भव नो आयु बाधता अतर्मुहूर्त्त थाय तेतला माहे
 तीन आर्कष करे जिम गाय पाणी पती विसामै
 २ पीये तेम जीव पण आयु कर्मना पुद्गल नें लेई
 आकर्षी बाधै इति

२३५ हिवै आकुटे, प्रमादे, दर्पे, कल्प, कर्म
 बघाइ तेह शब्दार्थ कहै छै आकुटिकया अनाभो, तथा
 उपेत्य सावद्यकरणोत्साहोत्तिकका १ दर्पोधावनरे पनव

गानादिक हास्पजन किंवा नाट्यादिकंदर्प रूपो वा
 २ प्रमादो रात्रौ दिवा प्रति लेखना प्रमार्थ नाद्यनुप-
 जुक्ता ३ कल्प कारणे दर्शनादि चतुर्विंशति रूपेसती
 गितार्थस्य कृत योगिनोपयुक्तस्या अयततनया अधा
 कर्माद्या दान सुरूपा. ४ इति

२३६. हिवै पाच क्रिया माहि जीव अत्पा बहुत्व
 किमहोय इति प्रश्न — पाच क्रिया मांहि सर्व थी थोडा
 जीव मिथ्यात्व क्रियावाला तेह थी अपचक्खाण
 क्रियावाला असंख्यात गुणा अधिका समाकित माहे
 भल्या ते माटे, तेह थी परिग्रहनीक्रियावाला असख्याता
 वधता देशविरति माहि भल्या ते माटे, तेह थी आरभ
 की क्रिया वाला तेह थी घणा सख्याता अधिका छै
 छठा गुण ठाणावाला मुनि भेलै ते माटे, तेथी माया-
 वर्ति क्रिया ना घणी संख्यात गुणा अधिका ते नवमा
 गुण ठाणावाला मुनि वध्या. ए भाव पन्नवणासूत्र मध्ये
 छै. इति.

२३७. हिवै जेश्या नो देवता आसरी अल्पा बहुत्व कहै

पर्याप्ता च शरीर भ्रिचति किं प्राग भिहितेज शरीर
नाम्नाने तदास्तिस्याध्य भेदा । तथा जयसोमवात्ता बोध
ने पिपे लिख्यु छै

२४४ हित्रै पर्याप्ति नाम कहै छै जे कर्म ना उदय
थी आरभी पर्याप्ति करया बिना न मरे ते पर्याप्त नाम
कर्म तेणें एकेंद्रा नें ४ विगलेंद्री तथा असनीय पंचेंद्री
नें माप्या होइ ते भणी पाच ५ सनीया पचेद्री नें
मन होइ ते भणीछै ६ पर्याप्ति उत्पत्ति प्रथम समय थी
आरभी पर्याप्ति पूरी करया बिना न मरे, पूरी करी नें
मरे पण अधूरीय न मरे ते लब्धि पर्याप्तो कहिये
तथा करण कहता शरीर इद्री पर्याप्ति पूरी नथी थई
तिहा लगी तेहने करण अपर्याप्तो कहिये अथवा
जे जे परयाप्ती पूरी थई नथी ते तेहनी अपेक्षा ये करण
अपर्याप्तो कहिये पूरी करी तेहनी अपेक्षाये परयाप्तो
कहिये अने कर्म ना उदय थी आरभी पर्याप्त पूरी करया
बिना मरै ते लब्धि अपर्याप्त नाम कर्म तिहा पर्याप्ति कहता
पुद्गल ना उपच्यथी थयो पुद्गल परिणाम ना हैतु

शक्ति विशेष ते विषय भेदछै, तथा पर्याप्ती प्राण
मन्त्रे सो विशेष ते कहियेछै ? पर्याप्ति ते उपजती
बेलाइ होय, अने प्राण ते जात्र जीव लगे होई
ते विशेष

२४५ हिचै तीनं गाथा सम्यग् दृष्टी नो स्वरूप
ग्रन्थातरे कहु छै ते गाथा लिखिये छै— (बन्ध
अविरईहेओ जाणंतों राग दोस दोषच । विरईसु
इच्छतो विरई का उचअसमथो ॥ १ ॥ एस असजयस
मौनिदतो पात्रकम्मकरणच । अहि गय जीवा जीवो
अविलिय दिठी बलीय मोहो ॥ २ ॥ सम दसण
साहित्यो गिणतो विरइमप्पसत्तिए । एगव्वया ईचरमो
अणूमई मित्तती देस जई ॥ ३ ॥ ए गाथा नो अर्थ
गुरु गम्य थी धारियो सम्यग् दृष्टि नें उदय प्रतीओ
बन्ध होइ पण आत्म प्रतियु बन्ध न होय इति

२४ ६ द्वादशते केवल ज्ञान, केवल दर्शन चात् आत्मा
नो अने तेतिद्वन्द्व ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनी या
अन्तराय कर्मोदय साति तास्मिन् केवलस्यानुत्पादात्

थानिके सर्वे जीव अणाहारी होय, आहार ग्रहण उदा-
रिकवैक्रिय नी मिश्रता मिलै तिहां होइ इत्यर्थः

२५१ तथा अतर्मुहूर्तना आयुवालो तिर्यच पंचेन्द्री
असनीओ मरीने युगलीओ पंचेन्द्री तिर्यच न
थाइ अतर्मुहूर्त उपरात नो होइ ते उपजे पण
अतर्मुहूर्त २५६ आवल नु नहीं, एतले मोटो अतर्मु-
हूर्त जाणवो इत्यर्थ.—

२५२ तथा परमात्म प्रकाश ग्रथै आत्मा ना तीन
प्रकार कह्या छै बहिरात्मा ते मिथ्या दृष्टी जीव १
अतरात्मा ते सम्यग दृष्टी चौथा गुण ठाणा थी
वारमा सुधीर परमात्मा ते तेरमा चउदमा वाला केवली
भगवत जाणवा ३

२५३. तथा तीन प्रकार ना पुद्गल प्रणमै छै-विश्र-
सा परिणामै १ प्रयोगसा परिणामै २ मिश्रसा परिणामै
३ विश्रसा ते स्वभापे कोई निमित्त पामी तदाकार
थाई, इंद्र धनुषादि अभ्रादि वत १. प्रयोगसा ते

जीव व्यापारे उद्यमेन भवनं यथा घटं पटादि गृहादि
ज्ञेयं २ मिश्रसा ते किञ्चित् प्रयोग किञ्चित् स्वभावे
यथा पटो बद्धो जीर्णः तत्र बधनं जीव प्रयोगेण
जीर्णं भवन स्वभाव इति मिश्रसा ज्ञेया इत्यर्थः

२५४ तथा तीर्थंकर नो जन्म थाइ तिवारे साते नर
कैकेतलु अजुआलुं थाइ इति प्रश्नः—पहिली नरकें सूर्य
सरीखो उद्योत थाइ १. बीजी नरके साभ्र सम तेज २.
गंजीये पूनम ना चंद्र सम उद्योत ३, चौथी नरकें
साभ्र चंद्र सम तेज ४ पाचमीये शुक्र तथा गुरु इत्यादि
ग्रहना सरीखो तेज ५ छठी नरके नक्षत्र ना
सरीखो तेज ६ सातमीये तारा नो सरीखो तेज ७.
एहवो उद्योत ते तीर्थंकर ने कल्याण के होई ए अधिकार
हेमाचार्य कृत चौविस तीर्थंकरना चरित्र मध्ये छै,—
इति भावार्थ

२५५ अथ अस्ताविक गाथा—काले सुपत्त दानं
समत्त विशुद्धबोहिलाभं च वाअते समाहि मरण

माहे न आवै ते माटे बादर सूक्ष्म कहिये ३ चोरि
 दिया कहता नयन विना बाकी च्यार इद्रिये ग्रहीए
 ते सूक्ष्म बादर पुद्गल कहिये श्या माटे ? जे गन्ध,
 रस, फरस, शब्द ना पुद्गल आवता न देखिये ते
 माटे सूक्ष्म, अने गधे रसे फरसे शब्द जाणिये ते माटे
 ए ज्ञातिना पुद्गल नै सूक्ष्म बादर कहिये ४ कम-
 पाउगा कहता पाचमा पुद्गल ते कर्म नी वर्गणाना ते
 दृष्टे न आवै ते माटे चोफासिया सूक्ष्म पुद्गल कहिये
 ५ छठा सूक्ष्म सूक्ष्म ते कम्मातीया कहता कर्मातीत
 एक छूटो परमाणु पुद्गल ते सूक्ष्म सूक्ष्म कहिये
 ६ ए रीते छ प्रकार ना पुद्गल ससार मध्ये व्यापी
 रह्या छै जिम छ कायना जीव व्यापी रह्या छै तिम ए
 जाणवा इति

२५८ ज्ञाना वर्णादिक कर्म नो बन्ध उदय उदी-
 रणा सत्ता केतला गुण ठाणा ताइ होय तेहनों धिवरो
 लिखिये छै ज्ञानावर्णी कर्म नो बन्ध गुण ठाण १०
 मा ताई, दर्शनावर्णी नो बन्ध दसमा ताई वेदनीनो बन्ध

१३ ठाणा १३ मा ताई मोहनि नो बध गुण ठाणा नव
 ॥ ताइ आयु कर्म बध गुण ठाणा ७ मा ताइ नाम कर्म नो
 बध गुण ठाणा १० मा ताई गोत्र कर्म नो बध गुण ठाणा
 १० मा ताई अन्तराय कर्म नो बध १० मा ताई इति

२५९ अथ ज्ञानावर्णि कर्म नो उदय गुण ठाणा
 १२ मा ताई दर्शनावर्णि कर्म नो उदय १२ मा ताई
 वेदनी कर्म नो उदय गुण ठाणा १४ मा ताई मोहनी
 कर्म नो उदय गुण ठाणा १० मा ताई आयु कर्म नो
 उदय गुण ठाणा १४ मा ताई नाम कर्म ना उदय गुण
 ठाणा चवदमा ताई गोत्र कर्म नो उदय गुण ठाणा १४
 मा ताई अन्तराय कर्म नो उदय गुण ठाणा १२ मा ताई

२६० अथ हिवै ज्ञानावर्णि उदीरणा गुण ठाणा
 १२ मा ताई दर्शनावर्णि उदीरणा गुण ठाणा १२ मा
 ताई वेदनी कर्म उदीरणा गुण ठाणा ६ ठा ताई मोहनी
 कर्म उदीरणा गुण ठाणा १० मा ताई आयु कर्म
 उदीरणा गुण ठाणा ६ ठा ताई नाम कर्म

गुणठाणा १३ मा ताई गोत्र कर्म उदीरणा गुण
 ठाणा १३ मा ताई अतराय कर्म उदीरणा गुण ठाणा
 १२ मा ताई इति

२६१ अथ हि वै ज्ञानावर्णि कर्म सत्ता गुणठाणा
 १२ मा ताई दर्शनावर्णि कर्म सत्ता गुण ठाणा १२
 मा ताई वेदनी कर्म सत्ता गुण ठाणा १४ ताई
 मोहनी कर्म सत्ता गुण ठाणा ११ मा ताई आयु
 कर्म सत्ता गुण ठाणा १४ मा ताई नाम कर्म
 सत्ता गुण ठाणा १४ मा ताई गोत्र कर्म सत्ता गुण
 ठाणा १४ मा ताई अतराय कर्म सत्ता १२ मा
 गुण ठाणा ताई होइ

ए बध, उदय, उदीरणा, सत्ता नु स्वरूप कह्यु
 ए सर्व भाव केवल ज्ञानी एक जीव स्वरूपे द्रव्य गुण
 पर्याय छै तेहना अनन्ता जीव देखै एकेक जीवने
 अनन्ता कर्म जे रीते छै ते देखै एकेक जीव ना
 अनन्ता भाव देखै छै भाव ते परिणाम इम केवली

सर्व भाव अस्ति नास्ति रूपे जे जिम छै तिम जायै
 दवै इति

२६२ हित्रै अचित महा स्कध जे पुद्गल नो चौदे
 राज लोक प्रमाण पूरे तेहनो स्वरूप यथा श्रुत लिखिये छै
 द्वि प्रदेशी परमाणुया ना स्कध थी माडीने असख्यात
 प्रदेशीओ स्कध ते अचित महा स्कधे लोक पूरण
 न थाय अनता परमाणु नो जे एक स्कध तेणै पिरण
 लोक पूरण न थाय तो श्यु ? अनत बादर परमाणु
 नो एक स्कध तेहवा अनन्तास्कन्ध मिलै तिवारे
 अचित महा स्कध रूप थाइ ते चोद राज लोक
 पूरे तेह नी विधि-ते स्कध विश्रसा परिणामै
 परणमीन केवल समुदघातनी परे दड रूप करि
 पद्ये दिसि विदिसी विस्तारि खडूया पुरी चौदराज सपूर्ण
 फरसी नै पाछो केवल समुदघात नी परे सकली ने स्कध
 रूपथाय, ते स्कध असख्यात आकाश प्रदेश अवगाही
 रहै ते अचित महा स्कध क्षेत्र आसरी अढी द्वीप माहि
 करे पण बीजे बाहरले क्षेत्रेभूमि काई न थाय, जिम

तेहना निकल्या ते माहेज समाइ तथा कद मूलनाते वादर निगोदिया व्यवहार राशी माहि आव्या छै, ते अनता कंदादिक माहि छै तथा जेतला जीव सूक्ष्म निगोद गोलक माहि थी निकल्या छै ते व्यवहार राशी माहे आव्या ते कालादिक लब्धि पामी सिधी वरै तेतला अव्यवहार निगोद माहि थी नीकली ऊचोव्यवहार माहि आवै, पण व्यवहार राशी ओछी न थाइ कदापि मुक्ति जावा ना विरह काल होइ, तेतला काल ताई सूक्ष्म अव्यवहार राशीओ निगोद नो जीव कोई व्यवहार राशीमाहेन आवे एहवो उपमिति ग्रथे कळ्ळुछै. तथा व्यवहार राशी या वादर निगोद माहे जे अनता छै ते फरी कर्म नी बहुलताइ सूक्ष्म निगोद गोलक माही जायें ते ७० कोडा कोडी सागरोपम ताई तिहा रही वली पाछा कदादि के साधारण माहि आवै इम सबधे सूक्ष्म निगोद ना वादर निगोद माहि आवै, वली वादर ना सूक्ष्म माहि जाई इम बे थानिके आवे गमन करता जीव उत्कृष्टो रहै तो अढी परावर्त पुद्गल

पर्यंत रहै. पछे प्रथव्यादिक थानक फरसतो ऊचो
 आवी ने मनुष्य थाई तिहा व्यवहार राशिओ भव्य
 जीव सामग्री मिल्ये बोध बीज पामी सिद्धि वरै तथा
 क्यो कोई वाचनाई इम कह्यु छै जे कद मूल
 साधारण माहि थी जीव सूक्ष्म गोलक माहि जाइ
 तो उत्कृष्टो काल रहे तो असख्याती उत्सर्पणी
 असर्पणी काल ताइ सूक्ष्म निगोद गोलक माहे रहे,
 तिहा थी निकल्या बादर निगोद कद मूल माहे
 उत्कृष्टो ७० कोडा कोडी सागरोपम ताई रहै इम
 म्बनध छै निगोद मिली आवागमन करता
 उत्कृष्टे अढी परावर्त पुद्गल ताई व्यवहार राशियो
 जीव निगोद माहि रहै एक निगोद नो गोलो
 असख्याता आकाश प्रदेश अवगाही रह्यो तथा
 अव्यवहार राशिया जे निगोदिया नै गोलक माहे छै
 भन्य स्थिती परि पक ताई ऊचा आवे ते एक समै
 उत्कृष्टे केतला निकलै इति प्रश्न — जेतला अढी
 द्वीप माहि थी सकल कर्म खपावी एक

तुच्छाय निंदाय तच्छमारमो । तुञ्ज जहा कसाया
 ताहतु तुच्छ ससारे ॥४॥ इह भरहे के विजिया मिथ्या
 दिठी भद्वया भव्वा । ते मरी उण नममे वरसे हो हुती
 केवलिणों ॥ ५ ॥) इति प्रस्ताविक गाथा ज्ञेया

२७६ चमरेंद्र नें ५ अष्टमहिपि छै ते एकेकीअग्र
 महिपिने नें आठ आठ सहस्र देरीनो परिवार इम ४०
 सहस्र देवी सु भोग भोगप्रितो विचरे इत्यर्थ

२७७ बौद्ध १ नैयायिक २ साख्य ३ जैन ४ वैशेषिक
 तथा । जैमीनियच ६ नामानि दर्शनात्म शून्य हो ॥
 इति षट् दर्शन नामानि ॥

२७८ हिवै ६३ शिला का पुरुष तेहना जीव ५९
 छै तेहना विगत—जीव ३ चक्रवर्ती पदवी ना श्रोद्धा
 थया एक वासुदेव थया ५४ जीव घट्या माहें (बाकी) जीव
 ५९ थया तथा ५९ जीवनी माता ६० पिता ५९ कृष्णा
 छै तेहनी विगत—२४ जिननी माता, ९ चक्रवृती
 नी माता, ९ वासुदेवनी माता, ९ बलदेवनी माता,

सार • (अने श्रावक न) सूक्ष्म ते वादर वसा १० काढ्या,
 आत्मानें पर अत्तहा परहा चैव १ सापराधनिरपरा-
 करी वसा २॥ अपराधै हर्षे पण निरपराधे नही १।
 निपेक्ष नी दया निरपेक्षै वसो १ रहै तथा अत्र गाथा—
 (तथाथावरायजीवासभरुप्पारभओभवे । दुविहा
 सावराहानिरवराहासावेरकाचेव निरवेरका॥ १॥) जीव वे
 प्रकारै— सूक्ष्म वादर, ते मध्ये सूक्ष्म ना १० भेद
 तथा १० वादरना सूक्ष्म ना १० भेद ते पाच थावर

मारे छ ! पण पतो निरपरार्धी छे चली आपणा अगमा तथा आपणां
 पुत्र, पुत्री, गोत्री, आदिकना मस्तकमा अथवा कानमां काडा
 पड्या छ, अथवा आपणाज मोढामा के दाढमां के, दातमा, के
 जड्यामा कीडा पड्या, तेवारे तेमने मारधाना उपाय करीने
 कीडानी जग्याए औपथ लगाड्यु पड पण ए जीवोए शो अपराध
 करयो छ ? पतो पोतानी योनि उत्पत्ति स्थान पामने कर्मने
 आधीन आयोने अही उपजे छे, पण क्यारे कशी दुष्टनाथो उप
 जता नथो ते कारणमाटे जीवनी पण हिंसा, कारणे करीने शाधक
 तजी जाय नहीं चला बाग यगोचामा गया थका फूल फल,
 पादडा गुञ्जा प्रमुखने तोड्या सार चोट देधी अथवा फल,
 फल तोडी लेया, ते माटे अढी वशामार्धी बहधो गयो त्यारे सधा
 वशानी दया रही पटला सधा वशानी दया शुद्ध थाधक ने छे

पर्यासा न ५ अपर्यासा एव १० नी दया श्रावक नै
न होइ.

हिवै १० बादर ते किहा ? वेद्री, तेंद्री, चोरेंद्री
पंचेद्री ४ ए पर्यासा नै अपर्यासा एव भेद ८ पंचेद्री
सनीश्रो असनीश्रो एव १० भेद वाटर ना थया ते मध्ये
श्रावकनै सकटपी न मारु आरंभै जयणा एव ५ भेद रह्या
ते मध्ये अपराधे हर्यो, निरअपराधे नही, एतलें २॥ वसा
रह्या ते मध्ये सापेक्षया अने निरपेक्षा निर्दय पर्ये न
हण्यो एव १॥ वसा नी दया श्रावक नै त्रस जीव नी
रही इति प्राणाति पातिनी जीव दया १॥ वसा नी इति

२ हिवै मृषावाद अणु वृत समस्त मृषावाद
नियम साधु नै २० वसा सूक्ष्म नै बादर करता
१०, उपयोगै अणा उपयोगै २०, अत्तद्वा परद्धा
आत्मपर एव ५, स्वजन परजन करता २॥, धर्म अपर
अधर्म परमार्थे १॥ अत्र गाथा—(सुहुमबादर मिलिय
अप्याण परिभेयग भवे दुविह सयण परग च तथा

(४)

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
		निवेशन	निवेशन
१८	१२	द्वेषो भण्यते	द्वेषी भण्येते
"	"	द्वेषो कप्प	द्वेषी कप्प
"	१६	भावितव्य	भवितव्य
१९	९	कश्येति -	कस्येति
"	१४	प्रसज्ञा	प्रच सज्ञा
२०	४	रक्षणा	रक्खणा
"	७	श्रेक	एक
"	"	पति	खति
२४	१	तत्वात्तत्व धीनी	तत्वात्तत्व ए वे नी
२५	४	परा	परावर्त्त
"	६	थी खपावे	थी वा खपावे
२६	२	प्रणमै	परणमै
२७	१४	विलेछन	विल्लछन
"	१५	सु	सु
३९	१६	सडन	साडन

पृष्ठ.	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४३	१५	सुवसहिय	सुवयसहिय
५	१८	नात्रपहसा	नी क्रिया हस्ये
५	१९	सण्ठमो	सणसठमो
४४	२	प्रणमित	परणति
४८	५	देसण पूर्व	दसण पुव्व
५	७	भात्वार	भात्कार
५२	१	दसना	देशना
५३	५	जिहायै	जिहापि
५	१३	काइक	कोईक
५	१५	वर्त्ता	वार्त्ता
५४	१४-१५	पामै ते शोणे,	पामै ते स्या माटेके
६०	५	असात	असाता
६४	१५	नय	नेय
५	१६	जम्पई	जम्मई
६८	४	आत्मागुल	आत्मागुल
६९	७	उक्कोसेच्छ	उक्कोसातच्छ

८)

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
१०७	१४	अकाश	आकाश
१०८	९	कालाणु	कालसमय
१०९	८-९	यद्यपीएकता	यद्यपि एकता
११०	१६	सीहताईनिरकतो, सीहताए	सीहचाए निरकतो सीहचाए
१११	१	सीहताए सीयालताए	सीहचाए सीयालचाए
"	५	पनिरकतोसीय- लता निरकताए	निरकतो सिपाल- चाए मियालताए
"	९	अचरानुयोग	चरण करणानुयोग
"	१२	नाणकंम पकरंति	नामकम पकरंति
"	१५	रमदीठी	वचकित्तस भवे रवासाण
११३	५	करजरादि	युजा
"	११	परिणामा दसधारयू	परिणाम दसधा

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध -
११५	४	लेहण	लेण
"	१३	सन्न	सद्
"	१४	अवस्य	अवस्स
"	१५	द्विय सखिञ्ज	द्विय सखिज्ज
"	"	यव्वी	यव्वा
"	१७	निर्युक्तो	निर्युक्तो
११६	१	कीटीकावधो	कीटिका बहवो
"	"	बहवा	बहवः
"	२-३	तदा समूर्ध्छिमप्राण विरह तदाकाटिका स्तोकानरा बहवा	यदा समूर्ध्छिम नराणा विरह काल तदा कीटिका बह- व तेषा विरहो न तदाकीटि- का स्तोका ॥

(१२)

॥ शुद्धिपत्र ॥

५

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४४	१४	सामण	सामह्य
१४४	१५	ममन्ना मियत्त	मन्ना मियद्ध
”	१६	अजियचरितदे सूणा	अजियचरित्तेदे सूणा
१४५	७	नियाणकमी	नियाणकडा
१४९	२	तानि	तीन
१५०	५	प्राप्ती	पर्याप्ती
१५१	६	अतमुहूर्त	अतर्मुहूर्त्त
”	१२	धारयू	धारु
१५३	१५	विषय	विषय कपाय
”	१६	थी विषय कपाय	थी कपाय
१५५	१	निरती	निवरती
”	३	हल	हल
१५६	७	द्वितीय	द्वितीय
”	१०	स्वप्नात्	स्वप्नान्
”	११	अपस्यत्तवतस्या कारि धारिणा	अपश्यत्त प्रशश्या- कार धारिण

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध
१५७	३	रुचिक	रुचक
१५९	१३	समयठवणानामे	समयठवणानामेरुवे
		रुवे	
"	"	व्यवहार	ववहार
१६२	८	पत्तमथ	पत्तमत्थ
१६३	१४	अपुधतुगधरसचवध	अपुठतुगधरस च बद्ध
१६५	१४	त्रिरसायगुल	विरसायगुल
"	१५	आयगुलेकेणवथू	आयगुलेणवत्थु
१६७	१३	वकति	वच्छति
"	१६	वर्ण	वर्प
१७२	१५	इम कोडा	इम २० कोडा
१७३	१	तिहा	तिहा
"	१५	जोवपई	जोव (मम) ई
"	"	विषय विरतो	विसय विरत्तो
१७४	२	दोगी	दोसी
"	३	नाणस्सं	नाणस्स

(१४)

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७४	५	नाणच अणवा	नाणच होई अप्प- वा
”	१३	नाधो यथा वाट	नाधा यथा वार
१७५	७	वधु विलासन्	वधु विलासानु
१७५	७	वसहासत्तो	विसयासत्तो
”	१३	उपायक घातक	उप घातक
१७६	१६	अनाभो तथा	अनाभोगतथा
”	१७	साहोत्मिका	साहात्मिका
”	”	धावनरे पनव	धावनडे पनह्यव
१७७	१	णानादिक हास्प जन किंवा	णादिक हास्यजन- कवा
”	२	प्रमार्थ	प्रमार्ज
”	३	जुक्ता	युक्ता
”	४	अयततनया	अयतनतया .
”	९	असख्यात गुणा- धिका	विशेषाधिका ”

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध
"	१०	असख्याता वधाता	विशेषाधिका
"	१२	सख्याताअधिका	"
१७८	४	कपोत	कापोता
१७९	३	वसाई	वयाई
"	६	नपुसय	नपुसेय
"	८-६	दुधेय मुढेय आणिते	दुधेय मूढेय अणते
"		जुगएईय अविबध	जुगिएईय बुबद्ध
		एयभिण्य सेहोनी	एय भय ए सेह
		फेडीयाइयंसी ॥४॥	निप्फेडीये
			इय गुन्विणी बाल
			वच्छाय पन्वावे उन
			कप्पई ॥ ४ ॥
"	१३	गुरो	मुरो
"	१४	रुषाण	रुक्खाण
"	१५	वेपूई	वेट्टई
"	१	नहु अन्नोतह कोह	निहणसन्नो तह-
१८०		नह	कोहे नह

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८०	२	माणे रू इरोवति छाय	माणेरूदेवइरो- वति छायाइ
"	३	पलाइ मूलेहाणु	फलाइ मूलेणि हाणु
१८०	४	चरि	वरि
"	५	ह्वई	ह्वई
"	"	रुप	रुप्त्वे
१८१	७	वथ	वत्थ
"	८	तत्काल कुथु	तक्काल कुथु
१८२	७	भाण्या	भाषा
"	१३	परयासी	पर्यासी
१८३	७	दोपच	च
"	८	असमथो	असमत्थो
"		मो निंदतो	मोत्थो निंदतो
"	१०९	अवलिय	अवालिय
"	११	गिणतो	गिणतो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धः	शुद्धः
१८३	१११५	दर्शन चात्	दर्शन
१८३	१११६	तेतिष्ठन्	नेति छन्दः
१८३	१११७	तिष्ठति	तिष्ठतीति
१८३	१११८	भवति	भव
१८३	१११९	उजीयगिदेयो	उजोयगियदच्छो
१८३	११२०	कच्छय जीवो बलि	कच्छय जीवो
१८३	११२१	श्रोक्कच्छाय कमाइ	बलिओ कत्थाय
१८३	११२२	हुति बलियाइ जीव	कमार हुति
१८३	११२३	समय कमस्ससपु-	बलियाइ जीव
१८३	११२४	वनिवेधाइ ॥ ३ ॥	स्सय कर्मस्सय
१८३	११२५	पुव्वनिवधो अ-	पुव्वनिवधो अ-
१८३	११२६	णाइय ॥ ३ ॥	णाइय ॥ ३ ॥
१८३	११२७	पुव्वकय ४ प्र-	पुव्वकय ४ प्र-
१८३	११२८	कारण ॥ ५ ॥	स्मकारणं पंच ५
१८३	११२९	एगतिमिधित ते चेव	एगते मिच्छं
१८३	११३०	ओममामओ इति	मम

८)

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शब्दाः	शुद्ध	पृष्ठ
	१८	मत्तगात्	समत्त	६२९
	१८	नवाहिं जीव विहण	नत्त विहि जीव	
	११	करण, करण, अणु	ब्रह्मकरण क्रा-	
	११	मोक्षय जोगैहि ।	ब्रपो अणुमर्षय	
	११	कार्त्तिके समस्त पृष्टी	जोगे हिं काल-	
	११	रुग्णिणिए प्राणीब्रह्म	क्ति एण गुणिए	
	११	दुस्सय ते यालो ॥५॥	पाणीब्रह्म दुस्सय	
	११	ते याला ॥५॥	ते याला ॥५॥	
	१८	च ध्याया	च ध्याया	
	१९	थापी	थापी	
	१९	राज्यात्मक	राज्यात्मक	
	१९	पमाने पइ	पमाने पइ	
	१९	सखा पइत्त	सखा पइत्त	
	१९	असा, पइत्त, अत्तम	असा, पइत्त, अत्तम	
	१९	पइत्त, पइत्त	पइत्त, पइत्त	
	१९	क्रेम्माण ब्रग्गणा-	क्रेम्माण ब्रग्गणा-	
	१९	एव	एव	

पृष्ठ- पत्रिका	अशुद्ध	शुद्ध
१९९	निकली	निकली
२००	निगोदमत्तस्यो	निगोद स्तुः
२०१	अतन्त भागोये	अनन्त भागोय
२०२	मप्साश्रो	मव्माओ
२०३	अवसगत	आवमगत
२०४	तव संयमण मुखो	तवसयमेणमुक्खो
२०५	दाणेण हातिउत्तमा	दाणेणहांति उत्तम
२०६	भागा देव वरणेण	भोगादेवचरणेण
२०७	रद्यअनसनमरणेण	रज अनमन मर-
२०८	इदत्त चकितापचोत	तेण देवत्त इदत्त
२०९	रिविमाण वासित	च ॥३॥पचाणत्तर
२१०	लोमेता देवदत्त ।	विमाण वासित्त
२११	अभव जीवादि न	लोमतिय देवत्त ।
२१२	पावती ॥२॥	अभव्व जीवा न
२१३	तुच्छाय निर्दाय	पावती ॥२॥
२१४	तुच्छमारभो	तुच्छा निर्दायर्त्तु-
२१५		च्छमारभो

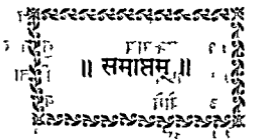
पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
			५७
			५८
२०६	५	दर्शनात्मं शून्यं	दर्शानानाम् मून्यं
२०७	१	प्रति	९ प्रति
२०९	६-७	पलेचदश गद्याणि	पलेचदश गद्या-
		स्तेषां सद्द सतमैणी	णै स्तेषां सार्द्ध
		मणी दसमि रेकाच	शत मणी मणी
		घटिका कथिते बुध	दशभि रेकाच
			घटिका कथ्यत
			बुधै
	१०	फूफित्म	फूफिता
	२	ग्रन्थ	ग्रन्थी
	४	चतुपद, रुप	चतुष्पद, ०
	६	सगारयू	सगारयू, त
	१७	भेदो, दडसी	भेद, दडश्च
२११	३	लखा	लरका ३०
	६	गज मिथि	गज ममि

पृष्ठ	पक्ति.	अशुद्ध	शुद्धी
२११	१३७४८	मप्ये दाया दशा	मब्भे वाया - १६
"	५७०	तेउनरि वसतिरिय	तंउनवग्मितिरीय
२१२	३१६७३	सूरि, माससेमथा	सुर, मब्भे, मच्छा
"	११८२१	विश्रभावे नजलत्री	विश्रभावेजल न- च्छ्री
२१६	४	भागो	भागे
"	६	अभासल्ल	अतोसल्ल
"	३१७७३	लक्ष्मण वत्साध	लक्ष्मण वत्साध-
"	११८२१		वी
२१६	९-१०	मिश्रमतेमिश्र	मिश्रमरणतेमिश्र
"	१८	मरण	मरण
"	१९२	विहास	विहायस
"	१९४	गृधीय	गृह
"	१९५	भत्तपरिणामे	भत्त परिणा मरण
"	१९५	मरण	
"	३१७७३	नियमी	नियमित

(२४)

॥ शुद्धिप्रव ॥

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१,२,३,४,५,६	७,८,९,१०,११,१२	मन्वि, उदारिणा	मधि, उदारिणा
१३,१४,१५,१६,१७,१८	१९,२०,२१,२२,२३,२४	तिर्यक	तिरिक्
२५,२६,२७,२८,२९,३०	३१,३२,३३,३४,३५,३६	द्विधा सव	द्विधा भव
३७,३८,३९,४०,४१,४२	४३,४४,४५,४६,४७,४८	विमद्वि	विसिद्ध
४९,५०,५१,५२,५३,५४	५५,५६,५७,५८,५९,६०	अहारिचई भरणिण्य	अहारिचई सरीर
६१,६२,६३,६४,६५,६६	६७,६८,६९,७०,७१,७२	शुभ	शुभ्र
७३,७४,७५,७६,७७,७८	७९,८०,८१,८२,८३,८४	प्रदेश	प्रदेशी
८५,८६,८७,८८,८९,९०	९१,९२,९३,९४,९५,९६	मद्वि	मद्व
९७,९८,९९,१००			



॥ समाप्तम् ॥

आत्मधारा ।

—२२५५२२२—

यह ग्रन्थ आत्मिक गुण सत्ता बताने में बहुत उत्तम है बहिरात्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा का स्वरूप, ममकित के पांच भूषणादि व दस रूची, बंधन करण, सक्रमण करण, उदय वर्तना करण, अप वर्तना करण इत्यादि आठ करणों की व्याख्यादि उत्तमोत्तम विषयों से यह ग्रन्थ परिपूर्ण है इसी ग्रन्थ में बनारसीदासजी कृत ज्ञानपञ्चीसी, अध्यात्मबत्तीसी, आगमअध्यात्मस्वरूप, निमित्त उपादान कारण भेद निर्णय, ध्यान बत्तीसी इत्यादिक ७ पुस्तक साथ ही छपे हैं ऐसे उपयोगी ग्रन्थ का मूल्य केवल 1- मात्र, डाकव्यय -) है।

पुस्तक मिलने का ठिकाना —

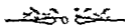
बाबू चांदमल बालचंद

चौमुखी पुल

गुलाम

पंडित श्रीदेवचन्द्र-गणि विरचिता

श्रीः अध्यात्मगीता.



पंडित श्री श्रीमं कुंवरजी कृत 'बालाचोध' संहिता

समस्त जन्म भाइया का पंडित हो कि ऊपर
लिखे नामवाला ग्रन्थ अध्यात्म विषय में अत्यन्त
उत्तम है. इस में कर्तृत्वता, ग्राहकता, व्यापकता, दान
लाभादि, आत्मा के अनादि काल से परानयाई प्रणाम
रहें हैं तिन्हें स्वरूपानयाई प्रणामाववा तथा उन के
विषे निश्चय व्यवहारादि नय निक्षेप प्रमाण, अपत्राद,
उत्सगादि, नित्य अनित्यादि, कत्ता कारण कायादि, ऐसे
अनक विषयी का वर्णन स्याद्वाद अनुसार बहुत उत्त-
मता के साथ किया है और बालाचोध नाम की अलभ्य
टीका से इस का गहन अर्थ बहुत ही सरलता के
साथ समझ में आसकता है, अत्र की स्पष्टता और
सुगमता का अनुभवा-पुस्तक देखनेही से होगा इस
ग्रन्थ की हस्तलिखित प्राति हम को मिली तब बहुत

उत्साह हुआ, तथा इस को पढ़ने से सब को आत्म-
स्वरूप का लाभ होने का उपकार समझके तथा
यहां के सहधर्मी भाइयों का आग्रह देखकर यह ग्रन्थ
मुद्रित कराया है इस लिये आत्मार्थी पुरुषों को यह
ग्रन्थ लेने की सूचना करने में आती है इस के साथही
श्रीरभी पुस्तक छापे गये हैं जैसे—आत्मधारा, साधु
वन्दना तथा बनारसीदासजी कृत ज्ञानपञ्चीसी, अध्यात्म
बत्तीसी, ध्यानबत्तीसी, आगम अध्यात्म स्वरूप निमित्त
उपादान चौभगी इत्यादि इन सब पुस्तकों की एक
जिल्द का मूल्य ॥१॥ है डाक महसूल इस से अलग

पता —

बाबू चांदमल बालचंद्र

चौमुखी पुल

रतलाम (मालवा)

